भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 9 | **जनवरी** 2008 | **अंक** 1

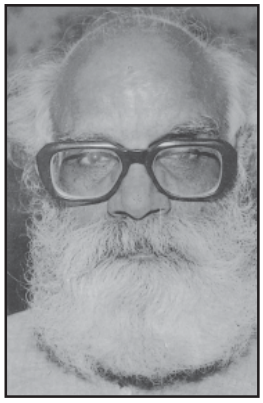

त्रिलोचन शास्त्री

आविर्भाव : 20.08.1917 महाप्रस्थान : 09.12.2007

समकालीन कविता के बृहत्त्रयी के अन्तिम शलाकापुरुष **त्रिलोचन शास्त्री** (मूल नाम वासुदेव सिंह) ने नौ दिसम्बर को सायं साढ़े चार बजे गाजियाबाद में अपने घर पर पार्थिव शरीर को पंचतत्व में विलीन कर दिया। वे नब्बे वर्ष के थे। दूसरे दिन यानि 10 दिसम्बर को दिल्ली के निगम घाट पर उनकी अंत्येष्टि-क्रिया सम्पन्न हुई। इस अवसर पर साहित्यकारों और पत्रकारों के अलावा दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित

शेष पृष्ठ 2 पर

हमको भी बहुत कुछ याद था

कोई दिन था जबकि हमको भी बहुत कुछ याद था
आज वीराना हुआ है, पहले दिल आबाद था।
अपनी चर्चा से शुरू करते हैं अब तो बात सब,
और पहले यह विषय आया तो सबके बाद था।
गुल गया, गुलशन गया, बुलबुल गया, फिर क्या रहा
पूछते हैं अब व' ठहरा किस जगह सैयाद था।
मारे मारे फिरते हैं उस्ताद अब तो देख लो,
मर्म जो समझे कहे पहले वही उस्ताद था।
मन मिला तो मिल गये और मन हटा तो हट गये,
मन की इन मौजों पे' कोई भी नहीं मतवाद था।
रंग कुछ ऐसा रहा और मौज कुछ ऐसी रही,
आपबीती भी मेरी वह समझते कोई वाद था।
अन्न-जल की बात है, हमने त्रिलोचन को सुना,
आजकल काशी में हैं, कुछ दिन इलाहाबाद था।

'गुलाब और बुलबुल' से

18वाँ नई दिल्ली

विश्व पुस्तक मेला (2-10 फरवरी 2008)

अवसि देखिये देखन जोगू

सन् 1957 में अपनी स्थापना के मात्र 15 वर्षों के बाद नेशनल बुक ट्रस्ट ने सन् 1972 में नई दिल्ली के विंडसर प्लेस में पहली बार विश्व पुस्तक मेला का आयोजन किया जिसमें संसारभर के 200 पुस्तक प्रकाशकों ने भागीदारी की। भारतवर्ष में यह अपनी तरह का पहला विराट समागम था जिसकी अनुगूँज अक्षरों की दुनिया में दिलचस्पी रखने वाले लाखों लोगों के दिल-दिमाग में वर्षों तक बनी रही। चार वर्षों के अन्तराल के बाद नई दिल्ली के प्रगति मैदान पर दूसरे विश्व पुस्तक मेले का आयोजन सन् 1976 ई० में हुआ जिसमें 266 पुस्तक-प्रकाशकों ने हिस्सा लिया तथा पाठकों की भागीदारी भी उसी अनुपात में बढ़ी।

उसके बाद से नई दिल्ली के प्रगति मैदान पर ही हर दूसरे वर्ष मानवीय ज्ञान का यह वैश्विक महायज्ञ नेशनल बुक ट्रस्ट के सौजन्य से अनुष्ठित होता है। हर आयोजन पहले से बेहतर हुआ और प्रत्येक में सफलता के नये-नये कीर्तिमान स्थापित किये गये। इस शृंखला का सत्रहवाँ विश्व पुस्तक मेला सन् 2006 में प्रगति मैदान में सम्पन्न हुआ था जिसकी याद अभी भी वे लोग अवश्य करते हैं जो किसी न किसी रूप में इसमें सम्मिलित हुए थे। 38300 वर्ग मीटर के सुसज्जित परिक्षेत्र में लगाये गये इस मेले में 1293 प्रकाशकों ने सहभागिता की थी तथा कई लाख पुस्तक-प्रेमियों ने न केवल इसका अवलोकन किया अपितु जीभर कर खरीददारी भी की। इस मेले में बौद्धिक विमर्श की जो गोष्ठियाँ हुईं अथवा सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए वे भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर काफी चर्चित हुए। (सन् 2006 में आयोजित विश्व पुस्तक मेले की रचना थोड़ी दुरूह थी जिसकी वजह से पाठक व प्रकाशक भूल-भुलैया की तरह भटक जाते थे। किन्तु इस वर्ष आयोजकों की ओर से इस समस्या का पूरा ध्यान रखा जायेगा, इसकी हम सकारात्मक अपेक्षा कर सकते हैं।)

वस्तुत: यह बहुत महनीय एवं सार्थक आयोजन है जिसके विषय में तुलसीदास की यह पंक्ति ही दुहराई जा सकती है—'अवसि देखिये देखन जोगू'। संसार में कहाँ क्या हो रहा है, ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में कितना विकास हुआ है, पुस्तक-प्रकाशन की गुणवत्ता कितनी बढ़ी है, यह सब जानने और विश्व के तमाम देशों में ज्ञान-समुद्र के अनवरत मंथन से जो नये से नये रत्न उपलब्ध हुए या हो रहे हैं, उनमें से अपने लिये वांछित रत्नों के संग्रह का दुर्लभ अवसर इस मेले में सर्वसुलभ होता है।

इसके साथ ही यह ऐसा द्विवार्षिक अवसर होता है जब लेखक, प्रकाशक, पाठक, पुस्तक विक्रेता, सांस्कृतिक समीक्षक, संस्कृतिकर्मी तथा विविध विषयों के विशेषज्ञ सभी एक मंच पर एकत्र होते हैं। एक-दूसरे के साथ वैचारिक आदान-प्रदान व सम्पर्क के ऐसे सूत्र विकसित होते हैं जो सबके लिए हितकर होते हैं। यहाँ लेखक, पाठक, प्रकाशक संवाद होता है जिससे लेखक को पाठकों की रुचि ज्ञात होती है, पाठक भी लेखक, प्रकाशक से संवाद कर अपनी पठनीय

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

उपस्थित थीं। शास्त्रीजी के छोटे पुत्र अमित प्रकाश ने मुखाग्नि दी।

20 अगस्त 1917 को चिरानी पट्टी, (जिला : सुलतानपुर) में जन्मे त्रिलोचन लम्बे समय से बीमार थे। उनके निधन की खबर हिन्दी समाज में आग की तरह फैली और पूरा हिन्दी-जगत शोकमय हो गया। वाराणसी के साहित्यकार तो गहरे सदमे में डूब गए क्योंकि अपने जीवन के 45 वर्ष शास्त्रीजी ने इसी शहर में गुजारे थे।

'धरती' (1945), 'गुलाब और बुलबुल' (1956), 'दिगंत' (1957), 'ताप के ताये हुए दिन' व 'शब्द' (1980), 'उस जनपद का कवि हूँ' (1981), 'अरघान' (1984), 'तुम्हें सौंपता हूँ', 'फूल नाम हैं एक' व 'अनकहनी भी कुछ कहती है' (1985), 'सबका अपना आकाश' व 'चैती' (1987), 'अमोला' (1990), 'मेरा घर' (2002) उनके महत्वपूर्ण काव्य संग्रह हैं। 'ताप के ताये हुए दिन' के लिए उन्हें 1981 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। अंग्रेजी कविता का छन्द सॉनेट त्रिलोचन के माध्यम से ही हिन्दी में आया और पर्याप्त लोकप्रिय हुआ। उनकी कविता 'नगई महरा' हिन्दू समाज में सम्बन्धों के जनवाद पर पहली और हस्तक्षेपकारी रचना मानी गई। 'देशकाल' (1986) नाम से उनका कहानी-संग्रह व 'रोजनामचा' (1992) नाम से उनकी डायरी भी प्रकाशित है। वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के परास्नातक छात्र रहे लेकिन डिग्री पूरी न कर सके। वाराणसी में उन्होंने 'आज', 'हंस', 'जनवार्ता', 'समाज' आदि पत्रों का सम्पादन-कार्य किया। वे नागरी प्रचारिणी सभा के सम्पादन कार्य से भी जुड़े रहे। वे सागर के मुक्तिबोध सृजनपीठ के अध्यक्ष भी थे।

श्रद्धांजलि प्रकट करते हुए 'साहित्य अकादमी' के अध्यक्ष श्री गोपीचंद नारंग ने कहा कि त्रिलोचन ने कविताओं में जिस तरह से लोकछन्दों का प्रयोग किया वह बहुत महत्वपूर्ण है। यशस्वी आलोचक डॉ० नामवर सिंह ने कहा कि त्रिलोचन अद्‌भुत संघर्षशील व स्वाभिमानी व्यक्तित्व के रचनाकार थे। हिन्दी कविता की दुनिया में एक नई लीक उन्होंने डाली। यूरोपीय छंद को साधकर उन्होंने हिन्दी में एक हजार से अधिक सॉनेट लिखे। तुलसी, कबीर और गालिब को आदर्श माननेवाले त्रिलोचन ने तुलसी का भाषाबोध, कबीर की विद्रोही वृति और गालिब की आत्मीयता को एक साथ साधा था।

हिन्दी-जगत के प्राय: सभी शिखरपुरुषों ने त्रिलोचन को भावभीनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित की हैं।

काशी हिन्दू विश्ववद्यिालय में शोकसभा : विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में त्रिलोचन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की वक्ताओं ने चर्चा की तथा दो मिनट का मौन रखा गया।

पृष्ठ 1 का शेष

समझ और रुचि को परिष्कृत करता है। परिणामस्वरूप प्रकाशक भी इस परिष्कृत रुचि के अनुरूप पुस्तकें प्रकाशित करने का प्रयास करते हैं। महाकुम्भ में करोड़ों लोग तीर्थस्नान करते हैं, यह तो प्रयोजन विशेष है किन्तु महात्माओं के दरस-परस, प्रवचन और अन्यान्य आयोजनों का आकर्षण कम नहीं होता। सबसे बड़ा आकर्षण तो यह होता है कि वहाँ अपनी-अपनी क्षेत्रीय विशिष्टताओं और परम्पराओं को भलीभाँति सँजोये और सहेजे हुए सारे देश के लोग 'महामानव समुद्र' में एकाकार होते हुए दिखलाई पड़ते हैं। यहाँ भारत की आत्मा का दर्शन होता है जो तमाम विविधताओं के बीच में एक और अखण्ड है। विश्व पुस्तक मेला भी मानवीय ज्ञान का एक ऐसा ही महाकुम्भ है। महाकुम्भ से लौटते समय लोग अपने साथ गंगाजल ले जाते हैं, जबकि ज्ञान के इस महाकुम्भ से लौटते समय लोग अपने साथ पुस्तकें ले जाते हैं। यदि महाकुम्भ से लौटते समय गंगाजल नहीं ले गये तो महाकुम्भ में जाना निरर्थक समझा जाता है। उसी प्रकार यदि ज्ञान के इस महाकुम्भ से लौटते समय एक पुस्तक नहीं ले गये तो इस ज्ञान यज्ञ में सहभागिता निरर्थक है। ज्ञान के महासागर में अवगाहन तो इसका एक प्रयोजन विशेष है। किन्तु अनायास सत्संग और पारस्परिक आदान-प्रदान के अवसरों के लाभ के साथ-साथ अनेकता में एकता का जो दिव्य दर्शन दिखलाई पड़ता है वह अनूठा है। देश, धर्म, जाति, भाषा और इस प्रकार के कितने विभागों में विश्व मानवता बँटी दिखलाई पड़ती हो किन्तु ज्ञान एक है। 18वाँ विश्व पुस्तक मेला इस अनुभूति को पूर्वापेक्षा अधिक व्यापक एवं सुदृढ़ बनाने वाला सिद्ध होगा, ऐसा विश्वास है।

तो आइये 2 फरवरी से 10 फरवरी तक प्रगति मैदान, दिल्ली में आयोजित ज्ञान यज्ञरूपी इस 18वें विश्व पुस्तक मेले में अपनी सार्थक सहभागिता सुनिश्चित करें जहाँ केवल अपने देश के ही नहीं वरन् पूरे विश्व के अनेकानेक बुद्धिजीवी और प्रकाशक अपने सर्वश्रेष्ठ कृतित्व के साथ उपस्थित हैं। अब यह हमारे और केवल हमारे ऊपर निर्भर है कि हम इस सुअवसर का कैसे और कितना लाभ उठा पाते हैं।

—परागकुमार मोदी

त्रिलोचन और बनारस

बनारस में 1930 ई० में आया। कुछ समय को छोड़कर 1975 तक बनारस में रहा। प्रारम्भ से लेकर आज तक बनारस पसन्द रहा है। वहाँ के जनजीवन की जीवन शैली व सहजता मुझे सदा से अपनी ओर खींचती रही है। संस्कृत व संस्कृति दोनों के लिए बनारस अद्वितीय है। बनारस में मैं पहले ट्यूशन करता था। बनारस में प्रसाद का बहुत मान था।

यहाँ देश की सारी भाषाएँ बोली जाती हैं। यह कास्मोपोलिटन सिटी है। यहाँ मैं सबसे पहले रामनारायण बाग में रहता था। यहाँ के उस समय के साहित्यिक परिदृश्य में प्रेमचंद, प्रसाद, निराला, रामचन्द्र शुक्ल की वाणी की गूँज थी। उसी समय हजारीप्रसाद द्विवेदी, पुरुषोत्तमदास टण्डन व लाला भगवानदीन से संवाद का सौभाग्य मुझे मिला। शिवदान सिंह चौहान, रामविलास शर्मा व मैं—हम तीनों बनारस के मकान में साथ-साथ रहते थे। यहीं पर 1939 ई० में निरालाजी ने अपनी बुलन्द आवाज में 'राम की शक्ति पूजा' का पाठ किया था।

इसी बनारस में आज के शिखर हिन्दी आलोचक नामवर सिंह से मेरी भेंट हुई थी। नामवर सातवीं कक्षा में पढ़ते थे। वे बच्चों की तरह कविताएँ लिखते थे। यह 1941 ई० की बात है। बाद के पाँच-छ: वर्षों में मैंने जाना कि उनकी छन्दों की जानकारी बहुत अधिक है। 1942 ई० में 'अनामिका' व 1943 में 'तार सप्तक' मैंने व नामवर ने साथ-साथ पढ़ा था। फणीश्वरनाथ रेणु से भी परिचय उसी समय बनारस में हुआ जब वे पढ़ रहे थे। उस समय रामदरश मिश्र, शिवप्रसाद सिंह, राममूर्ति त्रिपाठी, काशीनाथ सिंह, रमेशकुंतल मेघ सहित अनेक लोग थे। नयी रचनाशीलता का उन्मेष इन सभी में दिखाई देता था। 1962 ई० में धूमिल से पहली मुलाकात बनारस में ही हुई। 1947 में वसन्त पंचमी के अवसर पर इसी बनारस में नन्ददुलारे वाजपेयी ने निरालाजी की स्वर्ण जयन्ती का शानदार आयोजन किया था।

इसी बनारस में 1939 में प्रगतिशील लेखक संघ की नींव मैंने डाली। तब एक-एक व्यक्ति से एक-एक रुपया चन्दा लेता था। यह तपोवन की तरह था, मेरे लिए। जब कोई संगठन शासन का मुँह देखने लगता है तब कमजोर हो जाता है।

आज इतने वर्षों बाद भी बनारस की स्मृतियाँ मुझे आन्दोलित करती हैं और बनारस चुम्बक की तरह अपनी ओर खींचता है।

(*साभार* : सापेक्ष-38, वर्ष 1996,
सम्पादक : महावीर अग्रवाल)

बौद्धिकता पर भौतिकता हावी

—अनुराग मोदी

मानव संसाधन मंत्रालय के अन्तर्गत आगरा में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए अधिक सचेष्ट है। उसके सामने अनेक समस्याएँ हैं जिनका सन्तोषजनक समाधान प्रस्तुत करना उसका प्रयोजन है। अहिन्दीभाषी दूरवर्ती राज्यों में राष्ट्रभाषा के प्रसार के लिए इकाइयाँ सक्रिय हैं। संस्थान लेखक-प्रकाशक-सम्बन्ध के प्रश्न पर तथा पुस्तक-प्रकाशन और बिक्री से जुड़ी समस्याओं पर भी विचार करता है। लेखक और प्रकाशक के बीच सम्बन्ध या पुस्तकों की बिक्री का प्रश्न या पुस्तकों की सरकारी थोक खरीद जैसे प्रश्न पर विचार के लिए संस्थान राष्ट्रीय संवाद का आयोजन करता है और सौहार्दपूर्ण वातावरण में सन्तोषजनक हल निकालने की कोशिश करता है। संवाद में भाग लेने के लिए प्रकाशक, लेखक और प्रकाशन-व्यवसाय से संबद्ध व्यक्ति आमंत्रित किये जाते हैं। ऐसी संगोष्ठी में विचारों के आदान-प्रदान से एक-दूसरे को समझने में सहायता अवश्य मिलती है, फिर भी प्रकाशन के सामने कतिपय जटिल प्रश्न ज्यों-के-त्यों रह जाते हैं। ऐसे कई मुद्दे हैं जिनका निस्तारण नहीं हो पाता। गत 6 और 7 अक्टूबर को केन्द्रीय हिन्दी संस्थान ने राष्ट्रीय संवाद के लिए प्रकाशकों को आमंत्रित किया। पुस्तकों की बिक्री और पुस्तकों की सरकारी खरीद चर्चा का खास मुद्दा बन गया। उस संवाद-संगोष्ठी में अधिकतर प्रकाशकों का यह मत था कि पुस्तकों की सरकारी खरीद और उसके केन्द्रीकरण ने पुस्तक-व्यवसाय का अहित ही किया है। सरकारी खरीद से पहले पुस्तकालय और स्कूल-कॉलेज के लिए पुस्तकें खरीदी जाती थीं। पाठकों और विद्यार्थियों की सुरुचि के लिए, उनके अच्छे संस्कार के संवर्धन के लिए, पुस्तकें खरीदी जाती थीं। वह चलन अब समाप्त हो गया।

स्वतंत्रता के कुछ वर्षों बाद तक समाचारपत्र पुस्तकों की नियमित चर्चा करते थे। वर्ष के अन्त में वर्षभर प्रकाशित पुस्तकों का सर्वेक्षण करते थे। पाठक इससे प्रेरित हो पुस्तकों की तलाश करता था। पाठक स्वयं या शिक्षा विभाग पुस्तकालय स्थापित करते थे। ब्रिटिश शासनकाल में नगरपालिकाओं में पुस्तकालय होते थे, किन्तु भौतिक विकास की दौड़ में समाप्त हो गए। भौतिकता बौद्धिकता पर हावी हो गई।

इस स्थिति में यह पूछना कि पाठक कहाँ हैं, विसंगति ही है। हमारे पाठक हर गाँव में, शहर में बसते हैं, जहाँ हमने रेडियो, दूरदर्शन, टीवी, मोबाइल पहुँचा दिए, किन्तु पुस्तकें नहीं पहुँचाईं, जिनसे वे देश के सामाजिक, आर्थिक और नैतिक विकास की ओर अग्रसर होते। परिणामस्वरूप संवेदनाएँ शून्य होती गईं, परिवार बाजार बन गया, व्यक्ति उपभोक्ता बनता गया। टीवी ने आपराधिक सदृश्य समाचारों से अपराध-वृत्ति का विकास किया। सामाजिक परिदृश्य में श्लील और अश्लील की सीमाएँ टूटती गईं। सौन्दर्यबोध देह बन गया। ऐसे में अक्षरों और शब्दों के द्वारा मानवीय संवेदना को जगानेवाली पुस्तकों की तलाश किसे है? यदि रेडियो, दूरदर्शन पर पुस्तकों की नियमित चर्चा हो तो इससे पुस्तकों के प्रति रुचि जागृत होगी। समाचारपत्र, रेडियो और दूरदर्शन के विभिन्न चैनल, जिनकी समाज के हर वर्ग में पहुँच है, पुस्तकों पर नियमित कार्यक्रम दिखाएँ तो निश्चय ही पुस्तक-पाठकों की संख्या बढ़ेगी और समाज में रचनात्मक बदलाव आयेगा।

साक्षरता बढ़ने, गली-गली में शिक्षण-संस्थाएँ खुलने के बावजूद पुस्तकें उपभोक्ता-सामग्री नहीं बन पाई हैं जो हर छोटे-बड़े शहर के बाजारों में सुलभ हों। मल्टीनेशनल कम्पनियों ने विज्ञापनों के जरिए अपने उत्पाद गाँव-गाँव में पहुँचा दिए, किन्तु पुस्तकें नहीं पहुँच सकीं। प्रकाशक या विक्रेता से वास्तविक पाठक डाक द्वारा पुस्तक मँगाना चाहते हैं, किन्तु डाक-व्यय इतना अधिक है कि पुस्तकें उनकी पहुँच के बाहर हो जाती हैं। गाँवों की ग्रामसभाएँ व पंचायतें राजनीतिक तथा पारस्परिक संघर्षों का केन्द्र बन गई हैं। उन्होंने भी पुस्तकालय-वाचनालय को भुला दिया है। ग्रामीण पाठकों को अपने उद्यम कृषि, पंचायत, कानून, स्वास्थ्य, ग्रामीण उद्योग तथा नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें चाहिए। ऐसी पुस्तकें गाँव के पुस्तकालयों में सुलभ होनी चाहिए। तभी वहाँ प्राथमिक शिक्षा का भी विकास होगा।

अंग्रेजी पुस्तकों का प्रचार-प्रसार देश-विदेश के पत्रों में इतना अधिक होता है कि भारत में ही हैरी पॉटर जैसी अंग्रेजी-हिन्दी में प्रकाशित पाँच-सात सौ रुपए की पुस्तकें लाखों की संख्या में बिक जाती हैं। आज जरूरत है पाठकों को तलाशने की अपेक्षा पुस्तकों को उपभोक्ता सामग्री के रूप में प्रस्तुत कर उनकी उपलब्धता कराने की। नेशनल बुक ट्रस्ट विभिन्न नगरों-उपनगरों में चल-अचल पुस्तक-प्रदर्शनी आयोजित करता है। उससे पुस्तकों के प्रति पाठकों का आकर्षण बढ़ा है, किन्तु यह सीमित क्षेत्र में ही हो पाता है। इसके लिए आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा अन्य एलेक्ट्रॉनिक माध्यमों द्वारा पुस्तकों को पाठकों के नजदीक लाना होगा। पुस्तक की माँग बढ़ने से पुस्तकों के जो संस्करण 500 तक सीमित रह जाते हैं, उनके संस्करण हजार-दो हजार तक बढ़ेंगे। उनके मूल्य भी घटेंगे और धीरे-धीरे पाठक पुस्तकों की तलाश करते फिरेंगे। पुस्तकों को पाठकों की तलाश नहीं करनी होगी।

मोदीजी के प्रति श्रद्धांजलि

—वसुधा डालमिया,
कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले

वाराणसी से अपने 20 वर्षों के जुड़ाव में मैं दो स्थानों पर सहायता के लिए अवश्य जाती रही हूँ। एक तो राय आनन्दकृष्ण जी हैं जिनका संगीत, साहित्य, कला और स्थापत्य आदि का ज्ञान अथाह है तथा जिनके चरणों में बैठकर मैं इन विधाओं के शताब्दियों के संचित ज्ञान के मोती अनायास प्राप्त करती रही हूँ। दूसरा स्थान रहा है विश्वविद्यालय प्रकाशन जिसके हृदयस्थल में मोदीजी अपने आसन पर विराजमान रहते थे। स्व० धीरेन्द्रनाथ सिंह उनके घनिष्ठ सहयोगी और सलाहकार हुआ करते थे जो बहुत सुपठित तथा इस नगर के सांस्कृतिक क्रियाकलापों के साथ बड़ी गहराई से जुड़े हुए व्यक्ति थे तथा महत्वपूर्ण प्रकाशकीय संकल्पों में मोदीजी उनसे राय मशविरा करते हुए दिखलाई पड़ते थे। बाहर से जो जिज्ञासु और विद्वान शोध के लिये काशी आते थे उनकी सहायता में ये दोनों व्यक्ति बहुत उदार तथा तत्पर रहते थे। हो सकता है कि समकालीन बौद्धिक विमर्श में आज काशी की केन्द्रीय भूमिका न हो किन्तु प्राच्य विद्या सम्बन्धी अनुसन्धान में आज भी इसकी भूमिका वैसी ही महत्वपूर्ण है। मोदीजी से न केवल पुस्तकें और सूचनाएँ मिल जाती थीं, बल्कि जो लोग उदासीन पुस्तकालयों तथा पुस्तकालयाध्यक्षों से तिरस्कृत और निराश होकर लौटते थे उन्हें वे प्रोत्साहन भी प्रदान करते थे। अपनी दुकान के पुस्तक-संग्रह से साहित्य, इतिहास, कला और धर्म आदि विषयों की वांछित पुस्तकें लाकर दिखलाने के लिए वे किसी को तुरन्त निर्दिष्ट करते थे। क्योंकि काशी से सम्बन्धित जो कुछ सामग्री उपलब्ध है उसको वे संगृहीत रखते थे जिसका उल्लेखनीय भाग उन्होंने स्वयं प्रकाशित अथवा पुनर्मुद्रित किया था। जिन दो पुस्तकों ने मुझे सर्वप्रथम काशी के सांस्कृतिक इतिहास की ओर आकृष्ट किया था वे हैं मोतीचंद्र कृत 'काशी का इतिहास' तथा बलदेव उपाध्याय कृत 'काशी की पांडित्य परम्परा' और इन दोनों से काशी के अतीत, मध्य और आधुनिक तीनों कालों का सामान्यत: प्रतिनिधित्व हो जाता है। अन्य बहुत-सी पुस्तकों की तरह ये दोनों भी अप्राप्त ही रहतीं यदि मोदीजी ने इन्हें उपलब्ध और सुलभ बनाने का बीड़ा न उठाया होता। उल्लेखनीय यह है कि वे निरन्तर अपने सेवाक्षेत्र के विस्तार की कोशिश में रहते थे। चाहे 1933 में प्रकाशित प्रेमचंद के 'हंस' का काशी विशेषांक हो या रामचरितमानस की दुर्लभ टीका हो वे दुर्लभ को सर्वसुलभ बनाने का उद्योग करते रहते थे। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियों से निरन्तर जूझते रहने पर भी

शेष पृष्ठ 4 पर

वर्ष 2007 : आइने में वाराणसी

वाराणसी सांस्कृतिक शहर है। कहते हैं, यहाँ की संस्कृति में ही कुछ ऐसा है जो लोगों को बरबस खींचता है। इसी संस्कृतिबोध के दायरे में यहाँ का साहित्यबोध संस्कार पाता रहा है। यहाँ का हर व्यक्ति थोड़ा मस्त, तो थोड़ा बेखौफ रहता है। यह विशेषता ही शहर को लगातार गति में रखती है अन्यथा 23 नवम्बर 07 के कचहरी-बमकाण्ड और उसके पहले के संकटमोचन-बमकाण्ड से यह शहर यूँ ही न बचा रहता।

साहित्य के क्षेत्र में 2007 ई० का वर्ष वाराणसी के लिए हलचलों से भरा रहा है। कह सकते हैं कि गत वर्ष का 'वर्तमान' इतना समृद्ध रहा है कि इसके 'अतीत' की ओर लोगों का ध्यान बरबस ही जाने लगा है। सांस्थानिक स्तर पर जहाँ वर्ष 2005 की भाँति गत वर्ष भी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग को समृद्ध करनेवाला रहा है वहीं वैयक्तिक स्तर पर इस शहर के कुछ नये चेहरों ने अखिल भारतीय पहचान बनाई है। 'भारतीय वाङ्मय' ने हर महीने वाराणसी के महत्वपूर्ण साहित्यिक समाचारों को भी देने की कोशिश की है जिसका संक्षिप्त वार्षिक लेखा-जोखा प्रस्तुत है।

रचनात्मक स्तर पर गत वर्ष **कविता** मुख्य रूप से लिखी गई है। इस क्रम में श्रीप्रकाश शुक्ल, शिवकुमार पराग, आशीष त्रिपाठी, रामाज्ञा राय, व्योमेश शुक्ल जैसे युवा कवियों के साथ कई नवोदित कवियों ने कविता की पहली बार नागरिकता ग्रहण की है। अलिंद उपाध्याय, ज्ञानप्रकाश चौबे व अनुज लुगुन जैसे नवोदित कवियों ने कविता की दुनिया में पहली बार कदम रखा है। इन सभी कवियों ने देश की विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं जैसे नया ज्ञानोदय, हंस, वागर्थ, वर्तमान साहित्य, तद्भव आदि में अपनी उपस्थिति अत्यन्त प्रमुखता के साथ दर्ज करायी।

कथा साहित्य के क्षेत्र में *काशीनाथ सिंह* का उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' अपनी ताजगी का नया अहसास कराता है तो यहीं के *श्रीकांत दूबे* ने 'पूर्वज' कहानी लिखकर कहानी की दुनिया में प्रवेश किया है। *चन्दन पाण्डेय* जैसे युवा कहानीकार ने अपनी कहानी 'सिटी पब्लिक स्कूल' लिखकर प्रशंसा पाई।

आलोचना के क्षेत्र में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग विशेष सक्रिय दिखा जिसमें अवधेश प्रधान, श्रीप्रकाश शुक्ल, रामाज्ञा राय, आशीष त्रिपाठी व विनोद तिवारी के लेख भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे। **पत्रिकाओं** में 'परिचय', 'पक्षधर', 'जनपक्ष', व 'साखी' ने अपनी निरन्तरता का अहसास कराया और वर्ष के अन्त में 'परिचय' ने हजारीप्रसाद द्विवेदी पर तथा 'पक्षधर' ने सत्यप्रकाश मिश्र पर अपना अंक केन्द्रित किया।

पुस्तक-प्रकाशन के क्षेत्र में बीता वर्ष सक्रिय दिखा। वाराणसी में गत वर्ष कई उल्लेखनीय पुस्तकें प्रकाशित हुईं, जिनमें **कथा साहित्य** के क्षेत्र में *डॉ० नीहारिका* ने अपने बहुचर्चित कहानी संग्रह 'नामालूम रिश्तों का दंश' से प्रशंसा पाई। *विवेकी राय* के ग्रामीण परिवेश पर आधारित बहुचर्चित व बहुप्रशंसित उपन्यास 'पुरुष-पुराण' का बहुप्रतीक्षित पुनर्प्रकाशन हुआ। सुविख्यात साहित्यकार एवं स्तम्भ लेखक भरत झुनझुनवाला की योग वासिष्ठ जैसे गूढ़ विषय पर अत्यन्त ही बोधगम्य भाषा में 'योग वासिष्ठ की सात कहानियाँ' जैसी पुस्तक भी आयी।

आलोचना के क्षेत्र में *रामचन्द्र तिवारी* की 'हिन्दी का गद्य साहित्य', 'आधुनिक हिन्दी साहित्य : विविध आयाम', 'हिन्दी निबंध और निबंधकार', व 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और उनके समकालीन आलोचक' *बच्चन सिंह* की 'उपन्यास का काव्यशास्त्र', *श्रीप्रकाश शुक्ल* की 'नामवर की धरती' तथा *मान्धाता राय* की 'विवेकी राय और उनका सृजन-संसार' प्रमुख है। **कविता** के क्षेत्र में प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी की 'अथर्ववेद का काव्य', *श्रीप्रकाश शुक्ल* का कविता-संग्रह 'बोली बात', *राजेन्द्र आहुति* का संग्रह 'अकारण', *अशोक पाठक* का 'पूर्ण विराम के बाद भी कुछ', *आभा गुप्ता* का 'तुम शिव नहीं हो', *मुनि देवेन्द्र सिंह* का 'मुट्ठी भर भूख' तथा *गिरिधर करुण* का 'बात क्या है ?' व 'मन का हिरना' भी गत वर्ष आया।

संस्मरण के क्षेत्र में *कांतिकुमार जैन* की पुस्तक 'अब तो बात फैल गई' गत वर्ष ही विश्वविद्यालय प्रकाशन से आई जिसमें अदेखे संस्मृत के बहाने भी संस्मरण लिखकर गद्य-लेखन के क्षेत्र में मानक स्थापित किया गया।

अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तकों में डॉ० मनोजकुमार सिंह की पुस्तक 'रहिये अपने गावाँ जी', प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी की 'भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य परम्परा' व 'संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास', प्रो० वी० राघवन् की 'रसों की संख्या' (विश्वविद्यालय प्रकाशन), डॉ० जितेन्द्रनाथ मिश्र की पुस्तक 'भोजपुरी मंगलगीत' (सेवक प्रकाशन) जैसी पुस्तकें महत्त्वपूर्ण रही हैं।

वाराणसी के खाते में गत वर्ष के दो सम्मान व पुरस्कार भी दर्ज हुए। दोनों ही यहीं के प्रसिद्ध कवि **ज्ञानेन्द्रपति** को मिले। 'पहल सम्मान' का आयोजन 25 फरवरी 2007 को हुआ। उसी के ठीक पहले उन्हें 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार भी दिया गया। यह वाराणसी को पर्याप्त प्रतिष्ठा दिला गया। गत वर्ष यहाँ आयोजन भी खूब हुए। इसमें 'पहल सम्मान' का आयोजन, 'अस्सी के नामवर' का आयोजन जैसे आयोजन काफी सराहे गए। शताब्दी वर्ष में शहीद भगत सिंह, हजारीप्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, सीताराम चतुर्वेदी पर महत्वपूर्ण आयोजन हुए।

वाराणसी में 'विवाद' न हो, तो शहर की पहचान हो ही नहीं सकती। इन विवादों में महादेवी वर्मा को लेकर पंत के खिलाफ दिया गया नामवर सिंह का 'बयान' रहा है जिसकी परिणति श्री नामवर सिंह के खिलाफ थाने व कचहरी में मुकदमा दर्ज़ करने में हुई। 'अस्सी के नामवर' आयोजन भी अपनी तरह से विवादित रहा और 'समयांतर' के दरबारीलाल ने इसकी खबर ली।

नेशनल बुक ट्रस्ट का बेनियाबाग में आयोजित 31वाँ पुस्तक मेला भी विवादों में उलझ गया जिसमें शिव सैनिकों द्वारा मेला परिसर में ही 'हिन्दुत्व' के नाम पर कुछ पुस्तकों को आग के हवाले कर दिया गया। गत वर्ष कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तियों के असमय बिछुड़ने का भी वर्ष रहा जिसमें **शुकदेव सिंह** व **पुरुषोत्तमदास मोदी** का जाना शहर के लिए अपूरणीय क्षति रहा है। शुकदेव सिंह बनारस में मध्यकाल के बचे हुए अन्तिम व्यक्ति थे, तो पुरुषोत्तमदास मोदी उस परम्परा की अन्तिम कड़ी जिन्होंने प्रकाशक व लेखक के बीच सौहार्दपूर्ण संवाद बनाया। उनके द्वारा सम्पादित यह पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' उनके सुरुचिपूर्ण लेखन व सम्पादकीय टिप्पणियों के कारण शीघ्र ही अपनी अलग पहचान बना सकी। कुल मिलाकर बीता वर्ष बनारस के लिए साहित्य के हर क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण रहा है।

बच्चों को पुस्तकों की महत्ता समझानी चाहिए। 10-15 दिन में एक बार उन्हें अच्छी पुस्तकों के बीच ले जाना चाहिए ताकि पुस्तकों से उनका जुड़ाव हो सके। बच्चों को चाकलेट आदि के स्थान पर पुस्तकें उपहार में दें और वह भी हमारा साहित्य जो स्वयं में इतना समृद्ध है कि विदेशी पुस्तकों की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

पृष्ठ 3 का शेष

न तो मोदीजी की जिज्ञासा कभी घटी और न ही उनका हौसला कभी पस्त हुआ।

वे और धीरेन्द्रजी दोनों ही हिन्दी साहित्य के विद्वान तथा समीक्षक थे और इस समय हिन्दी को उनकी बहुत आवश्यकता थी। दोनों का लेखन धारा-प्रवाह था। हिन्दी के 1950 तथा 60 के दशक के बड़े रचनाकारों से निकट सम्पर्क के साथ ही मोदीजी का हिन्दी के साहित्य जगत से लम्बा साहचर्य था और वे आजीवन युवा रचनाकारों तथा विद्वानों के प्रेरणास्रोत बने रहे। हम सभी बहुत शिद्दत से मोदीजी और धीरेन्द्रजी की कमी को महसूस करते हैं और आशा करते हैं उनके बाद वाली पीढ़ी उनके संकल्पों को पूर्ण करने तथा हिन्दी साहित्य की गतिशीलता व रचनात्मकता के संवर्धन की दिशा में सम्पूर्ण निष्ठा के साथ अग्रसर होगी।

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

18 वाँ, नई दिल्ली ❑ (शनिवार, 2 फरवरी से रविवार, 10 फरवरी 2008) ❑

विश्व पुस्तक मेला

प्रगति मैदान, नई दिल्ली में

विविध विषयों की नवीनतम पुस्तकों के साथ उपस्थित हो रहा है।

और

पुस्तकों के इस वैश्विक समारोह में अपने स्टाल पर आपको सादर आमन्त्रित करता है।

आध्यात्मिक	■ स्वामी विशुद्धानन्द ■ पं० गोपीनाथ कविराज ■ करपात्रीजी ■ स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती ■ प्रो० कल्याणमल लोढ़ा ■ श्यामाचरण लाहिड़ी ■ विश्वनाथ मुखर्जी ■ स्वामी कृष्णानन्दजी 'महाराज' ■ भरत झुनझुनवाला ■ अरुणकुमार शर्मा **तथा** *अन्य.....*
इतिहास, कला और संस्कृति ग्रन्थ	■ प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर ■ डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ■ डॉ० लल्लनजी गोपाल ■ जेम्स प्रिंसेप ■ डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त ■ डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल ■ डॉ० मारुतिनन्दनप्रसाद तिवारी ■ डॉ० मोतीचन्द्र ■ पं० बलदेव उपाध्याय ■ प्रो० राजबली पाण्डेय ■ हृदयनारायण दीक्षित ■ डॉ० डेविड फ्राली **तथा** *अन्य..*
शिक्षा तथा मनोविज्ञान विषयक	■ डॉ० के०पी० पाण्डेय ■ आर०आर० रस्क ■ डॉ० प्रवीणचन्द्र श्रीवास्तव **तथा** *अन्य.....*
साहित्य-समीक्षा ग्रन्थ	■ डॉ० भगीरथ मिश्र ■ डॉ० रामचन्द्र तिवारी ■ डॉ० बच्चन सिंह ■ डॉ० शुकदेव सिंह ■ प्रो० कल्याणमल लोढ़ा ■ प्रो० त्रिभुवन सिंह **तथा** *अन्य.....*
कथा-कहानी-संस्मरण साहित्य	■ प्रेमचंद ■ द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' ■ बिमल मित्र ■ बच्चन सिंह ■ विवेकी राय ■ युगेश्वर ■ कुबेरनाथ राय ■ प्रभुदयाल मिश्र ■ कान्तिकुमार जैन ■ बाबूराम त्रिपाठी ■ नीहारिका **तथा** *अन्य.....*
संस्कृत साहित्य	■ डॉ० कपिलदेव द्विवेदी ■ डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी ■ पं० चण्डिकाप्रसाद शुक्ल ■ पं० बलदेव उपाध्याय ■ डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी ■ प्रो० राजेन्द्र मिश्र ■ प्रो० वी० राघवन् **तथा** *अन्य.....*
अन्य विषय	■ समाजशात्र, धर्म तथा दर्शन ■ पत्रकारिता ■ सङ्गीत ■ भाषण तथा संवाद विज्ञान ■ व्याकरण, भाषा और कोश ■ लोक-साहित्य/भोजपुरी साहित्य ■ संत-साहित्य ■ कबीर-साहित्य ■ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य-समीक्षा ■ प्रेमचंद-साहित्य ■ प्रसाद-साहित्य ■ उपन्यास ■ कहानी ■ कविता ■ नाटक, एकांकी ■ हास्य-व्यंग्य ■ संस्मरण, जीवनचरित यात्रा तथा डायरी ■ मनीषी, संत महात्मा ■ अध्यात्म, योग, तंत्र, दर्शन ■ योग, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व ■ ज्योतिष ■ बाल साहित्य *आदि.....*।

विश्वविद्यालय प्रकाशन

पोस्ट बॉक्स नं० 1149, विशालाक्षी भवन, चौक (चौक पुलिस स्टेशन के पास)

वाराणसी-221001 (यू०पी०) भारत

फोन व फैक्स : (0542) 2413741, 3413082 (का०), 2436498, 2311423 (नि०)

ई-मेल : vvp@vsnl.com ■ sales@vvpbooks.com ● वेबसाइट : www.vvpbooks.com

18वाँ नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2008

विश्वविद्यालय प्रकाशन • नई पुस्तकें

सम्पादक : प्रेमचंद
'हंस' काशी अंक
(1933 ई.)... 250.00

सम्पादक : प्रेमचंद
'हंस' आत्मकथांक
(1932 ई.)... 180.00

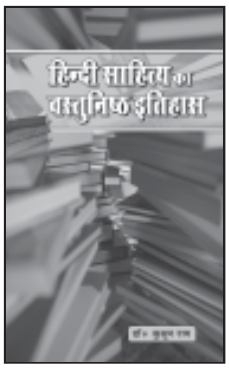

डॉ० त्रिभुवन सिंह
डॉ० विजय बहादुर सिंह
साहित्यिक निबंध... 500.00

डॉ० कुसुम राय
हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास... 450.00

प्रो० वी० राघवन्
अनु. - प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र
रसों की संख्या... 200.00

डॉ० कान्तिकुमार जैन
अब तो फैल गई... 250.00

डॉ० भवानीलाल भारतीय
साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य... 100.00

विश्वंभरनाथ त्रिपाठी 'बड़े गुरू'
आज भी वही बनारस है... 150.00

डॉ० नीहारिका
नामालूम रिश्तों का दंश... 120.00

डॉ० बाबूराम त्रिपाठी
तथागत... 100.00

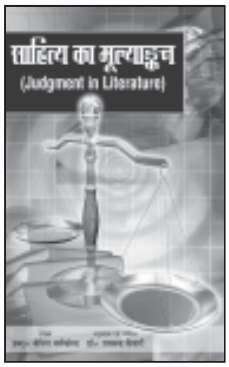

डॉ० रामचन्द्र तिवारी
आधुनिक हिन्दी-साहित्य : विविध आयाम... 300.00

डब्लू० बेसिल वर्सफोल्ड
अनु. - डॉ० रामचन्द्र तिवारी
साहित्य का मूल्याङ्कन... 100.00

डॉ० रामचन्द्र तिवारी
हिन्दी निबंध और निबंधकार... 250.00

सम्पादक : मान्धाता राय
विवेकी राय और उनका सृजन संसार... 150.00

डॉ० जुगनू पाण्डेय
सामाजिक परिवर्तन में कला एवं साहित्य... 180.00

डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी
संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास... 400.00

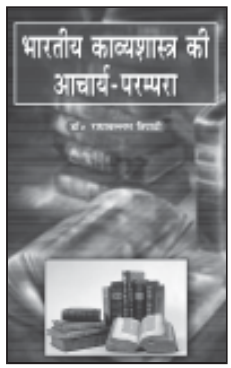

डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी
अथर्ववेद का काव्य... 150.00

डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी
भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य परम्परा... 180.00

डॉ० आर०वी० कविमण्डन
कर्नाटक संगीत पद्धति... 120.00

डॉ० प्रमिला प्रियहासिनी
संगीत की रसिक परम्परा... 150.00

18 वाँ नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2008

विश्व विद्यालय प्रकाशन • नई पुस्तकें

हृदयनारायण दीक्षित
सांस्कृतिक अनुभूतिक : राजनीति प्रतीति... 160.00

हृदयनारायण दीक्षित
भारतीय समाज : राजनीतिक संक्रमण... 160.00

हृदयनारायण दीक्षित
भारतीय संस्कृति की भूमिका... 250.00

डॉ० डेविड फ्राली
भारत के नव-निर्माण का आवाहन... 320.00

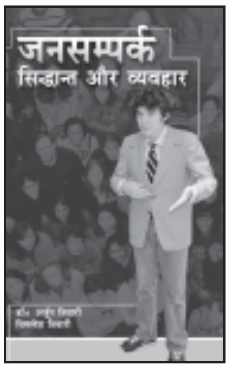

डॉ० अर्जुन तिवारी
जनसम्पर्क : सिद्धान्त और व्यवहार... 300.00

प्रो० मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी
सात्वतार्चन : वासुदेव शरण अग्रवाल जन्मशती... 500.00

डॉ० बृजभूषण श्रीवास्तव
प्राचीन भारतीय प्रतिमा-विज्ञान एवं मूर्ति-कला... 320.00

डॉ० अवधेश यादव
पूर्व मध्यकालीन जैन कला... 250.00

डॉ० (सुश्री) शरद सिंह
प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास... 280.00

डॉ० दिनेशकुमार अग्रवाल
ज्योतिष शास्त्र एवं अन्तरिक्ष विज्ञान... 140.00

प्रभुदयाल मिश्र
सौन्दर्यलहरी : तन्त्र-दृष्टि और सौन्दर्य-सृष्टि... 120.00

अनिल भटनागर
वेदान्त और आइन्सटीन... 100.00

खेमचन्द्र चतुर्वेदी
योग-साधना : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में... 100.00

स्वामी कृष्णानन्दजी 'महाराज'
स्वर से समाधि... 100.00

भरत झुनझुनवाला
योग वासिष्ठ की सात कहानियाँ... 60.00

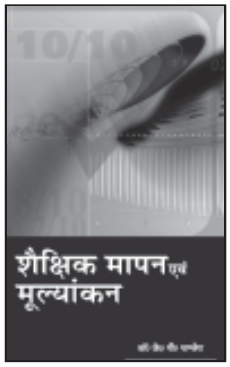

डॉ० के०पी० पाण्डेय
शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन... 150.00

डॉ० प्रवीणचन्द्र श्रीवास्तव
प्रारम्भिक सांख्यिकीय विधियाँ... 280.00

ना०वि० सप्रे
महाराष्ट्र के कर्मयोगी... 80.00

लक्ष्मी सक्सेना
आधुनिक भारत के युग प्रवर्तक संत... 250.00

डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय
संत रज्जब... 180.00

पुस्तक परिचय

तथागत

(आत्मकथात्मक उपन्यास)

डॉ० बाबूराम त्रिपाठी

प्रथम संस्करण : 2008

मूल्य : रु० 100.00

पृष्ठ/प्रकार : 112/सजिल्द

ISBN : 978-81-89498-24-5

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, चौक, वाराणसी

''यशोधरे! महान् उद्देश्य के लिए त्याग तो करना ही पड़ता है और उसमें व्यक्ति को प्रमाद भी नहीं करना चाहिए। मानता हूँ कि एक ओर मैं संसार को दु:खों से मुक्ति दिलवाने का उपाय खोज रहा हूँ और दूसरी ओर मैंने कपिलवस्तु को दु:खों के सागर में डूबने-उतराने के लिए छोड़ दिया है, पर इसी के साथ यह भी सच है कि समष्टि-हित के यज्ञ में व्यक्तिगत हितों की आहुति तो देनी ही पड़ती है।''

प्रस्तुत उपन्यास में भगवान् बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित उन्हीं प्रमुख घटनाओं का निरूपण हुआ है, जिनसे मानव-मूल्यों को सम्बल मिला है। जहाँ हंस-विवाद की घटना से अहिंसा को महत्त्व मिला, वहीं जरा, व्याधि एवं मृत्यु जैसे दृश्यों से तथागत को संसार की अनित्यता का ज्ञान हुआ, जिसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने संसार को दु:खों से छुटकारा दिलाने के लिए अमृत-तत्त्व की खोज में महाभिनिष्क्रमण किया। तथागत ने सम्बोधि-प्राप्ति के बाद संसार का ध्यान इस तथ्य की ओर आकृष्ट किया कि दु:ख के कारण राग, द्वेष, मोह, ईर्ष्या, काम, क्रोध आदि क्लेश हैं, जिनसे मनुष्य के कर्म प्रेरित होते हैं। बिना इन क्लेशों का नाश किये दु:खों से छुटकारा पाना असम्भव है।

भगवान् बुद्ध के महनीय व्यक्तित्व और उनके द्वारा प्रवेदित बौद्ध धर्म की विशेषताओं की ओर जनमानस का ध्यान आकृष्ट करना 'तथागत' उपन्यास का अभिप्रेत है। उपन्यास का शिल्प सामान्य शिल्प से कुछ हटकर है। इसमें पूर्वदीप्ति के माध्यम से भगवान् बुद्ध ने स्वयं अपने अतीत का मूल्यांकन किया है। इसके अतिरिक्त उपन्यास के कथानक की बुनावट में लेखक का यह प्रयास रहा है कि उस महामानव के सर्वमान्य महनीय स्वरूप में कहीं आँच न आये। इसके साथ ही बौद्ध धर्म की प्रकृति को संकीर्ण टीका-टिप्पणी से परे रखने की भी कोशिश की गयी है।

'तथागत' उपन्यास भगवान् बुद्ध के चरित्र एवं उनके उपदेशों की प्रासंगिकता पर जनमानस का ध्यान आकर्षित करने का एक सार्थक प्रयास है।

हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास

[दसवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी तक] (साहित्य इतिहास)

डॉ० कुसुम राय

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 688 लगभग

सजिल्द: रु० 450.00/ ISBN: 978-81-7124-623-6

अजिल्द: रु० 300.00/ ISBN: 978-81-7124-624-3

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

वैसे तो हिन्दी साहित्य के इतिहास की कई पुस्तकें उपलब्ध हैं। लेकिन प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया यह पहला इतिहास-ग्रन्थ है। इससे छात्रों और शोधार्थियों का रास्ता काफी सुगम हो गया है क्योंकि लिखित और मौखिक परीक्षाओं में वस्तुनिष्ठ प्रश्न ही पूछे जाते हैं।

अब छात्रों और शोधार्थियों को विभिन्न इतिहास-ग्रन्थों का अध्ययन नहीं करना पड़ेगा क्योंकि विदुषी लेखिका ने लगभग सभी इतिहास-लेखक विद्वानों के मतों का समावेश इस पुस्तक में किया है। यह पुस्तक पढ़ने के बाद छात्र इस तरह की अटकलों से भी बच जाएँगे कि परीक्षा में किस तरह के सवाल पूछे जा सकते हैं।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ० रामकुमार वर्मा, डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त से लेकर अब तक के हिन्दी के सभी विद्वानों के मत इस पुस्तक में समाविष्ट हैं, इसलिए सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में उन्हें इन पुस्तकों के पढ़ने की आवश्यकता नहीं रह गई है।

भाषा-विज्ञान के छात्रों के लिए भी यह पुस्तक काफी उपयोगी है। हिन्दी भाषा के विकास के विभिन्न सोपानों का परिचय कराया गया है। 'पूर्व पीठिका' शीर्षक के अन्तर्गत भारोपीय परिवार से हिन्दी भाषा का सम्बन्ध, भारतीय आर्य भाषाओं का अनुभव, लौकिक संस्कृत, प्राकृत, पालि और अपभ्रंश से खड़ी बोली हिन्दी के विकास और हिन्दी भाषा की विभिन्न बोलियों का सम्यक विवेचन किया गया है।

लेखिका ने साहित्य के इतिहास-लेखन की समस्याओं पर विस्तार से प्रकाश डाला है और विभिन्न आधिकारिक विद्वानों के विचार उद्धृत किए हैं। इसमें हर सम्भव पठनीय सामग्री देकर पुस्तक को छात्रोपयोगी बनाने का भरसक प्रयास किया है और इसमें वह पूरी तरह सफल हुई हैं।

आज जब गहन अध्ययन और विश्लेषण के अलावा तथ्यात्मक सामग्रियों के अर्जन और ग्रहण पर लगातार बल दिया जा रहा है, अध्यापन और शिक्षण के तरीके भी बदले हैं, ऐसे में विषयों के वस्तुनिष्ठ अध्ययन की आवश्यकता बढ़ जाती है। डॉ० कुसुम राय ने अपने गहन शोध और अध्ययन से इस पुस्तक में आदिकाल से रीतिकाल तक का सब कुछ समेट लिया है।

साहित्यिक निबन्ध

(साहित्य की विभिन्न विधाओं पर महत्त्वपूर्ण निबन्धों का संग्रह)

प्रो० त्रिभुवन सिंह

प्रो० विजयबहादुर सिंह

संशोधित तथा परिवर्द्धित चतुर्थ संस्करण : 2008

पृष्ठ : 880 लगभग

सजिल्द: रु० 500.00/ ISBN: 978-81-7124-621-2

अजिल्द: रु० 350.00/ ISBN: 978-81-7124-622-9

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

यह कृति वस्तुत: एक कृति नहीं है अपितु हिन्दी साहित्य और आलोचना जगत के ख्यातिलब्ध कर्त्ताओं की एक विशिष्ट और अद्वितीय सर्जना है। इसमें हिन्दी साहित्य के इतिहास, समीक्षा-सिद्धान्त, विशिष्ट रचनाकारों, विविध साहित्य रूपों तथा हिन्दी के कुछ चर्चित विषयों के साथ ही अनेक अधुनातन विधाओं जैसे—पत्रकारिता, प्रयोजनमूलक हिन्दी, सूचना प्रौद्योगिकी और अनुवाद आदि विषयों पर अधिकारी विद्वानों के लेख हैं। एक साथ साहित्य और उससे जुड़ी अनेक विधाओं पर उत्कृष्ट आलेखों का संचयन ही इसकी उपलब्धि है। इसीलिए जहाँ इस कृति का समीक्षा जगत में विशेष आदर होगा वहीं दूसरी ओर स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पी०सी०एस०, आई०ए०एस० जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रतिभागियों के लिए भी यह सहायक सिद्ध होगी। यह कृति प्रो० त्रिभुवन सिंह एवं प्रो० विजयबहादुर सिंह के गम्भीर चिन्तन-मनन और परिश्रम की सार्थकता का सहज परिणाम है।

- हिन्दी के शीर्षस्थ विद्वानों—आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ० नगेन्द्र, डॉ० देवेन्द्रनाथ शर्मा, डॉ० उदयभानु सिंह, डॉ० भोलाशंकर व्यास, डॉ० प्रेमशंकर, डॉ० शिवसहाय पाठक, डॉ० राममूर्ति त्रिपाठी, डॉ० विष्णुकान्त शास्त्री आदि के निबन्धों के संकलन से चर्चित व महत्त्वपूर्ण निबन्ध संग्रह।
- हिन्दी साहित्य के इतिहास, समीक्षा, सिद्धान्त, विविध काव्य एवं गद्य विधाओं व उनके प्रतिनिधि लेखकों पर प्रसिद्ध विद्वानों के निबन्धों का महत्त्वपूर्ण संग्रह।
- दलित साहित्य, सामाजिक संरचना में स्त्री की भूमिका पर तथा स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी पत्रकारिता जैसे नव्यतम-प्रासंगिक विषयों पर उत्कृष्ट निबन्धों का संचयन।
- स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पी०सी०एस०, आई०ए०एस० जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रतिभागियों के लिए
- अनुवाद विज्ञान, कम्प्यूटर अनुप्रयोग एवं सूचना तकनीकी पर महत्त्वपूर्ण लेख।

सांस्कृतिक अनुभूति : राजनीतिक प्रतीति

[ज्वलंत राष्ट्रीय प्रश्नों पर वैचारिक निबन्धों का महत्वपूर्ण संग्रह]

हृदयनारायण दीक्षित

प्रथम संस्करण : 2008

मूल्य : रु० 160.00

पृष्ठ/प्रकार : 172/सजिल्द

ISBN : 978-81-7124-620-5

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

हिन्दुत्व, अल्पसंख्यक, अल्पसंख्यकवाद, राष्ट्र-गीत, राष्ट्रीयता, राष्ट्रवाद, धर्मनिरपेक्षता जैसे कुछ शब्द हमेशा विवाद के घेरे में रहे हैं। खासतौर पर देश का तथाकथित प्रगतिशील या वामपंथी तबका इन शब्दों को लेकर उलझता रहा है। मजे की बात तो यह है कि अल्पसंख्यक शब्द मुस्लिम समुदाय का समानार्थक हो गया है। '**सांस्कृतिक अनुभूति : राजनीतिक प्रतीति**' में संकलित पचास लेखों में राष्ट्रवादी विचारक श्री दीक्षितजी ने इन तथा इन जैसे अन्य कई ज्वलंत और सामयिक मुद्दों पर दो टूक लहजे में अपने विचार व्यक्त किये हैं। लेखक की मजबूत तार्किकता के चलते विरोधी भी नये सिरे से सोचने पर विवश हो जाते हैं। इस पुस्तक में संकलित लेखों में विद्वान लेखक ने उन विषयों को स्पर्श किया जिसे तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादी सिरे से नकारते हैं या खारिज कर देते हैं। इसके उलट आज जरूरत है इन विषयों पर गहराई से मंथन की। आधुनिक विज्ञान भी भारत के प्रागैतिहासिक युग की उपलब्धियों की ओर संकेत करने लगा है। भारतीय चिंतन के कुछ सूत्र तो शाश्वत लगते हैं। लेखक ने इन सूत्रों की पुनर्प्रस्तुति में अपने गहन अध्ययन का परिचय दिया है।

भारतीय समाज : राजनीति संक्रमण

[ज्वलंत राष्ट्रीय प्रश्नों पर वैचारिक निबन्धों का महत्वपूर्ण संग्रह]

हृदयनारायण दीक्षित

प्रथम संस्करण : 2008

मूल्य : रु० 160.00

पृष्ठ/प्रकार : 160/सजिल्द

ISBN : 978-81-7124-619-9

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

दीक्षितजी के चिंतन की प्रकृति को उनकी इस पुस्तक '**भारतीय समाज : राजनीतिक संक्रमण**' में संकलित 48 निबन्धों में देखा जा सकता है। ये लेख राजनीति, संविधान, आरक्षण, राष्ट्रीय अस्मिता, भाषा, श्रमिक समस्या, जल संकट, खेती और किसानों की समस्या, पुलिस, यौन शिक्षा और लोकतंत्र आदि पर केन्द्रित हैं और लेखक के दो-टूक विचारों पर प्रकाश डालते हैं। आरम्भिक तीन लेख राजनीति पर ही हैं और राजनीतिक विसंगतियों तथा विद्रूपताओं को रेखांकित करते हैं। इन विसंगतियों के बावजूद लेखक आशान्वित है कि देश में एक ऐसी संस्कृतिकपरक व्यवस्था लोगू होगी जिसमें प्राचीन भारत की तरह जनता की ताकत सर्वोपरि होगी। ''*भारत अजन्मा है। भारत सिर्फ एक राज्य या देश ही नहीं है। देश दृश्यमान सत्ता है और राज्य विधिक सत्ता, लेकिन भारत देश और राज्य से परे एक गहन सांस्कृतिक सत्ता भी है। भारत सिर्फ एक भूखण्ड नहीं सम्पूर्ण जीवन दर्शन है।*'' लगभग सभी सामयिक विषयों पर विद्वान लेखक ने गहराई और बेबाकी से विचार किया है और कई ऐसे विचार बिन्दु छोड़े हैं जो ज्वलंत तो हैं ही विचारणीय भी हैं। इन पर खुलकर बहस होनी चाहिए।

भारतीय संस्कृति की भूमिका

[भारतीय इतिहास, संस्कृति, अध्यात्म, चिंतन की गहन व्याख्या]

हृदयनारायण दीक्षित

प्रथम संस्करण : 2008

मूल्य : रु० 250.00

पृष्ठ/प्रकार:ल०256/सजिल्द

ISBN : 978-81-7124-625-0

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

सतत प्रवाहमान भारतीय संस्कृति के अनेक आयाम हैं जिनसे भारतीयता का सृजन हुआ है। इस समस्त आध्यात्मिक, धार्मिक व सांस्कृतिक परिवेश को विद्वान लेखक हृदयनारायण दीक्षित ने 'भारतीय संस्कृति की भूमिका' ग्रन्थ में प्रस्तुत किया है। दीक्षित जी भारतीय पौराणिक ग्रन्थों के यशस्वी गोताखोर हैं। इस ग्रन्थ में ऋग्वेद को प्राचीनतम ज्ञान-अभिलेख के रूप में प्रस्तुत किया गया है। विश्व की सभी संस्कृतियों के परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति की महत्ता स्थापित करते हुए दीक्षित जी ने पौराणिक ग्रन्थों की वैज्ञानिकता को बखूबी रेखांकित किया है। यह ग्रन्थ भारतीय इतिहास, संस्कृति, आध्यात्मिक जीवन, धर्म, साहित्य एवं समाज के विशेषज्ञ चिन्तकों व अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी तो है ही, विमर्श के नये अवसर भी प्रदान करता है। दीक्षित जी ने ऋग्वेद को राष्ट्रीय वैशिष्ट्य का गौरवग्रन्थ माना तो है ही, उसके गौरव प्रदान करने वाले अनेक अनछुए पक्षों से साक्षात्कार भी कराया है। यह ग्रन्थ वैचारिक स्तर पर तर्क व चर्चाओं को आमन्त्रण भी देता है।

''*हृदयनारायण दीक्षितजी राष्ट्रवादी चिंतक हैं। उनके पाँव अतीत में भी हैं, वर्तमान में भी*

और भविष्य की ओर बढ़ने के लिए तैयार हैं। वे सक्रिय राजनीति में भी हैं। राष्ट्रीय स्तर के एक राजनीतिक संगठन से जुड़े हैं। उनकी सोच में ज्यादातर भारतीय संस्कृति, भारतीय अस्मिता और भारतीय स्वाभिमान है। वे राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान भारतीय जीवन-दर्शन और अतीत में ढूँढ़ते हैं। पश्चिम से आयातित राजनीतिक शैली, जीवन-पद्धति, तथाकथित आधुनिकता उन्हें आकर्षित नहीं करती। भारतीय समाज से उठते हुए सवालों का हल वे भारतीय संस्कृति में खोजते हैं—उस संस्कृति में जिसे देश के महापुरुषों ने लम्बी साधना के बाद एक सर्वांगीण स्वरूप प्रदान किया है, स्वस्थ जीवन-मूल्यों से बुना है।''

भारत विश्व का सबसे बड़ा जनतंत्र है। भारतीय जनतंत्र के सामने बहुआयामी चुनौतियाँ हैं। जातियाँ विचारनिष्ठ राजनीति पर भारी पड़ती दिखाई दे रही हैं। बाहुबल और धनबल का अपना अलग प्रभाव क्षेत्र है। आर्थिक उदारीकरण से बेशक भारतीय जन के एक हिस्से को फायदा पहुँचा है, लेकिन समाज का एक बड़ा हिस्सा शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन और रोजगार की बुनियादी जरूरतों से वंचित है। राष्ट्रीय एकीकरण की चुनौती भी खतरनाक है। पूर्वोत्तर अशांत है, जम्मू-कश्मीर जहाँ का तहाँ है, विदेशी घुसपैठ के प्रश्न हैं। पर्यावरण और कृषि के संरक्षण की चुनौती भी है।

'दैनिक जागरण' व अन्य महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में अनवरत लेखन करने वाले श्री हृदयनारायण दीक्षितजी ऐसे सभी राष्ट्रीय प्रश्नों को उठाते हैं। वे अपने अकाट्य तर्कों के जरिये दुनिया के तमाम देशों के उदाहरण देते हैं और समाधान के लिए हजारों वर्ष पुराने वैदिक-काल, उपनिषद-काल के समाज की याद दिलाते हैं। वे आधुनिकता को प्राचीन परम्परा का विस्तार मानते हैं और आयातित विदेशी सभ्यता को खारिज करते हैं। उनसे असहमत हुआ जा सकता है, लेकिन कोई उन्हें यूँ ही खारिज नहीं कर सकता। उनका लेखन अध्ययनशील नवयुवकों से लेकर वरिष्ठ नागरिकों तक अत्यधिक लोकप्रिय है। 'दैनिक जागरण' में प्रकाशित उनके आलेखों के दो संग्रह 'राष्ट्र सर्वोपरि' व 'जम्बू द्वीपे भरतखण्डे' काफी लोकप्रिय हुए हैं। उनके आलेखों की इसी शृंखला की अगली कड़ियों के रूप में ये दो पुस्तकें निश्चित रूप से जन-जन में राष्ट्रीय विचारधारा को स्थापित करेंगी और भारतीय संस्कृति और अस्मिता के लिए आवश्यक भारतीय स्वाभिमान में अभिवृद्धि करेंगी।

—संजय गुप्त, *सम्पादक एवं सीईओ,* दैनिक जागरण समूह

साहित्य का मूल्याङ्कन

(Judgment in Literature)

(साहित्य समीक्षा)

डब्लू० बेसिल वर्सफोल्ड

अनुवादक एवं समीक्षक :

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

संशोधित तथा परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण : 2008

मूल्य : रु० 100.00 / पृष्ठ : 152 / अजिल्द

ISBN : 978-81-7124-606-9

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

डब्लू० बेसिल वर्सफोल्ड कृत 'जजमेंट इन लिटरेचर' पाश्चात्य समीक्षा-शास्त्र का संक्षिप्त परिचय करानेवाली बड़ी ही सारगर्भित रचना है। लेखक ने इस कृति में कला और साहित्य के सम्बन्ध में विवेचित एवं निर्णीत पाश्चात्य मान्यताओं को ऐतिहासिक क्रम से अत्यन्त सुलझे हुए रूप में प्रस्तुत कर दिया है। कला, साहित्य, प्राचीन आलोचना, रोमैण्टिक आलोचना, रचनात्मक साहित्य और कल्पना का आनन्द, उन्नीसवीं शती की समीक्षा, साहित्य के मूल्याङ्कन की प्रक्रिया, साहित्य के रूप—आदि अध्यायों के अन्तर्गत वह सब कुछ कह दिया गया है जो पाश्चात्य-समीक्षा के सिद्धान्तों को सारभूत रूप में प्रस्तुत करने के लिए अपेक्षित है। इस लोकप्रिय रचना के हिन्दी-रूपान्तर की आवश्यकता का अनुभव बहुत दिनों से किया जा रहा था। प्रस्तुत कृति 'साहित्य का मूल्याङ्कन' इस आवश्यकता की पूर्ति का विनम्र प्रयास है। अनुवादक ने पुस्तक को अधिक उपयोगी बनाने के लिए प्राय: हर अध्याय के अन्त में परिशिष्ट रूप में तद्विषयक भारतीय मान्यताओं का भी विवेचन प्रस्तुत किया है। कला, साहित्य और उसके मूल्याङ्कन के सम्बन्ध में चिन्तन एवं विवेचन की भारत की अपनी समृद्ध परम्परा रही है। इधर हिन्दी-समीक्षा का विकास प्राचीन भारतीय मूल्यों एवं आधुनिक पाश्चात्य मान्यताओं के समन्वित आधार पर हुआ है। इसलिए दोनों के तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता का अनुभव आज अधिक किया जाने लगा है। प्रस्तुत कृति में अनुवादक ने इस दिशा में भी जिज्ञासुओं को अग्रसर करने के लिए प्रारम्भिक प्रयास के रूप में कुछ तथ्य प्रस्तुत किए हैं। भूमिका में अनुवादक ने पाश्चात्य समीक्षा का—ग्रीक काव्यशास्त्र-रचना के युग से लेकर वर्तमान युग तक—संक्षिप्त इतिहास देकर कृति की उपयोगिता को और भी बढ़ा दिया है। वर्सफोल्ड के सामने उन्नीसवीं शती तक की ही समीक्षा एवं उससे सम्बद्ध विवेचन सामग्री-रूप में था। बीसवीं शती में समीक्षा-शास्त्र का अभूतपूर्व विकास हुआ है। भूमिका में बीसवीं शती के समीक्षा-सिद्धान्तों की भी समुचित चर्चा कर दी गई है। इस प्रकार प्रस्तुत कृति समीक्षा-शास्त्र के जिज्ञासुओं के लिए एक अत्यन्त उपयोगी रचना बन गई है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य : विविध आयाम

[आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह] (साहित्य समीक्षा)

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

प्रथम संस्करण : 2007

पृष्ठ : 252

सजिल्द: रु० 300.00/ **ISBN: 978-81-7124-598-7**

अजिल्द: रु० 200.00/ **ISBN: 978-81-7124-599-4**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रस्तुत कृति डॉ० रामचन्द्र तिवारी द्वारा समय-समय पर लिखे गये आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है। इसमें कुल 38 निबन्ध संगृहीत हैं। निबन्ध किसी सन्दर्भ-विशेष से जुड़े नहीं हैं। मोटे तौर पर इसमें 'परम्परा', 'इतिहास', 'पत्रकारिता', 'राष्ट्रीयता', 'तुलसीदास और निराला के राम की वैशिष्ट्य-गत एकता', 'रस सिद्धान्त और आधुनिक काव्य', 'आलोचना के प्रतिमान', 'राष्ट्र कवि माखनलाल चतुर्वेदी का कला-चिन्तन', 'हिन्दी-कविता के पिछले पचास वर्ष', 'विष्णुकान्त शास्त्री की आलोचना-यात्रा', 'आलोचना के विरोधी प्रतिमानों के बीच सामञ्जस्य की सम्भावना', 'लोक के प्रतीक और उनका परिदृश्य', 'हिन्दी रंगमंच के विकास में लोक-नाट्य-शैली की भूमिका' आदि विविध प्रकार के निबन्ध संगृहीत हैं। सभी निबन्ध सार गर्भित और सुचिंतित हैं।

आलोचनात्मक निबन्धों के संग्रह की दो पद्धतियाँ हैं। एक में एक ही विषय पर अनेक लोग लिखते हैं और उन्हें संगृहीत किया जाता है, दूसरे में अनेक विषयों पर एक ही व्यक्ति लिखता है। पहली पद्धति में विषय विशेष के विविध रूप और आयाम सामने आते हैं, दूसरी पद्धति में लेखक-विशेष के मानसिक क्षितिज के विस्तार का पता चलता है। कहना न होगा कि प्रस्तुत संग्रह में दूसरी पद्धति अपनाई गई है। इसे इसी दृष्टि से देखना उचित होगा। पुस्तक सभी प्रकार के पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास

(प्राचीन इतिहास)

डॉ० (सुश्री) शरद सिंह

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 360 लगभग

सजिल्द: रु० 280.00/ **ISBN: 978-81-7124-626-7**

अजिल्द: रु० 180.00/ **ISBN: 978-81-7124-627-4**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य

[कवियों, लेखकों, साहित्यकारों तथा राजनीतिज्ञों के मनोरंजक प्रसंगों का अपूर्व संग्रह]

डॉ० भवानीलाल भारतीय

प्रथम संस्करण : 2008

पृष्ठ : 104 लगभग

सजिल्द: रु० 100.00/ **ISBN: 978-81-89498-25-2**

अजिल्द: रु० 50.00/ **ISBN: 978-81-89498-26-9**

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, चौक, वाराणसी

साहित्य की आत्मा कहे गये नव रसों में हास्य का प्रमुख स्थान है जो पाठक के मन में प्रफुल्लता, उमंग तथा विनोद जैसे मनोभावों को उत्पन्न करता है। हिन्दी साहित्य में हास्य की वृत्ति आरम्भ से ही विद्यमान रही है। कबीर की उलटबांसियों को आप देखें। महाकवि सूरदास के भ्रमरगीत प्रकरण में हास्य, व्यंग्य तथा विनोद की त्रिवेणी सर्वत्र प्रवाहित हो रही है। गोस्वामी तुलसीदास चाहे लाख मर्यादावादी रहे हों, प्रसंग आने पर वे हास्य की निश्छल धारा प्रवाहित करने से नहीं चूकते।

आधुनिक काल में भारतेन्दु का साहित्य सृजन हास्य के नये आयाम लेकर आया। संस्कृत नाटकों में व्यंग्य-विनोद का आधार विदूषक प्रत्येक कृति में उपस्थित रहता था।

जब सामाजिक और राजनैतिक जीवन में विकृतियाँ और विडम्बनाएँ आईं और सार्वजनिक जीवन में पक्षपात, भ्रष्टाचार तथा परिवार पोषण की भावना प्रबल हुई तो पत्र-पत्रिकाओं में व्यंग्यात्मक लेखन की धारा ने जन्म लिया। सफल लेखक स्वयं को हास्य का उपादान बनाकर एक प्रकार की तृप्ति का अनुभव करता है। प्रसिद्ध है कि गम्भीर व्यक्तित्व के धनी तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सफल हिन्दी अध्यापक पं० रामचन्द्र शुक्ल पढ़ाते-पढ़ाते कोई ऐसी चुहल भरी बात कह देते जिससे सारी क्लास हँसी से सराबोर हो जाती किन्तु आचार्य-प्रवर की छोटी मूँछों में वह हास्य की विरल रेखा यदा-कदा ही दिखाई देती।

प्रस्तुत ग्रन्थ विभिन्न स्रोतों से एकत्र किये गये साहित्यकारों के हास्य प्रसंगों का संकलन है। यहाँ हिन्दी से भिन्न भारतीय तथा अंग्रेजी भाषा के कुछ लेखकों के हास्य प्रसंग भी एकत्रित किये गये हैं। संस्कृत में हास्य प्रधान अवतरणों का बाहुल्य है, यहाँ तो संकेत मात्र ही कुछ सामग्री दी गई है। साहित्य और राजनीति का क्षेत्र चाहे परस्पर विरोधी न भी माना जाये किन्तु उसमें यदा कदा सामञ्जस्य भी हुआ है। सरोजिनी नायडू यदि सिद्धहस्त कवयित्री थीं तो पं० जवाहरलाल नेहरू इतिहास के प्रकाण्ड पण्डित तथा प्रगल्भ लेखक थे, ऐसे ही राजनीतिज्ञों के कुछ हास्य-प्रसंग भी यहाँ समाविष्ट कर दिये गये हैं।

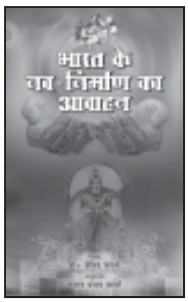

भारत के नव-निर्माण का आवाहन (Awaken Bhart)

(हिन्दुत्व का पुनरुत्थान)

डॉ० डेविड फ्राली

अनुवादक

केशवप्रसाद कायाँ

संस्करण : 2008

पृष्ठ : 296 लगभग

सजिल्द: रु० 320.00/ **ISBN: 978-81-7124-628-1**

अजिल्द: रु० 225.00/ **ISBN: 978-81-7124-629-8**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

इस पुस्तक का आलोच्य विषय है 'हिन्दुत्व का पुनरुत्थान', वह भी बौद्धिक स्तर पर। वर्तमान समय में ऐसे बुद्धिजीवी वर्ग को तत्पर होना चाहिए जो सूचना तंत्र (Media) तथा कम्प्यूटर युग में उभरती हुई सूचना क्रान्ति का सफलतापूर्वक प्रतिरोध कर सके। इन नव प्रबुद्ध बुद्धिजीवियों को हिन्दू विरोधी शक्तियों द्वारा फैलाए जा रहे प्रवाद का भी सम्यक् ज्ञान होना आवश्यक है। हिन्दुओं को जान लेना चाहिए कि इन हिन्दू विरोधी शक्तियों को इस कार्य के लिये बहुत बड़ी मात्रा में आर्थिक संसाधन उपलब्ध कराये जाते हैं। इसके साथ ही हिन्दू बुद्धिजीवियों को अपने समाज की त्रुटियों का भी विश्लेषण करते हुए समाज तथा समकालीन चिन्तकों का ध्यान उन त्रुटियों की ओर आकर्षित करना चाहिए तथा अपनी क्षमता के अनुरूप उन अपर्याप्तताओं का समाधान भी प्रस्तुत करना चाहिए।

सबसे पहली आवश्यकता है कि हिन्दुओं को विश्व समुदाय के समक्ष अपने विचारों का प्रस्तुतिकरण स्पष्ट रूप से करना चाहिए। हिन्दुओं को अपने प्रतिपक्षियों से सावधान रहते हुए मीडिया तथा पाठ्य-पुस्तकों में उनके द्वारा हिन्दू धर्म के विकृतिकरण का प्रभावी प्रतिवाद करना चाहिए। हिन्दुओं को अपनी महान आध्यात्मिक परम्परा के परिरक्षण का प्रयास सतत करते रहना चाहिए। चाहे इसके लिए उन्हें सीमित आस्था वाले सम्प्रदायों से संघर्ष ही क्यों न करना पड़े। उन्हें अन्य सम्प्रदायों को अनावश्यक प्रसन्न करने के बजाय सत्य का आग्रही होना चाहिए, यह जानते और समझते हुए कि सत्य का साधक सदैव लोकप्रिय नहीं भी हो सकता है।

श्री अरविन्द एवं स्वामी विवेकानन्द ने अध्यात्म, योग तथा वेदों की शिक्षाओं के आधार पर भारत के पुनरुत्थान का आह्वान किया। दुर्भाग्यवश आधुनिक भारत ने उनके द्वारा दिखाये गये मार्ग का अनुसरण नहीं किया, जिसके फलस्वरूप ही नई-नई समस्याएँ पैदा हो रही हैं। अब समय आ गया है कि भारत के मनीषी इस प्रवाह को पलटने का प्रयास करें।

इस पुस्तक में लेखक ने विद्वत्तापूर्ण एवं साहसिक मानसिकता के साथ भारत तथा हिन्दुत्व के विरुद्ध फैलाई जा रही भ्रान्तियों तथा अनर्गल प्रवादों के विषय में विस्तार से प्रकाश डाला है।

हंस (काशी अंक) (1933 ई०)

सम्पादक : **प्रेमचंद**

पुनर्मुद्रित संस्करण : 2008

मूल्य : रु० 250.00

पृष्ठ/प्रकार : 264/सजिल्द

ISBN : 978-81-7124-630-4

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अक्टूबर-नवम्बर 1933 में सुविख्यात साहित्यिक पत्रिका 'हंस' के सम्पादक सुप्रसिद्ध कथाकार मुंशी प्रेमचंद ने दिन-रात अथक परिश्रम एवं शोध कर 'हंस' का वह दुर्लभ 'काशी अंक' निकाला था जो अपने अंक में समेटे था विश्व की प्राचीनतम व भारत की सांस्कृतिक नगरी काशी का साहित्यिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीति अद्यावधि-प्रामाणिक इतिहास एवं अलभ्य जानकारी जो तब तक अनुपलब्ध थी। इस अंक को अपने महत्त्वपूर्ण आलेखों से सुसज्जित व प्रामाणिक बनाया था तत्कालीन विद्वानों जैसे डॉ० भगवानदास, श्रीयुत् पन्नालाल, श्रीयुत् राधेश्याम शर्मा, डॉ० सम्पूर्णानन्द, श्रीयुत् कृष्णशंकर शुक्ल, श्रीयुत् चन्द्रमौलिक सुकुल, श्रीयुत् साँवलजी नागर, श्रीयुत् त्रिलोचन, श्री अयोध्यानाथ सान्याल, श्रीमती शिवरानी देवी, बाबू ब्रजरतनदास, शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र', दिवाकर झा, कुमार स्वामी मुदालियर, श्रीकृष्णदेव प्रसाद गौड़ आदि ने। विगत कई दशकों से अप्राप्य यह अति महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ विश्वविद्यालय प्रकाशन के संस्थापक स्व० पुरुषोत्तमदास मोदीजी के हिन्दी साहित्य के प्रति उनके अगाध प्रेम और संकल्प के फलस्वरूप पुन: प्रकाशित हुआ है। वर्तमान विद्वत समाज, अध्येता, अध्यापक एवं छात्र निश्चित रूप में इससे लाभान्वित होंगे और स्व० मोदीजी के प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

हंस (आत्मकथांक) (1932 ई०)

सम्पादक : **प्रेमचंद**

पुनर्मुद्रित संस्करण : 2008

मूल्य : रु० 180.00

पृष्ठ/प्रकार : 000/अजिल्द

ISBN : 978-81-7124-631-1

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

'हंस' काशी अंक की तरह उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद के सम्पादन में 1932 ई० में प्रकाशित यह आत्मकथांक भी दशकों से अप्राप्य था जो पुन: प्रकाशित हो समस्त साहित्य जगत को लाभान्वित करने आ गया है। आज हम यत्र-तत्र आत्मकथा और संस्मरणों का जो दौर देखते हैं उसका जनक था यह 'हंस' का आत्मकथांक। आज से 65 वर्ष पहले आत्मकथा, संस्मरण, लेखन की शैली क्या थी? अध्येताओं की इस बहुप्रतीक्षित उत्कट अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए इस ग्रन्थ को सुलभ बनाकर विश्वविद्यालय प्रकाशन के संस्थापक स्व० पुरुषोत्तमदास मोदीजी ने स्तुत्य कार्य किया है।

पाठक जब उन तत्कालीन उद्भट साहित्यकारों, विद्वानों के उत्कृष्ट आत्मकथा, संस्मरण लेखों का रसास्वादन करेंगे तभी वे इस ग्रन्थ की उपादेयता का सही आकलन कर सकेंगे और अपने व्यक्तिगत पुस्तकालय पर गर्व कर सकेंगे जिसमें यह अंक होगा। रायसाहब लाला सीतारामजी, पं० रामचन्द्र शुक्ल, पं० रामनारायणजी मिश्र, पं० विनोदशंकर व्यास, श्री शिवपूजन सहायजी, श्री रायकृष्णदासजी, भाई परमानन्दजी, श्री धीरेन्द्र वर्मा, गोपाल राम गहमरी, बद्रीनाथ भट्ट, सद्गुरु शरणजी अवस्थी आदि अनेकानेक हिन्दी के आदि विद्वानों के आलेखों से सुसज्जित यह अंक पाठकों को पूर्णतया तृप्त कर देगा।

अब तो बात फैल गई

[यादों, विवादों और संवादों की संस्मरणात्मक प्रस्तुति]

डॉ० कान्तिकुमार जैन

प्रथम संस्करण : 2007

मूल्य : रु० 250.00

पृष्ठ/प्रकार : 264/सजिल्द

ISBN : 978-81-7124-586-4

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

''आपके सभी संस्मरणों की दीर्घसूत्रता संस्मरण साहित्य में अलग से स्थापित हो गई है। अभी तक जितने भी संस्मरण अलग-अलग व्यक्तियों पर लिखे गये हैं उनमें काशी को छोड़कर, कोई अन्य संस्मरणकार याद नहीं आता। विस्तार में, विवरणों में जाकर बारीकी बनाये रखना बहुत कठिन है। आपके संस्मरणों की यह विशेषता हर कहीं रेखांकित हुई है। आपने अपने पात्रों का हर कोण से भीतरी दुनिया का अंतरंग भी अक्षत रूप से संयोजित किया है... सभी संस्मरण अविस्मरणीय तथ्यों से लबरेज हैं। इनकी खूबी यह भी है कि चारित्रिक वैविध्य के चलते इन्हें साल छ: महीने के अन्तराल से पढ़ने पर फिर वही कथा रस अक्षुण्ण बना रहेगा। आए आपकी कलम में जोर और जियादा।'' **—से०रा० यात्री,**

प्रसिद्ध कथाकार और सम्पादक, गाजियाबाद

अपने समय के मूल्यों की भीतरी परतों को प्रत्यक्ष करने वाली यह पुस्तक और कुछ नहीं तो केवल बतरस के लिए, केवल भाषा की उछालों के लिए भी पठनीय है।

अत्र-तत्र-सर्वत्र

बच्चों की प्रिय लेखिका और साहित्य का सबसे बड़ा पुरस्कार

14 नवम्बर को नई दिल्ली के त्रिवेणी कलासंगम सभागृह में स्वीडन की एक लेखिका की जन्मशताब्दी के अवसर पर कहा गया कि आस्ट्रिड लिंडग्रेन (1907-2002), जिनकी जन्मशताब्दी हम मना रहे हैं, अद्‌भुत लेखिका थीं। उनकी खासियत यह थी कि वे दुनिया को बच्चों के नज़रिए से देखती थीं। उनकी लिखी हर चेहरे पर मुस्कान लानेवाली किताबें दुनियाभर की 90 भाषाओं में अनूदित हुई हैं और उन पर 40 से ज़्यादा फिल्में और धारावाहिक बने हैं।

अपने सीधे सटीक अंदाज़ में आस्ट्रिड लिंडग्रेन ने कहा था : ''अपने अन्दर छिपे बच्चे को बहलाने के लिए मैं लिखती हूँ, और बस यही उम्मीद करती हूँ कि इसे पढ़नेवाले बच्चों को भी इसमें मज़ा आएगा।''

दुनियाभर में मशहूर अपनी प्रिय लेखिका के सम्मान में, स्वीडन की सरकार ने सन् 2002 ई० में 'अल्मा' (आस्ट्रिड लिंडग्रन मेमोरियल अवार्ड) पुरस्कार की शुरुआत की। यह सम्मान केवल बालसाहित्य के लेखक या ऐसी किसी संस्था, जो बच्चों की पढ़ने और किताबों में रुचि बढ़ाती है, को दिया जाता है। यह सम्मान महज़ एक कृति के लिए नहीं, वरन् बाल-साहित्य में लम्बे योगदान के लिए होता है। इसका उद्देश्य पूरे विश्व में बच्चों और नवयुवाओं के लिए साहित्य निर्माण में रुचि जगाना है। इस अवार्ड की राशि 50 लाख स्वीडिश क्रोनर (अंदाज़न 7 लाख अमरीकी डॉलर) है, और यह दुनिया का बाल और नवयुवाओं के लिए साहित्य का सबसे बड़ा पुरस्कार है।

प्रो० रमेशचन्द्र सारस्वत पूर्वांचल विश्वविद्यालय के कुलपति

तकनीकी शिक्षा के माने-जाने विशेषज्ञ प्रोफेसर रमेशचन्द्र सारस्वत ने नवम्बर बीतते-बीतते वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के कुलपति पद का कार्यभार सँभाल लिया। प्रो० सारस्वत मूल रूप से अलीगढ़ के निवासी हैं तथा 1992 से 94 तक लखनऊ आई०टी० प्रवेश समिति के चेयरमैन, 1999 से 2004 तक बुन्देलखण्ड इंजीनियरिंग कॉलेज और उसके बाद से अब तक इन्दौर आई०टी० के निदेशक जैसे गुरुतर पदों पर सफलतापूर्वक काम कर चुके हैं। कुलपति पद का भार ग्रहण करते हुए आपने एक स्वस्थ शैक्षणिक वातावरण की स्थापना, समय पर परीक्षाओं के संचालन तथा शोध के स्तर को ऊँचा उठाने जैसे कार्यों को अपनी प्राथमिकता सूची में अग्रगण्य बतलाया।

तसलीमा की छठी आत्मकथा

निर्वासित बंगलादेशी लेखिका तसलीमा नसरीन अपनी छठी आत्मकथात्मक किताब 'नेई किछु नेई (कुछ नहीं है)' लिख रही हैं। उन्होंने बताया कि जनवरी-फरवरी में होनेवाले कोलकाता बुक फेयर में 'नेई किछु नेई' का प्रकाशन हो सकता है।

असम में 'हिन्दी दिवस'

असम के पूर्वोत्तर स्थित मार्घेरिटा महाविद्यालय, जिला तिनसुकिया में 'हिन्दी दिवस' महाविद्यालय के अध्यक्ष डॉ० बुद्धिन गगै के सभापतित्व में मनाया गया। इस अवसर पर 'मार्कण्डेय पुरस्कार' से सम्मानित डिगबोई महिला महाविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० हरेराम पाठक मुख्य अतिथि थे। मार्घेरिटा महाविद्यालय की विभागाध्यक्ष डॉ० मृणाली कुँवर ने प्रयोजन की व्याख्या की तथा विभाग की डॉ० पुष्पा सिंह ने वक्तव्य प्रस्तुत किया।

ई-पुस्तकों की उपलब्धता व प्रासंगिकता

किताबों के लिए स्टोर दर स्टोर भटकने वाले लोगों के लिए खुशखबरी है। अमेरिका में कारनेगी मेलान युनिवर्सिटी के कम्प्यूटर विशेषज्ञों ने 15 लाख से अधिक पुस्तकों को इंटरनेट पर सुलभ बना दिया है। http://www.ulib.org/ नाम से इंटरनेट पर चल रहे इस विशाल पुस्तकालय से पाठक अपने घर बैठे कोई पुस्तक नि:शुल्क प्राप्त कर सकता है। फिलहाल यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी में मौजूद किताबों जितनी तादाद में मौजूद किताबों वाली इस ऑनलाइन लाइब्रेरी को घर बैठे हर वह शख्स खंगाल सकता है, जिसकी पहुँच इंटरनेट तक है। इस पुस्तकालय में बड़ी संख्या में चीनी भाषा की पुस्तकों के अलावा अंग्रेजी, तेलुगु और अरबी भाषा की पुस्तकें हैं और आगे भी अनेकानेक भाषाओं की पुस्तकें इसमें सम्मिलित होंगी। इस योजना का निर्देशन भारतीय मूल के प्रोफेसर राज रेड्डी ने किया है और वे भारतीय तथा चीनी लोगों द्वारा अपने-अपने देश में बैठकर की गई पुस्तकों की स्कैनिंग पर आधारित इस योजना को बहुत बड़ी उपलब्धि मानते हैं। लगभग 10 साल से विशेषज्ञ रोजाना हजारों किताबों को स्कैन करने का काम लगातार जारी रखे हुए हैं। इसके लिए जो भारी धनराशि खर्च हुई है, उसे देखते हुए यह उपलब्धि बहुत बड़ी है भी क्योंकि इस पर यू०एस० नेशनल साइंस फाउण्डेशन की साढ़े तीन मिलियन डालर की मदद के अलावा भारत, अमेरिका और चीन तीनों देशों ने दस-दस मिलियन डालर की धनराशि खर्च की है। निश्चय ही ज्ञान के संरक्षण की दृष्टि से यह बहुत बड़ा काम है किन्तु ज्ञान का यह महासागर किसकी प्यास बुझायेगा, यह एक विकट यक्ष प्रश्न है। विश्व की अधिकांश जनसंख्या जो आज भी उन पुस्तकालयों पर ही निर्भर हैं जिनको स्कैनिंग के प्रयास में अस्त-व्यस्त और ध्वस्त किया जा रहा है। संसार की सारी पुस्तकों को इंटरनेट पुस्तकालय में सम्मिलित कर लीजिये लेकिन पहले से दुर्दशाग्रस्त पुस्तकालयों को इस प्रयास में क्षति न पहुँचे इसके लिये भी योजना बनानी चाहिये।

ई-पत्रिका 'विश्वा'

अमेरिका से 'विश्वा' नाम की *ई-पत्रिका* अमेरिका में कार्यरत सुरेन्द्रनाथ तिवारी व अमरेन्द्र कुमार द्वारा सम्पादित होकर www.hindi.org नामक वेबसाइट पर उपलब्ध है। ई-मेल द्वारा इसका नि:शुल्क वितरण दुनियाभर में हो रहा है। इसका पहला अंक '**महादेवी वर्मा**' को समर्पित है।

के० वासुदेवन की जन्मशती अप्रैल में

केरल के तपोनिष्ठ हिन्दीसेवी एवं केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक-मंत्री स्वर्गीय के० वासुदेवन पिल्लै की जन्मशती तिरुअनंतपुरम में आगामी अप्रैल 2008 में समारोहपूर्वक मनायी जाएगी। यह जानकारी देते हुए के०जी० बालकृष्ण पिल्लै ने बताया कि देश की अनेक साहित्यिक संस्थाएँ अपने-अपने स्तर से भी स्व० के० वासुदेवन पिल्लै की जन्मशती मनाएँगी।

स्व० के० वासुदेवन पिल्लै (08.04.1908 से 25.07.1962) पहले मलयालमभाषी थे जिन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की साहित्यरत्न परीक्षा उत्तीर्ण की और सरकारी नौकरी त्यागकर पूरा जीवन हिन्दी-प्रचार अभियान में लगा दिया। सफल संगठक, प्रभावी अध्यापक, अनुवादक, कवि, लेखक, पत्रकार व रंगकर्मी आदि अनेक रूप में आपने हिन्दी की सेवा की और आपकी अभिलाषा थी कि केरल के घर-घर में हिन्दी भी बोली जाये।

डॉ० ओ०पी० सिंह यू०पी० कॉलेज के नये प्राचार्य

उदय प्रताप स्वायत्तशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी के काफी समय से रिक्त प्राचार्य पद पर पालीवाल पी०जी० कॉलेज, शिकोहाबाद में लम्बी अवधि तक इसी पद पर सफलतापूर्वक काम कर चुके डॉ० ओ०पी० सिंह की विधिवत नियुक्ति हो गई। उन्होंने विगत 26 नवम्बर को कार्यभार ग्रहण कर लिया। श्री सिंह मूलत: प्रतापगढ़ के निवासी हैं और शैक्षिक प्रशासन के अपने लम्बे अनुभव के आधार पर वे वाराणसी के इस गौरवपूर्ण शिक्षा केन्द्र को एक सुदृढ़ और सफल नेतृत्व प्रदान करेंगे, ऐसा विश्वास है।

पराड़कर जयन्ती सम्पन्न

वाराणसी। 16 नवम्बर 2007 को हिन्दी पत्रकारिता के शलाका पुरुष बाबूराव विष्णु पराड़कर की 124वीं जयन्ती काशी पत्रकार संघ द्वारा पत्रकार संघ के अध्यक्ष योगेश कुमार गुप्त की अध्यक्षता में स्थानीय पराड़कर स्मृति भवन में आयोजित की गई। 16 नवम्बर 1883 को जन्मे पराड़करजी ने पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्र और राष्ट्रभाषा की जो महनीय सेवा की वह एक अनुकरणीय आदर्श है। पराड़करजी के समय की पत्रकारिता राजनीति को संचालित करती थी किन्तु अब दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि राजनीति पत्रकारिता को संचालित करती है। यही नहीं उन्होंने अपने समाचारपत्र के माध्यम से हिन्दी भाषा के विकास का जो काम किया, उसकी महत्ता इसी बात से जानी जा सकती है कि उस समय बहुतेरे लोग पराड़करजी के 'आज' से अपना हिन्दी-ज्ञान सुदृढ़ बनाते थे।

मलखान सिंह आतंकियों से लड़ने को तैयार

लखनऊ। कानून की दुहाई देकर आखिर कब तक आतंकवादियों के इरादों को हम हवा देते रहेंगे? कल तक दुर्नाम बागी सरदार रहे और आज के दद्दा मलखान सिंह बढ़ती आतंकी वारदातों के कारण अत्यधिक उद्वेलित हैं। उन्हें मलाल है कि आतंकी अपने मंसूबों को अंजाम देकर निकल जाते हैं और अत्याधुनिक हथियारों से लैस पुलिस टापते रह जाती है। उन्होंने कहा कि जब चंबल के लोग आत्मसमर्पण कर सकते हैं तब क्या संसद में बैठे लोग भी कभी आत्मसमर्पण करेंगे?

उग्रवादियों को पकड़ने के बाद मुकदमा चलाने से कहीं बेहतर है कि उन्हें चौराहे पर खड़ा कर गोली मार दी जाए। इससे दूसरे आतंकियों को कुछ तो नसीहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि चम्बल में हमारा अतीत शानदार रहा है। सरकार कहे तो हम आतंकवादियों से भिड़ने को तैयार हैं। एक हजार से अधिक आत्मसमर्पण कर चुके लोग हमारे साथ हैं।

बेरोजगारों का सपना-भंग

पढ़े-लिखे बेरोजगार के लिए नौकरी का विज्ञापन किसी सुनहरे सपने से कम नहीं होता। विज्ञापन देखते ही वह अपना 'जीवनवृत्त' चमकाकर उसे निर्धारित जगह पर भेजता है और परीक्षा की तैयारी में जुट जाता है लेकिन अखबार के किसी कोने में छपा शुद्धिपत्र (कोरिगेंडम) उसकी उम्मीदों पर पानी फेर देता है। अक्सर होता है कि वह उस शुद्धिपत्र को देख ही नहीं पाता और जब तक देख पाता है तब तक उसकी 'बस छूट चुकी होती है।' सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा प्रकाशित 'इम्प्लायमेंट न्यूज' में भी आए दिन शुद्धिपत्र छपने से कई बेरोजगारों को निराशा हाथ लगती है। संशोधन एक सीमा में होना चाहिए लेकिन कभी-कभार तो यह सारी सीमाओं से बाहर चला जाता है।

अनोखी पहल

ऐसा अखबार जिसमें सभी 'बाल पत्रकार'

मध्यप्रदेश में एक स्वयंसेवी संस्था ने 'बच्चों की पहल' नामक त्रैमासिक अखबार शुरू किया है, खास बात यह है कि इस अखबार के सभी रिपोर्टर स्कूली बच्चे हैं। होशंगाबाद जिले की सोहागपुर तहसील में यूनीसेफ की पहल पर दलित संघ नामक स्थानीय स्वयंसेवी संस्था ने यह पहल की है। तीन कमरों वाले स्कूलों में जहाँ कक्षा एक से आठ तक की पढ़ाई होती है। वहाँ पढ़ने वाले इन बच्चों का उत्साह देखते ही बनता है। वे अपने परिचय कुछ इस अंदाज में देते हैं। ''मेरा नाम ज्योति है, मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ और दलित संघ की पत्रकार हूँ। या मैं शिवकुमार हूँ और मैं पत्रकार हूँ।'' इन परिचयों को किसी खेल या नाटक की रिहर्सल का हिस्सा समझने वाले आगंतुकों को वहाँ मौजूद शिक्षक और कभी खुद बच्चे बताते हैं कि वे वाकई पत्रकार हैं। हिन्दी में छपने वाले चार पन्ने के 'बच्चों की पहल' न्यूज लेटर के तीन अंक अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। यूनिसेफ की मध्यप्रदेश इकाई के प्रमुख हामिद अल बशीर कहते हैं कि यह प्रोजेक्ट समाज में बदलाव के लिए बच्चों की पहल है।

संस्था के प्रवक्ता अनिल गुलाटी के अनुसार यूनिसेफ ने इस न्यूज लेटर के लिए दलित संघ को खुद से इसीलिए जोड़ा क्योंकि संस्था एक ऐसे वर्ग के लिए काम कर रही है जो हमेशा सबसे पीछे की पंक्ति में खड़ा मिलता है। सम्पादक गोपाल नारायण आवटे का कहना है कि मौजूदा समाचार माध्यमों में आजकल गाँव से जुड़ी खबरें लगभग नगण्य हैं, खासतौर पर दलितों की रोजमर्रा की जिन्दगी से जुड़ी खबरें जिन्हें समाज के सामने लाने में इस न्यूज लेटर से मदद मिलेगी। आवटे कहते हैं कि पहले तो ग्रामीण दलितों के बीच से नियमित तौर पर खबरें भेजने के लिए पढ़े-लिखे लोगों की कमी थी और दूसरे वह भविष्य के लिए एक ऐसा वर्ग तैयार करना चाहता है जो अपनी बात निडरता से सत्तासीन लोगों के सामने कह सके।

क्या सच, क्या झूठ

भारतीयों का उत्पीड़न

मलेशिया में हिन्दुओं के उत्पीड़न की अनदेखी पर हैरत जताते राज्यसभा के पूर्व सदस्य श्री बलवीर पुंज कहते हैं—सात समंदर पार किसी व्यक्ति द्वारा पैगंबर साहब का अपमानजनक कार्टून बनाए जाने पर जिस भारत सरकार ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर इसकी निंदा की थी, जिस सत्ता अधिष्ठान ने संसद में बयान देकर उसकी भर्त्सना की थी, वह आज मलेशिया के करीब 20 लाख हिन्दुओं के उत्पीड़न पर खामोश क्यों है? यह खामोशी केवल मलेशिया, बांग्लादेश, पाकिस्तान और अन्य इस्लामी देशों में हिन्दुओं के उत्पीड़न से जुड़ी नहीं है, भारत में भी जहाँ कहीं भी हिन्दुओं का उत्पीड़न होता है, सेकुलर तंत्री और मानवाधिकारी संगठनों को कोई दर्द नहीं होता। जम्मू कश्मीर में 1989 ई० में कश्मीरी पण्डितों की आबादी साढ़े तीन लाख से अधिक थी। नब्बे के दशक से प्रारम्भ हुए जेहादी ताण्डव के बाद 2007 में घाटी में सिर्फ 3865 कश्मीरी पण्डित रह गए हैं। शेष अपने ही देश में विस्थापित जिन्दगी गुजार रहे हैं, लेकिन कोई उनके बारे में बोलना जरूरी नहीं समझता—वे भी नहीं जो हर समय सेकुलरिज्म और मानवाधिकारों की रट लगाए रहते हैं। गुजरात चुनाव के कारण गुजरात के दंगों के जख्म पुनः कुरेदने में जुटे मानवाधिकार समर्थक क्या कश्मीरी पण्डितों की व्यथा पर रोए? गुजरात दंगों में 790 मुसलमान और 254 हिन्दू मारे गए। गुजरात दंगा गोधरा संहार की प्रतिक्रिया में घटा था। साबरमती एक्सप्रेस में 59 हिन्दू कारसेवकों को 27 फरवरी, 2002 को जिन्दा जला डाला गया। इन हिन्दुओं के लिए कौन सामने आया? यह सही है कि इसकी दबी जुबान से निंदा तो हुई, किन्तु क्या यह सच नहीं कि इस घटना के लिए भुक्तभोगियों को ही कसूरवार ठहराया गया? विडम्बना यह है कि ऐसी घृणित मानसिकता वाले लोग खुद को सबसे बड़ा सेकुलर होने का दावा करते हैं।

—बलवीर पुंज

विदेश में भारत की छवि

बीबीसी के हिन्दी-प्रमुख श्री कैलाश बुधवार विदेश में भारत की छवि का चित्र प्रस्तुत करते हुए कहते हैं—हर दो वर्ष पर राष्ट्रमण्डल के 53 देशों के शासनाध्यक्षों का जो शिखर सम्मेलन होता है उसकी इस बार की बैठक युगांडा में हुई। युगांडा अफ्रीका का वही देश है जहाँ 1972 ई० में फौजी तानाशाह इदी अमीन ने पुश्तों से वहाँ बसे भारतवंशियों को निकाल फेंका था। 1947 ई० में स्वतंत्र भारत को ब्रिटिश कामनवेल्थ के डोमीनियन का पद मिला था। संविधान की स्थापना के साथ भारत का सार्वभौम सत्तासम्पन्न गणराज्य बनना सुनिश्चित था। उससे एक वर्ष पहले लन्दन में हुई बैठक में प्रधानमंत्री नेहरू से आग्रह किया गया कि भारत कामनवेल्थ का सदस्य बना रहे। तब ब्रिटिश कामनवेल्थ को राष्ट्रमण्डल का नया कलेवर मिला, इस अनुक्रम के साथ कि महारानी एलिजाबेथ राष्ट्रमण्डल की अध्यक्ष होंगी। उनके बाद राष्ट्रमण्डल का अध्यक्ष कौन हो, अभी यह तय होना बाकी है। अगली अप्रैल से चार वर्ष के लिए कमलेश शर्मा इसी संघ के महासचिव होंगे।

सम्मान-पुरस्कार

राष्ट्रपति द्वारा हिन्दी के विद्वान पुरस्कृत

राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने राष्ट्रपति भवन के अशोक हाल में आयोजित समारोह में हिन्दी भाषा के विकास एवं संवर्धन में उल्लेखनीय योगदान देने वाले विद्वानों को वर्ष 2005 और वर्ष 2006 के पुरस्कारों से गत 18 दिसम्बर 2007 को सम्मानित किया। *प्रचार-प्रसार एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य* के लिए वर्ष **2005** का **'गंगाशरण सिंह पुरस्कार' डॉ० आर० वेंकटकृष्णन**, **के.एम. सामुवल**, **फुराइलात्यम**, **गोकुलानंद शर्मा** और **एच. पहलीरा** (संयुक्त रूप से), **नवनीत आर. ठक्कर** और **सुतीक्ष्ण कुमार शर्मा** (संयुक्त रूप से) को प्रदान किया। वर्ष **2006** के इसी पुरस्कार से **प्रो० शेख मुहम्मद इकबाल**, **डॉ० टी.वी. कट्टीमनी**, **प्रो० इन्द्रनाथ चौधरी**, **शशिकांत**, **रघुनाथ जोशी** और **विलास सोलू सलंकर** (संयुक्त रूप से) को सम्मानित किया। *हिन्दी पत्रकारिता तथा रचनात्मक साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य* के लिए वर्ष **2005** के **'गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार'** से **भारत डोगरा** और **रमेश उपाध्याय** तथा वर्ष **2006** के इसी पुरस्कार से **शरददत्त** और **रमणिका गुप्ता** को विभूषित किया गया। *वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य और उपकरण विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य* के लिए वर्ष **2005** के **'आत्माराम पुरस्कार'** से **देवेन्द्र मेवाड़ी** और **डॉ० महेन्द्र मधुप** तथा वर्ष **2006** के इसी पुरस्कार से **डॉ० खड्ग सिंह वल्दिया**, **रेखा अग्रवाल** एवं **प्रदीप शर्मा** को संयुक्त रूप से सम्मानित किया गया। *हिन्दी के विकास से सम्बन्धित सृजनात्मक एवं आलोचनात्मक क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं* हेतु वर्ष **2005** के **'सुब्रहमण्यम भारती पुरस्कार'** से **मंजूर एहतेशाम** और **प्रो० कृष्णदत्त पालीवाल** तथा वर्ष **2006** के इसी पुरस्कार से **प्रो० कमला प्रसाद** और **सूरजपाल चौहान** को सम्मानित किया गया। *हिन्दी में खोज और अनुसन्धान करने तथा यात्रा विवरण* आदि के लिए वर्ष **2005** के लिए **'राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार'** से **भगवान सिंह** और **रमेशचन्द्र शाह** तथा वर्ष **2006** के इसी पुरस्कार से **डॉ० साधना सक्सेना** और **प्रो० शेखर पाठक** को विभूषित किया गया। *विदेशी हिन्दी विद्वान को विदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय कार्य* हेतु वर्ष **2005** के **'डॉ० जार्ज ग्रियर्सन पुरस्कार'** से **डॉ० इन्दिरा दसनायक** को और वर्ष **2006** के इसी पुरस्कार से *इटली* की **प्रो० मारिओला ओफ्रेदी** को सम्मानित किया गया। *भारतीय मूल के विद्वानों को विदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय कार्य* हेतु वर्ष **2005** के लिए **'पद्मभूषण डॉ० एम० सत्यनारायण पुरस्कार'** से **कृष्णकिशोर** और वर्ष **2006** के लिए **प्रेमलता शर्मा** को सम्मानित किया।

कथाकार अमरकांत को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार'

नई दिल्ली। *देर आये, दुरुस्त आये*। हिन्दी के वयोवद्ध लेखक एवं स्वतंत्रता सेनानी **अमरकांत** समेत भारतीय भाषाओं के 23 लेखकों को *साहित्य अकादमी के अध्यक्ष* **प्रो. गोपीचंद नारंग** की अध्यक्षता में अकादमी के कार्यकारी मंडल की बैठक में 26 दिसम्बर 2007 को वर्ष 2007 का **'साहित्य अकादमी पुरस्कार'** देने की घोषणा की गई है। ये पुरस्कार 1 जनवरी 2003 से 31 दिसम्बर 2005 के बीच प्रकाशित पुस्तकों पर दिये जायेंगे। इस वर्ष 6 लेखकों को उपन्यास, 6 कवियों को कविता संग्रह, 3 लेखकों को कहानी संग्रह और 2 लेखकों को आलोचना के लिये पुरस्कार दिये गये हैं। हिंदी की *चयन समिति के सदस्यों* **मंजूर एहतशाम**, **निर्मला जैन** और **प्रभा खेतान** ने उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के भगमलपुर गाँव में 1 जुलाई 1925 को जन्मे **अमरकांत** के उपन्यास 'इन्हीं हथियारों से' को अकादमी पुरस्कार के लिए श्रेष्ठ कृति घोषित किया। पुरस्कार में 50 हजार रुपये, ताम्रफलक और शाल शामिल है। *मैथिली* के **प्रदीप बिहारी** को 'सरोकार' (कहानी संग्रह), *उर्दू* के **वहाब अशर्फी** को 'तारीखे अदब ए उर्दू', *राजस्थानी* के **कुंदन माली** को 'री आंख सूं' (आलोचना), *पंजाबी* के **जसवंत दीद** को 'कमंडल' (कविता संग्रह), *डोगरी* के **ज्ञानसिंह पगोच** को 'महात्मा विदुर (महाकाव्य)', *उड़िया* के **दीपक मिश्र** को 'सुख संहिता' (कविता संग्रह), *संताली* के **खेरवाल सोरेन** को 'चेत रे चिकयेना' (नाटक), *असमिया* के **पूरबी बोरमुडाई** को 'शांतनुकुल-नंदन' (उपन्यास), *बंग्ला* के **समरेंद्र सेनगुप्त** को 'आमार समय अल्प' (कविता संग्रह) के लिए , अन्य भारतीय भाषाओं में *तेलुगू* के लिए **गडिया राम रामकृष्ण शर्मा** को मरणोपरांत, *मराठी* में **गोमापवार**, गुजराती में **राजेंद्र शुक्ल**, *कश्मीरी* में **रत्नलाल शांत**, *नेपाली* में **लक्ष्मण श्रीमल**, *सिंधी* में **वासुदेव निर्मल**, *कन्नड़* में **कुमारी वीरभद्रपा**, *कोंकणी* में **देवीदास कदम**, *मलयालम* में **ऐसेतु माधवन**, *मणिपुरी* में **दीएम नैसनम्बा**, *तमिल* में **नीलपदमानाभम**, *संस्कृत* में **हरिदत्त शर्मा** और *बोडो* में **जनिल कुमार ब्रह्म** को चुना गया है। ये पुरस्कार 20 फरवरी 2007 को राजधानी में आयोजित समारोह में दिये जायेंगे।

पंकज सिंह व कर्मेंदु शिशिर को 'शमशेर सम्मान'

2007 का **'शमशेर सम्मान'** *कविता* के लिए **पंकज सिंह** को और *सृजनात्मक गद्य* के लिए **कर्मेन्दु शिशिर** को आगामी 13 जनवरी 2008 को पटना में दिया जाएगा। **'शमशेर सम्मान'** के लिए रचनाकारों का चयन देशभर से प्राप्त अनुशंसाओं के आधार पर वरिष्ठ रचनाकारों की समिति करती है। इस बार चयन समिति के सदस्य *ज्ञानरंजन, विष्णु नागर* और *लीलाधर मंडलोई* थे।

पंकज सिंह रचनात्मक लेखन के साथ-साथ राजनीति, साहित्य, कला, संस्कृति पर लिखते रहे हैं। उनके दो कविता संग्रह 'आहटें आसपास' और 'जैसे पवन पानी' प्रकाशित हैं। उनकी कविताओं का कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। कर्मेन्दु शिशिर के दो उपन्यास और दो कहानी संग्रहों के अलावा कई आलोचना पुस्तकें भी प्रकाशित हैं।

प्रो० रेवाप्रसाद को 'रत्न सदस्यता' सम्मान

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में इमेरिटस प्रोफेसर **आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी** को उज्जैन में आयोजित अखिल भारतीय कालिदास समारोह में **'रत्न सदस्यता सम्मान'** से विभूषित किया गया। उत्कृष्ट शोध-पत्र के लिए विश्वविद्यालय के **सदाशिव कुमार द्विवेदी**, **डॉ० कौशलेन्द्र पाण्डेय** और आर्यमहिला डिग्री कालेज की **डॉ० चन्द्रकान्ता राय** को **'विक्रम कालिदास पुरस्कार'** प्रदान किया गया।

राजदीप को पुरस्कार

कोझीकोड। सीएनएन आईबीएन के मुख्य सम्पादक **राजदीप सरदेसाई** को पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान के लिए कालीकट प्रेस क्लब व सी०एच० मोहम्मद कोया जर्नलिज्म ट्रस्ट द्वारा संयुक्त रूप से दिए जानेवाले **'सी०एच० पत्रकारिता पुरस्कार'** (एक लाख 11 हजार नकद व पट्टिका) के लिए चुना गया है।

तरुण विजय पुरस्कृत

ग्वालियर। 'पाञ्चजन्य' के सम्पादक **तरुण विजय** को राजमाता विजयराजे सिंधिया की स्मृति में दिया जाने वाला **'राजमाता पत्रकारिता सम्मान'** प्रदान किया गया है।

डॉ० प्रदीप जैन को 'वरिष्ठ फेलोशिप'

मुजफ्फरनगर में 18 वर्षों तक साहित्यमनीषी आचार्य सीताराम चतुर्वेदी के सान्निध्य में साहित्य साधना करने वाले वैज्ञानिक, अधिवक्ता और साहित्यसेवी **डॉ० प्रदीप जैन** को कथा सम्राट प्रेमचंद की रचनाओं के काल-निर्धारण हेतु भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय की **'वरिष्ठ फेलोशिप'** प्रदान की गई है।

संजय द्विवेदी को माधवराव सप्रे सम्मान

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से प्रकाशित 'हरिभूमि' दैनिक के स्थानीय सम्पादक **संजय द्विवेदी** को पत्रकारवरेण्य **'माधवराव सप्रे स्मृति-सम्मान'** से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें पत्रकारिता क्षेत्र में योगदान एवं मीडियासम्बन्धी लेखन हेतु राष्ट्रीय पुस्तक मेले, रायपुर में रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलपति प्रो० लक्ष्मण चतुर्वेदी ने प्रदान किया।

'पंजाब रत्न' सम्मान

हिन्दी-लेखक **डॉ० अमर सिंह वधान** को जैमिनी अकादमी, पानीपत, हरियाणा द्वारा गत मास महादेवी वर्मा जन्मशताब्दी के अवसर पर '**पंजाब रत्न**' की उपाधि से सम्मानित किया गया। अकादमी के निदेशक डॉ० बीजेन्द्र कुमार जैमिनी ने डॉ० वधान द्वारा तमिल, तेलुगू, कन्नड़ और मलयालम साहित्य एवं संस्कृति, सिख धर्म और संस्कृति पर लिखी गई कृतियों के महत्त्व एवं उपयोगिता को विशेष रूप से रेखांकित किया।

हेमन्त-स्मृति-कविता सम्मान

कथाकार **ओमा शर्मा** व **उर्मिला शिरीष** को '**विजय वर्मा कथा सम्मान**' और **एकांत श्रीवास्तव** व **हरि मृदुल** को '**हेमंत स्मृति कविता सम्मान**' से सम्मानित किया जायेगा। हेमंत फाउण्डेशन की ओर से मुम्बई में आयोजित एक समारोह में दिये जानेवाले इन पुरस्कारों की घोषणा करते हुए ट्रस्ट की प्रबन्ध न्यासी कथा-लेखिका संतोष श्रीवास्तव ने कहा है कि 2006 का 'विजय वर्मा कथा-सम्मान' ओमा शर्मा को उनके कथा संग्रह 'भविष्यदृष्टा' व 2007 का सम्मान उर्मिला शिरीष को उनके संग्रह 'पुनरागमन' पर दिया जाएगा। वर्ष 2006 का 'हेमंत स्मृति कविता सम्मान' एकांत श्रीवास्तव को उनके कविता-संग्रह 'बीज से फूल तक' पर और 2007 का सम्मान हरि मृदुल को उनके संग्रह 'सफेदी में छुपा काला' के लिए दिया जाएगा।

जितेन्द्र श्रीवास्तव को सम्मान

कोलकाता। भारतीय भाषा परिषद ने इस वर्ष का '**हिन्दी युवा पुरस्कार (2007)**' **श्री जितेन्द्र श्रीवास्तव** को उनके काव्य-संकलन 'अनभै कथा' पर देने का निर्णय किया है।

नथमल केडिया का सम्मान

भारतेन्दु अकादमी द्वारा नागरी प्रचारिणी सभा में डॉ० जितेन्द्रनाथ मिश्र की अध्यक्षता में आयोजित साहित्यकारों की गोष्ठी में कोलकाता के वयोवृद्ध समाजसेवी तथा साहित्यकार श्री नथमल केडिया का अभिनन्दन किया गया। उनके साथ वाराणसी पधारीं कवयित्री मृदुला कोठारी का भी इस गोष्ठी में सम्मान किया गया।

अरुण प्रकाश को 'हरिशंकर परसाई पुरस्कार'

विगत 29 नवम्बर को मध्यप्रदेश के अत्यन्त साधारण व छोटे शहर हरदा में सतपुड़ा लोक संस्कृति परिषद द्वारा *प्रख्यात कथाकार* **अरुण प्रकाश** को '**हरिशंकर परसाई पुरस्कार**' तथा *प्रसिद्ध गज़लकार* एवं मध्य प्रदेश पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी **विजय वाते** को '**नागार्जुन पुरस्कार**' से सम्मानित किया गया।

केवलकृष्ण पाठक को 'भाषा-भूषण अलंकार'

संक्षिप्त आकार की साहित्यिक मासिक-पत्रिका 'रवीन्द्र ज्योति' का जीन्द, हरियाणा से नियमित प्रकाशन करने वाले सम्पादक **डॉ० केवलकृष्ण पाठक** को उनकी काव्यकृति 'पीड़ा मन की' पर उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जनपद की एक पंजीकृत संस्था 'सरिता लोकभारती संस्थान' ने वर्ष **2007** का '**भाषा-भूषण अलंकार**' प्रदान किया है।

डॉ० नमिता सिंह को 'साहित्यश्री सम्मान'

अलीगढ़। डॉ० राकेश गुप्त द्वारा अपनी जीवनसंगिनी स्व० श्रीमती तारावली गुप्त की स्मृति में दिया जाने वाला '**साहित्यश्री सम्मान**' इस वर्ष **डॉ० नमिता सिंह** को *साहित्य, समाज, शिक्षा जगत और पत्रकारिता* के क्षेत्र में उनकी उल्लेखनीय सेवाओं हेतु प्रदान किया गया। डॉ० गोपालबाबू शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न इस आयोजन में डॉ० राकेश गुप्त ने 5100 रुपये की राशि तथा 'साहित्यश्री सम्मान' का प्रमाण-पत्र भेंट कर डॉ० नमिता सिंह को सम्मानित किया। 'ग्रन्थायन' के व्यवस्थापक अभयकुमार गुप्त ने वाग्देवी प्रतिमा भेंट की और डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ ने शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

युवा कवि प्रेमचंद गाँधी को 'मंडलोई सम्मान'

हिन्दी के वरिष्ठ कवि लीलाधर मंडलोई द्वारा अपने पिता स्व० लक्ष्मणप्रसाद मंडलोई की स्मृति में स्थापित तथा प्रतिष्ठित पत्रिका 'प्रगतिशील वसुधा' द्वारा संयोजित '**मंडलोई स्मृति सम्मान**' के लिए इस वर्ष युवा कवि **प्रेमचंद गाँधी** चुने गये। निर्णायक समिति में सर्वश्री *चन्द्रकान्त देवताले, अरुण कमल* और *विष्णु नागर* सम्मिलित थे। श्री गाँधी को यह सम्मान नीलाभ प्रकाशन द्वारा प्रकाशित उनके काव्य संकलन 'इस सिम्फनी में' के लिए दिया गया। उल्लेख्य है कि यह सम्मान प्रतिवर्ष किसी युवा कवि को उसके पहले काव्य-संग्रह के लिये दिया जाता है।

साहित्यकार सम्मान समारोह

लखनऊ। साहित्य की सेवा करनेवाले विभिन्न विधा के सात युवा साहित्यकारों को '**युवा साहित्यकार सम्मान 2007**' से सम्मानित किया गया। भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा पं० प्रतापनारायण मिश्र की स्मृति में सरस्वती कुंज स्थित माधव सभागार में आयोजित सम्मान समारोह में काव्य, कथा-साहित्य, नाटक (रंगमंच), बाल-साहित्य, पत्रकारिता के अलावा संस्कृत तथा कोंकणी भाषा के साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। भोपाल के नाटककार **प्रिंस अभिशेख** '**अज्ञानी**' को 'नाटक विधा' के लिए, 'बाल-साहित्य विधा' के लिए जयपुर की लेखिका **सुश्री गीतिका गोयल** को, 'पत्रकारिता' के लिए हिन्दी साप्ताहिक 'सच का साया' के सह-सम्पादक **विकास मिश्र** को, संस्कृत भाषा में साहित्य सेवा के लिए हरिद्वार के **डॉ० निरंजन मिश्र** को, 'कोंकणी भाषा में साहित्य सृजन' के लिए तालिगाँव (गोवा) के साहित्यकार **प्रकाश पर्येंकर** को और लखनऊ के **श्री अखिलेश निगम** '**अखिल**' तथा **डॉ० अमिता दुबे** को भी सम्मानित किया गया।

सेवक स्मृति सम्मान 2007

साहित्यिक संघ, वाराणसी द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला '**सेवक स्मृति सम्मान**' इस वर्ष 16 दिसम्बर 2007 को संस्था के 15वें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर खड़ी बोली और भोजपुरी के प्रतिष्ठित गीतकार **श्री रामप्रवेश तिवारी** तथा दो कथा लेखिकाओं **डॉ० मुक्ता** और **डॉ० नीरजा माधव** को प्रदान किया गया। भाषाविद प्रो० बदरीनाथ कपूर की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में कथाकार मनु शर्मा, संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान प्रो० शिवजी उपाध्याय, समीक्षक डॉ० विश्वनाथ प्रसाद, गीतकार पं० श्रीकृष्ण तिवारी, वयोवृद्ध साहित्यकार डॉ० श्यामलाकांत वर्मा और पं० धर्मशील चतुर्वेदी सहित गणमान्य विद्वान और रचनाकार उपस्थित थे। ज्ञातव्य है कि सन् 1940 में साहित्यिक संघ के संस्थापक सदस्य तथा एकांतनिष्ठ कवि पं० पारसनाथ मिश्र 'सेवक' की स्मृति में यह सम्मान कवि ठाकुरप्रसाद सिंह ने 10 जनवरी 1993 ई० को प्रस्तावित किया था।

केदार सम्मान हेतु आमन्त्रण (नामांकन)

केदार शोधपीठ (न्यास), बाँदा के सचिव श्री नरेन्द्र पुण्डरीक ने कहा है कि समकालीन हिन्दी कविता के विशिष्ट सम्मान '**केदार सम्मान**' वर्ष 2007 के लिए प्रकाशकों, रचनाकारों और उनके शुभचिन्तकों से 2005 से 2007 तक के मध्य प्रकाशित काव्य-संकलन दो प्रतियों में आमंत्रित किए जाते हैं। काव्य-संकलन भेजते हुए इस बात का ध्यान दें कि उन्हीं कविता-संकलनों पर विचार किया जाएगा जो ''जनकवि केदारनाथ अग्रवाल की परम्परा में प्रकृति एवं मानव-मन के जुड़ावों के साथ आदमी के श्रम एवं संघर्षों में वैज्ञानिक चेतना के हिमायती हो''। इस सम्मान हेतु 1960 के बाद जन्मे रचनाकार के 2005 से 2007 के मध्य प्रकाशित कविता-संकलन पर ही विचार किया जाएगा।

संगोष्ठी/लोकार्पण

द्विवेदी जन्मशताब्दी

पिछले दिनों *साहित्य अकादमी, नई दिल्ली* के सौजन्य से पूर्वांचल के श्री रामानंद सरस्वती पुस्तकालय, जोकहरा (आजमगढ़) में **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जन्मशताब्दी** के अवसर पर **दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी** आयोजित की गई। शुभारम्भ सत्र में बीज वक्तव्य देते हुए **प्रो० राजेन्द्र कुमार** ने कहा कि मैं इलाहाबाद से कोई बीज लेकर नहीं आया हूँ। दूसरी परम्परा की खोज और हजारीप्रसाद द्विवेदी पर चर्चा करते हुए द्विवेदीजी और परम्परा पर बहस होनी चाहिए। परम्परा एक प्रवाह है जो कुछ जोड़ता भी है और कुछ तोड़ता भी है। कवि **नीलाभ** ने कहा कि परम्परा द्वन्द्व के बीच से उभरती है जिसके लिए इतिहासबोध जरूरी है। आलोचक **डॉ० परमानंद श्रीवास्तव** का मानना था कि द्विवेदीजी लघुता में विशालता की तलाश करते हुए हजार वर्ष की प्रतिरोधी परम्परा को स्थापित करते हैं। कबीर के प्रेम और विद्रोह के स्वर को उन्होंने करीब से महसूस किया था। सभाध्यक्ष **प्रो० विजेन्द्रनारायण सिंह** ने कहा कि राजेन्द्रकुमार के बीज वक्तव्य में नामवर निषेध और श्रीप्रकाश शुक्ल द्वारा निषेध का निषेध वाद-विवाद संवाद को सार्थक मोड़ पर पहुँचाता है।

दूसरे दिन का विषय था 'इतिहास कल्पना और उपन्यास'। **भारत भारद्वाज** ने कहा कि दूसरी परम्परा की खोज में कई परम्पराएँ मौजूद हैं, जिनके परिप्रेक्ष्य में हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों को देखा जाना चाहिए। अपने उपन्यास 'पुनर्नवा' में द्विवेदीजी ने बार-बार नव्यता की पुनर्स्थापना के लिए इतिहास के भीतर से कल्पना को सृजित किया है। यही रचना-प्रक्रिया 'बाणभट्ट की आत्मकथा' और 'अनामदास के पोथा' में भी मौजूद है। कथाकार **विभूतिनारायण राय** ने कहा कि जिस प्रकार राही मासूम रजा महाभारत की पटकथा संवाद में समय को नायकत्व प्रदान करते हैं, वैसे ही द्विवेदीजी अपने उपन्यासों में इतिहास की छौंक से दूसरी परम्परा की तलाश करते हैं। कवि **श्याम कश्यप** ने कहा कि दूसरी परम्परा में आगे की तैयारियों के लिए इतिहास से ऊर्जा ग्रहण की जाती है। यह ऊर्जा हमें द्विवेदीजी के उपन्यासों से हासिल होती है। चर्चित कवि **उपेन्द्र कुमार** ने कहा—महाकाव्य हैं हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यास।

समापन-सत्र का विषय था 'व्यक्तिव्यंजक निबन्ध और हजारीप्रसाद द्विवेदी'। कथाकार **से०रा० यात्री** ने कहा कि हिन्दी निबन्ध-विधा में कोई ऐसा रचनाकार नहीं है जो द्विवेदीजी के लालित्य की धारा को आगे बढ़ा सके। **जंगबहादुर पाण्डेय** ने द्विवेदीजी के निबन्धों में सौन्दर्य और लालित्य की बुनियाद पर मनुष्यता की तलाश की अनुगूँज को रेखांकित किया। **कृष्णकुमार सिंह** की दृष्टि में द्विवेदीजी अपने निबन्धों में हमेशा चेतना की तलाश करते हैं। हवा के दबाव से पाँव उखड़ न जाए, इसको दृष्टि में रखते हुए द्विवेदीजी खिड़की-दरवाजे खुले रखते हैं।

इस संगोष्ठी में डॉ० दिनेश कुशवाहा, शिवकुमार पराग, श्रीप्रकाश मिश्र, विवेक निराला, दीपक त्यागी, वाचस्पति, गया सिंह, पंकज गौतम और प्रकाश त्रिपाठी ने भी भागीदारी की।

कथा संगमन

धनतंत्र के जाल में जनतंत्र विकृत

नैनीताल। महादेवी वर्मा सृजन पीठ, कुमाऊँ विश्वविद्यालय और 'संगमन' कानपुर के संयुक्त तत्वावधान में नैनीताल तथा रामगढ़ में **हिन्दी के मुख्यधारा के कथाकारों का तीन दिवसीय सम्मेलन** आयोजित किया गया। '**आजादी का स्वप्न और मैला आँचल का यथार्थ**' विषय पर सम्मेलन के प्रथम सत्र में वरिष्ठ कथाकार **असगर वजाहत** ने कहा कि आजादी के तुरन्त बाद ही गाँधी के सपने धराशायी होने लगे थे।

नैनीताल में आयोजित 'संगमन' में जुटे कथाकार

फणीश्वरनाथ रेणु इसके प्रत्यक्ष गवाह थे। रेणु का उपन्यास 'मैला आँचल' तत्कालीन भारतीय नेतृत्व के मानस की खण्डित तस्वीर प्रस्तुत करता है।

आलोचक **वीरेन्द्र यादव** ने कहा कि 'मैला आँचल' में किसान, दलित, महिलाओं की पीड़ा को बखूबी रेखांकित किया गया है। यह कृति धनतंत्र के जाल में जनतंत्र के विकृत होने को भी प्रदर्शित करती है। रेणु ने जिस तरह अधूरी आजादी को समाज के सामने रखा है, वह आज भी समीचीन है। उन्होंने कहा कि जब भारत के किसान आत्महत्या कर रहे हों, ऐसे समय में रेणु के पात्र कालीचरण की बात '*यह आजादी झूठी है, देश की जनता भूखी है*' याद आती है। आलोचक **प्रेमकुमार मणि** ने परिचर्चा में आधार वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि रेणु की रचना गाँधी की हत्या को केन्द्र में रखते हुए स्वाधीनता संग्राम के आदर्शवाद भंग होने की कथा है। रेणु ने उपन्यास में स्वाधीनता आन्दोलन की असफलता व अधूरेपन के लिए बुर्जुआ नेतृत्व की घुसपैठ को जिम्मेदार ठहराया। भारत के आजाद होने से भारत के गणतंत्र बनने के बीच रचे गए रेणु के उपन्यास में ग्रामीण भारत का यथार्थ वर्णन है।

मैत्रेयी पुष्पा ने 'मैला आँचल' में महिला पात्रों की भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि उस दौर में आजादी की जरूरत पुरुषों से ज्यादा महिलाओं को थी। रेणु ने महिलाओं की पीड़ा को बखूबी समाज के सामने रखा। पत्रकार **राजीव लोचन साह** ने नवीन जोशी के उपन्यास 'दावानल' व त्रेपन सिंह चौहान के उपन्यास 'यमुना' को रेणु के आंचलिक उपन्यास की स्थानीय कड़ी बताया। इससे पूर्व सृजनपीठ के निदेशक **बटरोही** ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने पीठ की स्मारिका 'महादेवी की याद' प्रस्तुत की।

दूसरे सत्र में कथाकार **शशिभूषण** ने अपनी कहानी 'आँच तो आयी होगी', **मनोज कुमार पाण्डेय** ने 'शहतूत' और **प्रेमरंजन अनिमेष** ने 'लड़की जिसे रोना नहीं आता था' का पाठ किया। तीसरे सत्र में उपस्थित कथाकारों एवं समीक्षकों ने उक्त तीनों कहानियों पर अपनी प्रतिक्रिया दी। आलोचकों ने कहा कि लेखकों को पाठकों की रुचि व आवश्यकता को ध्यान में रखकर लेखन करना चाहिए।

समापन-सत्र में '**कहानी का समाज और समाज की कहानी**' विषय पर परिसंवाद आयोजित किया गया। कथा-समीक्षक **योगेन्द्र आहूजा** ने कहा कि हिन्दी कहानी में पिछला दशक भयंकर उथल-पुथल भरा रहा है। कहानी में कथ्य व शिल्प के स्तर पर असंख्य प्रयोग हुए हैं तथा अनगिनत बदलाव दर्ज हुए हैं। पिछले वर्षों में लिखी गई अधिकांश कहानियाँ, निराशा, पलायन व भटकाव की कहानियाँ हैं जबकि इन्हीं वर्षों में एक लाख से अधिक किसानों ने आत्महत्याएँ की हैं। विदेशी पूँजी की बहुतायतवाली बाजार व्यवस्था समाज के परम्परागत ढाँचे को छिन्न-भिन्न कर रही है। इससे उत्पन्न भ्रम की स्थिति के बीच जनता को कोई विकल्प नहीं दिख रहा है। कथाकार **कपिलेश भोज** ने नए रचनाकारों को अपनी मध्यवर्गीय सोच से बाहर निकलने की जरूरत बताई। **देवेन्द्र** ने कहा कि आज की कहानियाँ मध्यवर्ग की कुंठाओं से ग्रस्त हैं। **उमा भट्ट** का कहना था कि पुरुष अपनी राय को ब्रह्म वाक्य मानते हैं। महिलाओं को लेखन के क्षेत्र में भी जनतांत्रिक वातावरण उपलब्ध नहीं है।

द्विवेदीजी हिन्दी-साहित्य के व्यास

साहित्यिक संस्था 'सरोकार' की ओर से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित भारत कला भवन में **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जन्म-शताब्दी** के सन्दर्भ में 'परम्परा और प्रकृति' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ० श्रीप्रकाश शुक्ल द्वारा सम्पादित पत्रिका 'परिचय' के द्विवेदीजी पर केन्द्रित विशेषांक का लोकार्पण भी हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि **प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी** ने कहा कि आचार्य द्विवेदी के साहित्य की आत्मा भारतीय है। उन्होंने भारतीय संस्कृति की रक्षा का सवाल उठाते हुए परम्परा के क्रियाशील तत्वों को रेखांकित किया। द्विवेदीजी सचमुच व्यास थे। द्विवेदीजी के यहाँ परम्परा बन्धन न होकर उन्मुक्तता है जिसमें मनुष्य मुक्ति की प्रबल आकांक्षा जुड़ी हुई है। **प्रो० बच्चन सिंह** के अनुसार आचार्यजी ने 'कागद लेखी' की जगह 'आँखन देखी' पर बल देते हुए परम्परा, आधुनिकता और लोकधर्म का समन्वय किया। काशी आकर उन्होंने परम्परा को नया आयाम दिया तथा कबीर और निराला को विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में लाकर संघर्षप्रवण परम्परा का भी सूत्रपात किया। द्विवेदीजी के फक्कड़पन को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि वे किसी साँचे में ढले साहित्य को स्वीकार नहीं करते तथा अपने उपन्यासों में वे बार-बार बने-बनाए फ्रेम को अतिक्रमित करते हैं जिसका उदाहरण 'चारुचन्द्रलेख' और 'बाणभट्ट की आत्मकथा' है।

हिन्दी विभाग के अध्यक्ष **प्रो० कुमार पंकज** ने कहा कि आचार्य द्विवेदीजी के यहाँ परम्परा का पालन और खण्डन दोनों है। उन्होंने कहा कि द्विवेदीजी का भाषण अंगीठी की आँच की तरह शुरू होकर तप्त कोयले की भाँति समाप्त होता था। द्विवेदीजी मूलत: आलोचक नहीं सर्जक हैं।

काशी में रहीम जयन्ती समारोह सम्पन्न

गत 17 दिसम्बर को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विद्या-धर्म-विज्ञान संकाय में अखिल भारतीय मुस्लिम-संस्कृत संरक्षण एवं प्राच्य शोध संस्थान द्वारा रहीम जयन्ती समारोह का आयोजन भव्य रूप में किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि **प्रो० भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री'** ने कहा कि संकर संस्कृत में लिखा ललित विस्तार रहीम की भाषा में भी झलकता है। दरअसल रहीम को यह भाषा विरासत में मिली थी। अरबेजान की भाषा 'अवेस्ता' में 70 प्रतिशत वैदिक संस्कृत है। रहीम के पूर्वज इसी स्थान से आये थे।

इस समारोह में प्रताप कुमार मिश्र की पुस्तक 'खानखाना अब्दुर्रहीम और संस्कृत' व रुद्रकवि कृत 'नवाबखानखाना चरितम्' का लोकार्पण करते हुए वरिष्ठ कलाविद् **डॉ० भानुशंकर मेहता** ने कहा कि ''रहीम ने हिन्दी और फारसी के साथ संस्कृत साहित्य में भी अपूर्व योगदान दिया है।'' विशिष्ट अतिथि के रूप में कथाकार **डॉ० मनु शर्मा** ने कहा कि—''रहीम हिन्दू संस्कृति के प्रतीक हैं।'' इस महत्त्वपूर्ण आयोजन में डॉ० डी०पी० शर्मा, प्रो० शमीम अख्तर, प्रो० गंगाधर राय, डॉ० अवधेश प्रधान, डॉ० शितिकंठ मिश्र, डॉ० शरदिन्दु कुमार त्रिपाठी, डॉ० शुचिस्मिता पाण्डेय, डॉ० सत्यप्रकाश पाठक आदि ने भी विचार व्यक्त किया।

समालोचना का स्वरूप आतंककारी न हो

काशी नागरी प्रचारिणी सभा में डॉ० उदयप्रताप सिंह की पुस्तक 'आलोचना की अपनी परम्परा' तथा हैदराबाद के डॉ० फौजदार सिंह की काव्य-पुस्तक 'अभिसरिका' का लोकार्पण करते हुए **स्वामी रामनरेशाचार्य** ने कहा कि परम्परा की आलोचना करना बहुत आसान है, किन्तु इसके प्रतिष्ठापकों की साधना, तपश्चर्या और लोकनिष्ठा का शतांश अर्जित करना आज के विद्वानों के लिए अकल्पनीय है। उन्होंने कहा कि समालोचना का स्वरूप आतंककारी नहीं होना चाहिए। वस्तु को अधिक से अधिक सुन्दर स्वरूप में भावित करनेवाली विधा का नाम समालोचना है। डॉ० जितेन्द्रनाथ मिश्र ने कहा कि आलोचना हो या साहित्य या वाङ्मय की कोई दूसरी विधा हो, वह अपनी परम्परा के सन्दर्भ में ही सार्थक और ग्राह्य होती है।

साहित्य लोकमंगलकारी

समाज को सुधारने का काम साहित्य करता है। उसका सरोकार मनुष्य और मनुष्यता से है। शिक्षा के लक्ष्यों की पूर्ति साहित्य ही करता है। वाराणसी के डीएवी डिग्री कालेज के अंग्रेजी विभाग में आयोजित साहित्य और समीक्षा विषयक गोष्ठी में महिला महाविद्यालय की **प्रो० मीना सोढ़ी** ने यह बात कही। साहित्य समय-समय पर बदलता रहा है, लेकिन इसका महत्व कभी कम नहीं हुआ। इसने समाज को दिशा दी है। प्लेटो, अरस्तू, लांजाइनस जैसे व्यक्तियों के उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि साहित्य लोकमंगल का काम करता रहा है। समीक्षा का कार्य केवल साहित्य की अच्छाई-बुराई बताना नहीं, अपितु इसके मर्म को उद्घाटित करना भी है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ० जितेन्द्रनाथ मिश्र ने कहा कि साहित्य के बिना शिक्षा अधूरी है। अंग्रेजी विभाग की अध्यक्ष डॉ० संगीता जैन ने कहा कि साहित्य समाज का दर्पण होता है।

सिद्धान्त शिखामणि लोकार्पित

जंगमबाड़ी मठ के पीठाधीश्वर श्री चन्द्रशेखर शिवाचार्य की षष्ठिपूर्ति के सन्दर्भ में आयोजित बहुदिवसीय समारोह के अन्तर्गत 27 नवम्बर 2007 को डॉ० एम० शिवकुमार स्वामी द्वारा अंग्रेजी भाषा में लिखित 'सिद्धान्त शिखामणि' शीर्षक महत्त्वपूर्ण दार्शनिक ग्रन्थ का लोकार्पण किया गया। ग्रन्थ लोकार्पित करते हुए स्वामीजी ने कहा कि यह निगमागम तथा द्वैताद्वैत का समन्वयात्मक ग्रन्थ है जिसमें अष्टावरण, पंचाचार एवं षट्स्थल आदि विषयों का सूक्ष्म विवेचन किया गया है। इस अवसर पर एकत्रित धर्माचार्यों, विद्वानों तथा भक्तों का स्वागत बसव समिति बंगलुरु के अध्यक्ष श्री अरविन्द जत्ती ने किया।

कालिदास ग्रन्थावली का लोकार्पण

मनीषी विद्वान आचार्य सीताराम चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित और पहली बार अखिल भारतीय विक्रम परिषद द्वारा 5-6 दशक पहले प्रकाशित कालिदास ग्रन्थावली के पुन: प्रकाशित संस्करण का लोकार्पण भी जंगमबाड़ी मठ में आयोजित धार्मिक समारोह के दूसरे दिन आचार्य चन्द्रशेखर शिवाचार्य सरस्वती द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पं० धर्मशील चतुर्वेदी, श्री जगन्नाथ शास्त्री तैलंग और श्री विनोदराव पाठक ने ग्रन्थावली की विशिष्टताओं का आख्यान किया।

'काशी कभी न छोड़िये' लोकार्पित

भाषाविद्, बाल साहित्यकार, कवि और समीक्षक के रूप में सुख्यात काशी के वयोवृद्ध साहित्यकार डॉ० श्यामलाकान्त वर्मा की आत्मकथात्मक औपन्यासिक कृति 'काशी कभी न छोड़िये' का लोकार्पण साहित्यिक संघ, वाराणसी के 15वें वार्षिक अधिवेशन में वेदविद्या के पारंगत विद्वान पं० भोलानाथ उपाध्याय ने किया। इस अवसर पर कथाकार श्री मनु शर्मा, प्रो० शिवजी उपाध्याय, डॉ० विश्वनाथ प्रसाद, गीतकार पं० श्रीकृष्ण तिवारी, डॉ० नीरजा माधव, डॉ० मुक्ता और पं० धर्मशील चतुर्वेदी सहित रचनाकार और विद्वान बड़ी संख्या में उपस्थित थे। आयोजन की अध्यक्षता प्रो० बदरीनाथ कपूर ने की।

'ई' पत्रिका 'गवाक्ष' का प्रकाशन

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के योगसाधना केन्द्र में कुलपति डॉ० अशोककुमार कालिया की अध्यक्षता में दिनांक 30 नवम्बर 2007 को आयोजित एक समारोह में 'ई' पत्रिका 'गवाक्ष' का लोकार्पण कथाकार प्रो० काशीनाथ सिंह ने किया। इण्टरनेट के अभ्यासी थोड़े से आधुनितम संस्कार वाले पाठकों को छोड़ कर जनसामान्य के लिए 'ई' पत्रिका एक बिल्कुल नयी चीज है। इसका आनलाइन लोकार्पण करते हुए डॉ० सिंह ने कहा कि इस कम्प्यूटर शिशु का हिन्दी समाज को स्वागत करना चाहिए लेकिन इसके साथ-साथ यह भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि इसे जनसामान्य के लिए उपयोगी कैसे बनाया जाय। अपनी परम्परा निष्ठा के लिए विख्यात सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से इस आधुनिकतम विधा की वाराणसी में शुरुआत अपने आप में प्रशंसनीय है।

कृष्णकुमार बिरला की पुस्तक का लोकार्पण

10 दिसम्बर को नई दिल्ली में डॉ० कृष्ण कुमार बिरला की नवलिखित पुस्तक 'ब्रशेस विद हिस्ट्री : एन ऑटोबायग्रैफी' का लोकार्पण करते हुए प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह ने कहा कि डॉ० बिरला की देशभक्ति, राष्ट्रवाद और भारत के प्रति समर्पण का मैं कायल हूँ। देश की तरक्की के अनेक दौर आए हैं, जिनमें बिरला-परिवार ने सृजनात्मक योगदान किया है। डॉ० बिरला तीन कार्यकाल सांसद रहे और उन्होंने देश की आर्थिक प्रगति और औद्योगीकरण की प्रक्रिया में विशिष्ट योगदान दिया है। अब उनकी योग्य पुत्री श्रीमती शोभना भरतिया उस परम्परा को आगे बढ़ा रही हैं। डॉ० बिरला की इस पुस्तक की प्रस्तावना श्रीमती सोनिया गाँधी ने लिखी है। प्रधानमंत्री-निवास पर हुए कार्यक्रम में श्रीमती सोनिया गाँधी विशिष्ट अतिथि थीं।

'समय के समर में' लोकार्पित

वल्लभ विद्यानगर, गुजरात। जगन्नाथ पण्डित के कविता-संग्रह 'समय के समर में' का लोकार्पण आलोचक प्रो० शिवकुमार मिश्र ने किया। उन्होंने पुस्तक की विशिष्टताओं को रेखांकित करते हुए लेखक की रचनाशीलता की प्रशंसा की तथा उन्हें उभरते प्रगतिशील कवि एवं आलोचक के रूप में स्थापित किया।

समकालीन हिन्दी साहित्य

वल्लभ विद्यानगर, गुजरात। नलिनी अरविन्द एण्ड टी०वी० पटेल आर्ट्स कॉलेज तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी 'समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध परिप्रेक्ष्य' का समारम्भ करते हुए प्राचार्य आर०पी० पटेल ने समकालीन हिन्दी साहित्य की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि कालजयी एवं समकालीन साहित्य के औचित्य को वैज्ञानिक स्तर पर तराशें। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उप-सचिव डॉ० श्रीनिवास ने कहा कि शोध एवं खोज के माध्यम की जो भाषा होगी वही जीवंत रहेगी। इसलिए आनेवाले समय में हिन्दी ही नहीं, विश्व की तमाम भाषाओं के समक्ष चुनौती है। परिसंवाद के विषय-विशेषज्ञ एवं प्रतिभागियों को इस चुनौती का जवाब हिन्दी भाषा और साहित्य के माध्यम से देना होगा।

कविता रंग-व्यवहार

समकालीन हिन्दी कविता रायपुर (छत्तीसगढ़) के दृश्य-पटल पर दो वर्षों से वैचारिक और सांस्कृतिक उपस्थिति का परिदृश्य बिखेर रही है। 'कविता रंग-व्यवहार' शीर्षक के अन्तर्गत अब तक 81 कविताएँ अपने अर्थ, ध्वन्यार्थ, लय, प्रतीक और बिम्ब को संप्रेषित करते प्रेक्षकों के सम्मुख 'कौतुक' नाट्य संस्था ने मंचस्थ की हैं।

लब्धकीर्ति कवि जयशंकर प्रसाद, नागार्जुन, धूमिल, भवानीप्रसाद मिश्र, रघुवीर सहाय, कुँवरनारायण, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, केदारनाथ सिंह, चन्द्रकांत देवताले, श्रीकांत वर्मा, अशोक वाजपेयी, विष्णु खरे, राजेश जोशी, ज्ञानेन्द्रपति की कविताएँ राजकमल नायक के निर्देशन में निबद्ध प्रस्तुत की गईं। निर्देशक के अनुसार कविता-रंगमंच दुरूह, जटिल और चुनौतीपूर्ण कार्य है। कविता की गहरी समझ, अध्ययन, मनन, काव्य-दृष्टि, रंगदृष्टि, कल्पनाशीलता और विवेकपूर्ण श्रम के बल पर ही कविताएँ प्रस्तुत की जा सकती हैं। कविता चयन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। हिन्दुस्तान में पहली बार आधुनिक हिन्दी कविताएँ, छत्तीसगढ़ी बोली में, अनूदित कर प्रस्तुत की गई हैं।

एक ही कवि की कविताओं की शृंखला तथा अनेक कवियों की कविता-शृंखला, शीर्षकों तथा कवि पर टिप्पणियों सहित प्रदर्शित की गई हैं। अभिनय, संगीत, कोरस, वाचिक प्रयोग, ध्वनि-प्रभावों आदि का उपयोग कविता-शृंखला को विरल बनाने में अहम भूमिका निभाता रहा है।

पूर्वोत्तर की भाषा, साहित्य और हिन्दी

विगत दिनों केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली और हिन्दी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग के संयुक्त प्रयास से दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई। विषय था— 'पूर्वोत्तर की भाषा, साहित्य और हिन्दी'।

समारम्भ-सत्र में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ० दिनेशकुमार चौबे ने विद्वानों का स्वागत किया। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के सहायक अनुसंधान अधिकारी श्री अशोककुमार ने दो दिनों के कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। कुलपति प्रो० प्रमोद टण्डन ने पूर्वोत्तर के भाषा-वैविध्य को भाषाई अनुसंधान की प्रयोगशाला करार दिया। प्रो० कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध' ने पूर्वोत्तर की प्रान्तीय भाषाओं जैसे काकबरक, बोडो, त्रिपुरी, कछारी, मणिपुरी इत्यादि के बारे में बारीक और गहन तथ्यात्मक जानकारियाँ दीं। 'त्रिपुरी' भाषा आज खतरे में है। इसके प्रति उन्होंने श्रोताओं को आगाह भी किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता आलोचक एवं पत्रकार श्री भारत भारद्वाज ने की। इस सत्र में नेपाली भाषा के साहित्यकार विक्रमवीर थापा ने पूर्वोत्तर में नेपाली भाषा एवं साहित्य के विकास एवं स्थिति को विस्तारपूर्वक रेखांकित किया। मेघालय की ओर से साहित्य अकादेमी के सदस्य डॉ० एस० लमारे ने 'मेघालय के ग्रामीण क्षेत्रों में हिन्दी की स्थिति' पर प्रकाश डाला। त्रिपुरा विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की प्रवक्ता मिलन रानी जमातिया ने काकबरक भाषा और साहित्य के साथ हिन्दी के सम्बन्ध पर श्रोताओं का ध्यान आकृष्ट किया। द्वितीय सत्र में रवीन्द्र सिंह ने 'मणिपुरी भाषा एवं साहित्य', देवशंकर घोष ने 'पूर्वोत्तर के परिप्रेक्ष्य में बंगला और हिन्दी', एनसीईआरटी के क्षेत्रीय कार्यालय में सेवारत प्रो० अवधेशकुमार मिश्र ने पूर्वोत्तर की भाषाओं की व्याकरणिक विशेषताओं एवं कमजोरियों पर दृष्टिपात किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध' ने की। इसमें भारत भारद्वाज ने 'पूर्वोत्तर का भाषाई परिदृश्य' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। आपने पूर्वोत्तर में लोकगीतों के विकास की विस्मयकारी सम्भावना का भी संकेत दिया। गुवाहाटी में स्थित 'असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' में सेवारत क्षीरदा सैकिया ने पूरे विस्तार के साथ असम के विविध क्षेत्रों में हिन्दी की स्थिति पर प्रकाश डाला और कहा कि असम में लोगों के भीतर हिन्दी सीखने की ललक है और वहाँ पूरी आबादी के लगभग 50 प्रतिशत लोग हिन्दी जानते, समझते और लिखते हैं। दूसरे सत्र में डॉ० सुरेश उपाध्याय 'भारत की सामाजिक संस्कृति और हिन्दी' और श्री हरिनारायण त्रिवेदी ने 'पूर्वोत्तर में हिन्दी शिक्षण' विषय पर कहा कि आज भी कार्यालयी हिन्दी दोयम दर्जे की है। अब हिन्दी को रोजगारपरक बनाने की विशेष आवश्यकता है।

कार्यक्रम के समापन-सत्र में विश्वविद्यालय के प्रो० वर्जीनियस खाखा, श्री अशोककुमार और डॉ० दिनेशकुमार चौबे ने अपने परिपत्र प्रस्तुत किए। अनुसूचित जनजाति (पूर्वोत्तर) के सन्दर्भ में हिन्दी विभाग (नेहू) के भरतप्रसाद ने सभी वक्ताओं द्वारा दिए गए व्याख्यानों की संक्षिप्त विश्लेषणात्मक जानकारी प्रस्तुत की। इस दो दिवसीय संगोष्ठी का संचालन डॉ० माधवेन्द्र ने किया।

कुलपति को पत्नी शोक

महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो० सुरेन्द्र सिंह कुशवाहा की धर्मपत्नी **श्रीमती चन्द्रावती** का देहान्त हो गया। हमारी श्रद्धांजलि।

पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक

(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)

वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082

E-mail: vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com

स्मृति-शेष

धरती का कवि त्रिलोचन

यह एक दुर्लभ संयोग था कि बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में तमाम ऐसे विलक्षण कवि कुछेक वर्षों के अन्तराल से पैदा हुए जिन्होंने छायावाद के बाद की हिन्दी कविता को नए आयाम दिए। अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेर, केदारनाथ अग्रवाल और त्रिलोचन लगभग समवयस थे। कवि त्रिलोचन की मृत्यु के साथ ताप के ताये दिन झेल चुकी इस पीढ़ी का कोई नुमाइंदा हमारे साथ नहीं रहा। त्रिलोचन का जाना इसलिए भी ज्यादा चुभता है कि नागार्जुन के अलावा हर पीढ़ी से सबसे ज्यादा संवाद करनेवाले त्रिलोचन ही थे। साहित्य में थोड़ी बहुत दखल रखनेवाला कोई भी हिन्दीभाषी ऐसा न होगा, जिसके पास त्रिलोचन के साथ गपबाजी के कुछेक संस्मरण न हों और जिसके लेखन में त्रिलोचन ने गहरी रुचि न दिखाई हो। त्रिलोचन सिर्फ आत्मीय संवाद के लिए ही नहीं याद किए जाएँगे, वे साहित्य की चलती-फिरती पाठशाला थे जिससे हर वक्त आप कुछ सीख सकते थे। उनका संवाद सिर्फ मौजूदा पीढ़ियों तक न था, वे किसी मोहल्ले के कवियशप्रार्थी नौजवान से लेकर तो गालिब, बायरन और भवभूति और कालिदास के साथ गप मार सकते थे। वे ऐसे कवि थे, जिनके अन्दर कविता की सम्पूर्ण परम्परा जीवित थी, जिन्होंने उनसे तुलसीदास या निराला पर बात की है वे इस बात की तसदीक कर सकते थे। हिन्दी के कितने दुनियादार लेखकों ने उनसे यह सीखा। यह अलग विषय है, लेकिन एक कवि कैसे अनेक कालों में सहज विचरण कर सकता है, यह उनके साथ रह कर देखा जा सकता था। भाषा के शब्दों, उनकी अर्थछटाओं, उनके प्रयोगों को लेकर जितना उनसे बात करके सीखा जा सकता था, उतना ही उनकी कविताएँ पढ़कर भी। बातचीत से इधर-उधर भटक जाने वाले त्रिलोचन कविता में बेहद अनुशासित और मितभाषी थे। यह संकोच वैसे उनके व्यक्तित्व का हिस्सा था। वे जीवन में अक्सर आर्थिक संकटों में रहे, लेकिन न कभी उन्होंने इसे महिमामंडित किया, न उसका शोर मचाया। वे सतत अपनी भाषा और अपनी कविता के सहारे सहज स्वाभिमान और संकोच के साथ जीते रहे और उन्होंने जो श्रेष्ठ रचनाएँ और आत्मीय स्मृतियाँ छोड़ी हैं, वे हिन्दी समाज की बड़ी सम्पदा है।

—'**हिन्दुस्तान**' से

श्रद्धांजलियाँ

त्रिलोचन बनारस के गाँवों के साथ ही देशभर के गाँवों के प्रतिनिधि प्रगतिशील कवि थे। उनका भाषाज्ञान अप्रतिम था। वे प्रगतिशील होकर भी सिद्धान्तों को अपनी कविता पर आरोपित नहीं करते थे। उनकी भाषा सहज, स्वाभाविक व बोलचाल के निकट थी। बहुतों ने इस भाषा को साधना चाहा किन्तु साध नहीं पाये। उनके न होने से बनारस को अपूरणीय क्षति हुई है।

—*वरिष्ठ आलोचक* **डॉ० बच्चन सिंह**

त्रिलोचनजी के जाने से लगता है कि हमारे साहित्य के परिवार का संरक्षक चला गया। उन्होंने हमेशा नए लेखकों को महत्व दिया, क्योंकि वे जानते थे कि साहित्य का भविष्य नए लेखकों से जुड़ा है। वे निराला, मुक्तिबोध, नागार्जुन की परम्परा के अन्तिम कवि थे। बनारस से उनका बेहद लगाव था। नगर की ऐसी कोई गली, सड़क नहीं है जिससे वे गुजरे न हों। बनारस में 40 के दशक में उन्होंने नई पीढ़ी को तैयार किया। नामवर सिंह से लेकर धूमिल और उसके बाद का जो साहित्यिक बनारस है, उसके निर्माण के पीछे उनकी भूमिका रही है। बनारस में कबीर व तुलसी की तरह उन्होंने उपेक्षाएँ झेलीं। उनका जीवन ही काव्यमय था। वे कहीं भी रहे हों, बनारस को नहीं भूले। अन्तिम समय तक बनारस का इन्तजार करते रहे।

—*वरिष्ठ कथाकार* **काशीनाथ सिंह**

त्रिलोचनजी ने सॉनेट को भारतीय रूप दिया। वे जीवन को ऐसे दिवस की तरह रचते हैं जिसका कभी अवसान नहीं हो सकता। वे लहरों के कवि रहे हैं। उनमें भाषा का स्पन्दन गहरे स्तर पर दिखायी देता है। वे उन कवियों में थे जिसे जीतेजी युवा पीढ़ी द्वारा महाकवि का सम्मान मिला। अभावों का जीवन जीते हुए भी कभी अपने स्वभाव, आत्मसम्मान को नहीं छोड़ा। उनका होना हिन्दी में कभी अनहुआ न हुआ।

—*वरिष्ठ कवि* **ज्ञानेन्द्रपति**

त्रिलोचनजी कविता की एक बड़ी परिधि के स्तम्भ थे। उनकी कविताओं की सांस्कृतिक जड़ें बहुत गहरी रही हैं जिस कारण से उनमें मिथकों को बाँधने की अद्‌भुत ताकत थी। उनके वृहत्तर काव्य-घर में हर प्रकार के लोग आवाजाही करते थे जिससे उनकी कविताओं की परिधि लगातार बढ़ती गयी है। उन्होंने अपनी वैयक्तिक प्रज्ञा को परम्परा से लगातार धोया है। तुलसी व गालिब से उन्होंने भाषा के संस्कार अर्जित किये।

—*युवा कवि* **श्रीप्रकाश शुक्ल**

गांधी की अंतिम यात्रा का वृत्तांत सुनाने वाले नहीं रहे !

1948 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की अंतिम यात्रा का आंखों देखा हाल सुनाने वाले प्रख्यात रेडियो वार्ताकार, आल इंडिया रेडियो के अवकाश प्राप्त उप महानिदेशक 'शिव कुमार त्रिपाठी' का 96 वर्ष की अवस्था में नोएडा के एक अस्पताल में निधन हो गया। रेडियो पत्रकारिता को नई दिशा देने वाले, अज्ञेय जैसे साहित्यकारों को आकाशवाणी में आने हेतु प्रेरित करने वाले, हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के प्रकांड विद्वान श्री त्रिपाठी ने कई पुस्तकें भी लिखीं। उनकी एक पुस्तक *माई डेस्टिनी विद इंडिया* अमेरिका में भी प्रकाशित हुई। आपने स्टेट्समैन सहित अंग्रेजी के कई अखबारों में कालम भी लिखे। हिन्दी अखबारों में आपका कालम 'देखी-सुनी' बड़े चाव से पढ़ा जाता था।

राजेन्द्र प्रसाद सिंह नहीं रहे !

नवगीत प्रवर्तक प्रसिद्ध कवि व समालोचक **राजेन्द्र प्रसाद सिंह** के असामयिक निधन ने साहित्य जगत को स्तब्ध कर दिया है। विगत 65 वर्षों में करीब तीस नवगीत व कविता संग्रहों, उपन्यास, समालोचना के रचयिता श्री सिंह को आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री दिनकर के बाद उत्तर बिहार का सर्वश्रेष्ठ कवि मानते हैं।

तेजी बच्चन का निधन

'मधुशाला' रचकर लोकप्रियता के शिखर छूने वाले कवि स्व० हरिवंशराय बच्चन की दूसरी पत्नी व हिन्दी फिल्मों के महानायक अमिताभ बच्चन की माँ **तेजी बच्चन** का 93 वर्ष की अवस्था में गत 21 दिसम्बर, 2007 को मुम्बई के लीलावती अस्पताल में निधन हो गया। तेजी बच्चन की साहित्य, समाजसेवा व रंगकर्म में गहरी रुचि थी। विवाह के पूर्व इलाहाबाद में एक सामाजिक कार्यकर्ता व रंगकर्मी के रूप में इनकी खास पहचान थी। नेहरू खानदान से डॉ० हरिवंशराय बच्चन का परिचय इन्होंने ही करवाया था।

करीबी लोग बताते हैं कि 'तेजी' के कहने पर ही ख्वाजा अहमद अब्बास ने अमिताभ को फिल्म 'सात हिन्दुस्तानी' में मौका दिया था। डॉ० हरिवंशराय बच्चन को पी-एच०डी० के लिए ब्रिटेन भेजने में भी तेजी बच्चन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। नये रचनाकारों को वे प्रोत्साहित करती रहती थीं। तेजी बच्चन से ही बच्चन परिवार को आदर्श परिवार बनने की प्रेरणा मिली। साहित्य, कला व संस्कृति की गहरी समझ के कारण वे साहित्यकारों व बुद्धिजीवियों द्वारा अत्यधिक सम्मान पाती थीं।

श्रद्धांजलि नरेश बेदी के लिए

रूसी भाषा के ख्यातिलब्ध अनुवादक-पत्रकार **श्री नरेश बेदी** का 27 नवम्बर 2007 को मास्को में निधन हो गया। प्रगति प्रकाशन के वरिष्ठ अनुवादक के रूप में उन्होंने रूसी भाषा की अनेकानेक कृतियों की हिन्दी प्रस्तुति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' में साहित्य-संस्कृति से सम्बन्धित विवरण तथा ग्रन्थों एवं लेखकों के सम्बन्ध में सार्थक सामग्री मिलती रहती है। मध्यप्रदेश की साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रतिभा शीर्षक लेख ज्ञानवर्धक है। मध्यप्रदेश में सागर एवं नरसिंहपुर जिलों में बचपन बिताया है, इसलिए लगभग सभी स्मरणीय साहित्यकारों को पढ़ने का अवसर मिला।

—प्रकाश दुबे, *दैनिक भास्कर,* नागपुर

कम पृष्ठों में बहुत जानकारी देकर गागर में सागर भर दिया है। 'मध्यप्रदेश की साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रतिभा' आलेख में प्राचीन एवं अर्वाचीन संस्कृत तथा हिन्दी के कवियों एवं सांस्कृतिक महत्व के स्थानों और भौगोलिक परिवेश की जानकारी एक साथ कम शब्दों में देकर पाठकों को निश्चित ही लाभान्वित किया है।

—डॉ० आदित्यकुमार गुप्त, भवानीमंडी

'भारतीय वाङ्मय' से ज्ञात हुआ कि श्रद्धेय मोदीजी नहीं रहे। उनकी जीवनयात्रा भले ही समाप्त हो गई हो लेकिन उनके कार्य अब भी जीवंत हैं जो उनके परिवार को प्रेरणा और रोशनी देते रहेंगे। वे शब्दों की अजर-अमर पूँजी हम सबके लिए छोड़ गए हैं।

—हरिशंकर अग्रवाल, *आकंठ,* पिपरिया

'भारतीय वाङ्मय' के अंक से मोदीजी के निधन का दु:खद समाचार मिला। वे जिस पीढ़ी के थे, वह अब लगभग नि:शेष हो चुकी है। उन लोगों ने जो मूल्यपरक जीवन जिया उसे उत्तराधिकार के रूप में हम प्रयास करके बचा सकें तो यह एक बड़ा दायित्व-पालन होगा।

—विजयबहादुर सिंह, भोपाल

श्री पुरुषोत्तमदास मोदी नहीं रहे, मुझे उनके निधन पर हार्दिक दु:ख है। 'शेष' के ताल्लुक से जितना मैंने उनको जाना, उससे मेरे मन में उनकी विराट छवि थी, उनका बड़ा व्यक्तित्व था। पहली बार अब उन्हें चित्रों में देख रहा हूँ, आशा है, उनके आदर्शों के अनुरूप आपकी यात्रा जारी रहेगी।

—हसन जमाल, *शेष,* जोधपुर

मोदीजी के महाप्रयाण की खबर से हतप्रभ रह गया। मोदीजी की स्मृति में जो अंक निकला है, उसे देखकर लगता है कि उनका सम्राज्य कितना व्यापक था। उनके साहित्यिक चिंतन का पता तो 'भारतीय वाङ्मय' से मिलता ही रहता था, लेकिन श्रद्धांजलि अंक में प्रकाशित अनेक लेखक-प्रकाशकों एवं महानुभावों के विचारों को पढ़कर लगा कि प्रकाशन जगत से महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर मिट गया। लेकिन अपने व्यवहार से, अपने कर्म से, अपने प्रकाशन के माध्यम से मोदीजी ने जो राष्ट्रव्यापी छवि बनाई है, वह अमिट रहेगी। अब आप लोगों का दायित्व है कि उस छवि को कैसे बनाए रखें। उनके रहने से एक निश्चितता-सी रहती थी। अब जिम्मेदारी बढ़ जाएगी। मैं बनारस आकर उनके दर्शन करनेवाला था। अब यह हसरत पूरी नहीं हो सकेगी। मैं उनसे मिल नहीं सका लेकिन 'भारतीय वाङ्मय' के माध्यम से तो उनसे हर महीने भेंट हो जाती थी। उनका संपादकीय हर बार नया चिंतन देनेवाला सिद्ध होता था। समय-समय पर उनके संस्मरणों से उनके व्यक्तित्व के पहलुओं का पता चलता था। अब केवल स्मृतिशेष है और यही आपका पाथेय है। हम सबका भी।

—गिरीश पंकज
संपादक, सद्भावना दर्पण, रायपुर

'भारतीय वाङ्मय' का मोदीजी पर केन्द्रित अंक मिला। जिस शालीनता के साथ आप लोगों ने हिन्दी प्रकाशन के स्तम्भ स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी जी पर अंक निकाला है, मैं आश्वस्त हुआ कि आप लोग उनकी विरासत, उनकी गरिमा को सुरक्षित रखते हुए सँभाल लेंगे, पत्रिका भी और विश्वविद्यालय प्रकाशन भी। आदरणीय मोदीजी से मैं कभी मिला नहीं। लेकिन फोन पर या पत्रों में प्राय: उनसे मेरा संवाद होता रहता था। 'प्रसादजी' के संस्मरणों पर 'अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर प्रसाद' तो उनकी अद्भुत किताब है। थोड़ा रुककर मैं मोदीजी पर एक संस्मरण लिखना चाहता हूँ। 'दूर से देखे गए मोदीजी'। आप लोगों को मेरा आश्वासन है कि जब कभी आपको मेरी जरूरत होगी, मैं पीछे नहीं हटूँगा। हर तरह के सहयोग के लिए मैं प्रस्तुत हूँ।

—भारत भारद्वाज, दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' में मोदी महोदय के देहावसान की सूचना मिली। हृदय धक् सा रह गया। वे उच्चकोटि के प्रकाशक थे और यह निर्विवाद सत्य है कि वे उच्चकोटि के लेखक और चिन्तक भी थे। काशी में रहने से उनकी काशीस्थ महान लेखकों से निकटतम आत्मीयता थी जिससे उनसे उनके पारिवारिक सम्बन्ध भी बन गये थे। अत: जब कभी 'प्रसाद' आदि पर उनकी लेखनी चलती तो ऐसे तथ्य उद्घाटित हो जाते जिनका अन्यों को ज्ञान ही नहीं होता था। उन्हें माँ भारती हिन्दी और पुस्तकों से अत्यन्त लगाव था। वे प्राय: इन पर अपने आलेख लिखते रहते थे। उनके निधन से हिन्दी संसार ने अपना निष्ठावान साहित्यकार और प्रकाशक खो दिया है।

—भगवतीप्रसाद, *साहित्य-मण्डल,* नाथद्वारा

श्री पुरुषोत्तमदास जी के निधन का समाचार सभी हिन्दी-सेवकों को विचलित करने वाला है। उनके निधन ने जो शून्य रचा है उसे भर पाना सम्भव नहीं है। वे सही अर्थों में हिन्दी में आ रही नई पीढ़ी के लिए अभिभावक सरीखे थे। सम्पादक-प्रकाशक के नाते ही नहीं, एक मनुष्य के रूप में उनकी याद हमेशा बनी रहेगी। आज जब हिन्दी पर बाजार और अंग्रेजियत का खतरा बहुत गहरा रहा है, मोदीजी का जाना हम सबको बहुत अकेला कर गया है।

—संजय द्विवेदी, *हरिभूमि,* रायपुर

मोदीजी के निधन का समाचार पाकर बहुत दु:ख हुआ। वे हिन्दी जगत में हो रहे प्रयोगों, नवाचारों और प्रकाशनों पर बहुत सजग दृष्टि रखते थे। उनका आशीर्वाद हमारी पत्रिका 'मीडिया विमर्श' को भी निरन्तर मिलता था। सूदूर छत्तीसगढ़ से निकल रही इस पत्रिका के प्रत्येक अंक पर वे हमें अपनी राय से अवगत कराते थे और सुझाव भी देते थे। परिवार के बुर्जुग की तरह उनमें अनुभव की विशालता तो थी ही, नए को स्वीकार करने का साहस भी था। वे हिन्दी जगत में भरोसे का नाम थे। उनका काम पीढ़ियों के काम आएगा। हिन्दी को एक विशाल साहित्य देने के साथ-साथ वे अपनी अध्ययनशीलता से भी प्रभावित करते थे। साहित्य-जगत उनके अभाव को लम्बे समय तक याद करेगा।

—भूमिका द्विवेदी, *मीडिया विमर्श,* भोपाल

'भारतीय वाङ्मय' के नवम्बर अंक से मोदीजी के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी मिली। मुझे लगा कि पूज्यवर आचार्य पं० सीताराम चतुर्वेदीजी जैसा उनके बारे में बताते रहते थे, उनका व्यक्तित्व उससे भी कहीं बढ़कर था। सबसे बड़ी बात तो यह है कि 'भारतीय वाङ्मय' का यह अंक आश्वस्त करता है कि आप दोनों भाइयों के कंधे मोदीजी की विरासत को संभालने के लिए मजबूत हैं। वैसे भी जब हिन्दी प्रकाशन जगत पर एक व्यक्ति एकाधिकार बनाने का प्रयास कर रहा है तब आपके संस्थान से ही कुछ आशा की जाती थी और सौभाग्य से आपके पारिवारिक संस्कार इस आशा को बलवती बना रहे हैं।

—डॉ० प्रदीप जैन, मुजफ्फरनगर

'भारतीय वाङ्मय' के माध्यम से मोदीजी के निधन के समाचार से हार्दिक वेदना हुई। श्री मोदीजी एक सशक्त लेखक, विचारक और हिन्दी साहित्य के लिए समर्पित व्यक्तित्व के धनी थे। उनकी समाज-सेवा और साहित्य-सेवा चिर-स्मरणीय है। इसी वर्ष 'योग-साधना : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में' मेरी पुस्तक उनकी देखरेख में प्रकाशित हुई है। उनसे कई बार मैंने दूरभाष पर भी बात की और उनके कई पत्र मेरे पास धरोहर के रूप में सुरक्षित हैं। इतनी जल्दी यह दु:खद समाचार मिलेगा, इसकी मैं कल्पना नहीं कर सकता।

—खेमचन्द्र चतुर्वेदी, अजमेर

मोदीजी मेरे श्रद्धा-पात्र थे। 'भारतीय वाङ्मय' का मैं नियमित पाठक हूँ। इस पत्रिका में, नव-प्रकाशित साहित्य की, सपरिचय सूची के साथ ही विद्वान साहित्यकारों की रचनाएँ एवं उन

पर परिचयात्मक टिप्पणी अंकित होती है। अध्ययनशीलता के पर्याय स्व० मोदीजी अद्‌भुत प्रतिभा के धनी एवं साहित्य-प्राण महा-व्यक्तित्व के संधारक थे। महात्मा कबीर ने 'जैसी की तैसी धर दीनी चदरिया' को मानव-जीवन की उपलब्धि कहा था। मोदीजी ने प्रभुप्रदत्त जीवन को स्वकर्म द्वारा अधिक धन्यता प्रदान की। नवम्बर अंक के माध्यम से मोदीजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर पर्याप्त प्रकाश डालने का प्रयास हुआ है। इस अंक के सुन्दर सम्पादन के लिए, साहित्य-जगत सदा आभारी रहेगा। अद्यतन युग के श्रेष्ठ साहित्यकार, संपादक, प्रकाशक एवं विविध प्रतिभाओं के प्रकाश से जगमग व्यक्तित्व लिये ज्योति-शलाका की तरह जीवन व्यतीत करनेवाले, अभिनन्दनीय चरित स्व० मोदीजी के प्रति श्रद्धावनत हूँ।

—धनपत सिंह, मनेन्द्रगढ़ (छत्तीसगढ़)

'भारतीय वाङ्मय' पढ़कर दु:ख हुआ कि पुरुषोत्तमदास मोदीजी का स्वर्गवास हो गया। स्वर्गवास कहना ठीक नहीं है। उनकी कीर्ति पुस्तकों तथा प्रकाशन द्वारा युग-युग महक देती रहेगी। मेरे यहाँ तो एक ही बार दिल्ली में दुकान पर आए थे, तभी कुछ समय बातें हुई थीं। अभी तक वह मनमोहिनी वाणी याद है, भूला नहीं। मेरा आपसे निवेदन है कि जो प्रकाशन कार्य वे छोड़ गये हैं उसमें बाधा नहीं आने दें।

—जगदीश चन्द्र, *अशोक प्रकाशन,* दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' का पुरुषोत्तमदास मोदी श्रद्धांजलि अंक देखते ही, पढ़ते ही पल भर के लिए दिमाग शून्य हो गया। आदरणीय पुरुषोत्तमजी, अपने विचारों, संदेशों और उद्‌देश्यों से सचमुच में पुरुषोत्तम थे। उन्होंने सम्पादकीय के बहाने जो हिन्दी को दिया है, वही उनको साहित्य में भारतेन्दु बनाए रखने के लिए काफी है, प्यारे पुरुषोत्तम दास की कहानी कही जायगी।

—डॉ० अमरेन्द्र, भागलपुर (बिहार)

'भारतीय वाङ्मय' से मोदीजी के महाप्रयाण की सूचना पाकर मर्माहत हुआ। मेरा उनसे आत्मीय सम्बन्ध रहा है। कभी-कभी पत्राचार होता था और व्यापारिक सम्पर्क होने के नाते वे हमेशा मेरे पत्रों पर विशेष ध्यान देते थे। उनके जैसा व्यवहारकुशल व्यक्ति मुश्किल से मिलता है। उन्हें बार-बार प्रणाम। कई वर्षों से मेरा परिचय था और मैं जब भी वाराणसी जाता उनसे बगैर मिले नहीं रहता। समाज-सुधार और समरसता के लिए उनकी प्रतिबद्धता अनुकरणीय थी।

—लक्ष्मीनारायण शाह, राउरकेला, उड़ीसा

'भारतीय वाङ्मय' श्रद्धेय मोदीजी के लिए श्रद्धांजलि अंक बनकर आ गया। एक प्रकाशक शीर्षस्थ प्रतिभा का साहित्यकार हो सकता है जो पुरुषोत्तमदास को जानते हैं वे ही स्वीकार करेंगे कि हाँ यह सच है। अपने जीवन की सम्पूर्ण साहित्यिकता वे 'भारतीय वाङ्मय' के प्रत्येक अंक में उड़ेलते रहते थे। परिणामस्वरूप यह पत्रिका जब भी आती थी तब आद्यांत पढ़ने के बाद भी बार-बार पढ़ना अच्छा लगता था। आपने संकेत तो दिया है कि भविष्य में भी पत्रिका की प्रतिभा में खरौंच तक नहीं आयेगी। यह अपने पूज्य के प्रति आप दोनों का साधुवाद है। तथापि यह कहना तो पड़ेगा ही भारतीय वाङ्मय अपने आप में एक अनोखी पत्रिका है और रहेगी भी।

एक प्रकाशक, एक साहित्यकार, एक शिक्षाविद्, एक सम्पादक, एक अनन्य पुस्तकप्रेमी और एक समाजसेवक आदि सम्पन्नता एक ही व्यक्ति में? हाँ, वही थे पुरुषोत्तमदास मोदी, जो अब नहीं रहे तथापि सदा स्मरणीय बने ही रहेंगे।

—डॉ० रजनीकान्त जोशी, अहमदाबाद

'भारतीय वाङ्मय' नवम्बर अंक, पुरुषोत्तमदास मोदी श्रद्धांजलि अंक मिला।

पुरुषोत्तमदास मोदी जैसे महापुरुष विरल हैं। उनके सम्बन्ध में 'भारतीय वाङ्मय' का विशेषांक निकालना प्रशंस्य कार्य है जो प्रेरणा-प्रोत्साहन का आधार-माध्यम है। मोदीजी के कार्य-कलाप वस्तुत: अनुकरणीय हैं। उनके सम्बन्ध में मेरी जानकारी में काफी वृद्धि हुई।

—डॉ० स्वर्ण किरण, नालन्दा

'भारतीय वाङ्मय' का नवम्बर अंक प्राप्त हुआ। मोदीजी के देहान्त का समाचार पढ़कर बहुत दु:ख हुआ। इलाहाबाद में मोदीजी के दर्शन हुए थे, उसके बाद बहुत चाहने पर भी मैं उनसे न मिल सका। उनका व्यक्तित्व इतना आत्मीय और साहित्यप्रेरक था कि मेरी बार-बार इच्छा होती थी कि किसी प्रकार बनारस पहुँचूँ और उनसे साहित्य और प्रकाशन के सम्बन्ध में कुछ सीख सकूँ। इसे अपना दुर्भाग्य ही कहूँगा कि मोदीजी जैसे हितैषी के निकट न पहुँच सका।

—सम्पादक : *विषयवस्तु,* दिल्ली

ज्ञात हुआ कि आदरणीय मोदीजी के अमूल्य साहित्यिक अवदान से हम सभी वंचित हो गए। हम सभी उनके बताये मार्ग पर चल सकें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

—आनन्द, *सुषमा साहित्य मन्दिर,* जबलपुर

मोदीजी के पंचतत्त्व में विलीन होने के समाचार से पीड़ा हुई। 'भारतीय वाङ्मय' में अपने वैदुष्य की जो छाप उन्होंने छोड़ी वह उनके चिन्तनशील व्यक्तित्व और सारस्वत यज्ञ का प्रभाव था। यदि उनके व्यक्तित्व से सम्बन्धित कुछ सामग्री मिल जाए तो उनके कृतित्व पर पुस्तक लिखी जा सकती है। नवम्बर के 'साहित्य अमृत' में बाबूजी के व्यक्तित्व पर सारगर्भित आलेख आया है। पूरे देश में 'भारतीय वाङ्मय' का विलक्षण स्थान है।

—डॉ० हरिप्रसाद दूबे, फैजाबाद

'भारतीय वाङ्मय' (नवम्बर 07) के अंक में श्रद्धास्पद व्यक्तित्व एवं अविकल्प साहित्यकार एवं प्रकाशक पुरुषोत्तमदास मोदीजी के निधन का समाचार पढ़कर स्तब्ध हो गया। अपने बहुआयामी व्यक्तित्व एवं अकूत प्रतिभा, व्यवहारकुशलता तथा कर्मठता के कारण ही वे हिन्दी के साहित्यकारों के बीच आजीवन आदरणीय बने रहे एवं उनके महाप्रयाणोपरांत साहित्यकारों के बीच जिस सूनेपन का वातावरण छाया हुआ है, उसका निदर्शन है, इस अंक में छपे साहित्यकारों के पत्र। मोदीजी वास्तव में साहित्यानुरागी थे। वे बहुत से लेखकों के प्रेरणास्रोत रहे एवं मार्गदर्शक भी। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप उनके द्वारा स्थापित साहित्यादर्शों की जीवंतता निरन्तर बनाये रखेंगे जिससे केवल हिन्दी प्रदेश ही नहीं, बल्कि हिन्दीतर प्रदेशों में भी विश्वविद्यालय प्रकाशन का नाम रोशन होता रहेगा।

—डॉ० हरेराम पाठक, तिनसुकिया (असम)

'भारतीय वाङ्मय' का अंक 11 प्राप्त हुआ। अंक देख खुशी एवं दु:ख भी हुआ। आपके पिताजी की अनेक स्मृतियाँ एवं याद तथा स्नेह याद कर दु:ख एवं अंक की सज्जा से प्रसन्नता भी हुई। अनेक नई बातें मोदीजी के बारे में ज्ञात हुईं। उनके व्यक्तित्व का आभास और ऊँचा हुआ। अंक हेतु बधाई। इसके प्रकाशन में निरन्तरता बनाये रखने का आपका संकल्प पढ़ कर अच्छा लगा। भगवान आपको सफल रखें एवं पिता के पद-चिह्नों पर चल कर और गौरवशाली बनें यही प्रार्थना है।

—गिरीशचन्द्र चौधरी, भारतेन्दु भवन, वाराणसी

'भारतीय वाङ्मय' के संस्थापक-सम्पादक पुरुषोत्तमदास मोदीजी अब नहीं रहे, इस समाचार ने मेरे मानस को झकझोर दिया। उनका अमूल्य अवदान 'भारतीय वाङ्मय' हमारे बीच विद्यमान है, यह प्रसन्नता की बात है। किन्तु आँखें छलछला आती हैं। वे अपने हाथों अपना स्मारक बना गए, यह बात मुझे अधिक संतोष देती है। मैं उनके इस सतकार्य के प्रति नमित हूँ और उनकी आत्मा की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

—डॉ० रमेशमोहन शर्मा, भागलपुर

श्री पुरुषोत्तमदासजी मोदी के अवसान की खबर हृदय विदारक है। यह हिन्दी साहित्य की अपूरणीय क्षति है। उनके अवसान का समाचार मुझे विलम्ब से मिला, जबकि मैं पूर्व में ही उन्हें 'भारतीय वाङ्मय' के बाबत खत लिख चुका था। श्री मोदीजी एक बड़े कलासाधक और उसे भी बड़े इन्सान थे, मैं अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूँ।

—कैलाश मण्डलेकर, खण्डवा

My deepest Sympathies in your sorrow.

—Anil Mehta
Mehta Booksellers, Kolhapur

समवेदना के पत्र

अपने प्रिय मित्र प्रसिद्ध प्रकाशक श्री पुरुषोत्तमदास मोदी के देहावसान का समाचार पाकर मैं स्तब्ध रह गया। बहुत पुराना परिचय था मेरा उनसे। मुझे याद है, मेरी बेटी की शादी के अवसर पर उन्होंने मेरी पुस्तक की रायल्टी एक साथ मुझे देकर मेरी सहायता की थी। बनारस गया तो उन्होंने मेरी सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखा। वे मित्र जाति के व्यक्ति थे। मेरी कामना है, वे जहाँ भी रहें शांति में रहें। **—विष्णु प्रभाकर,** नई दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' का 'पुरुषोत्तमदास मोदी श्रद्धांजलि अंक' मिला। मुखपृष्ठ देख कर स्तम्भित रह गया। मुझे मोदीजी के स्वर्गवास का कहीं से समाचार नहीं मिला था। उनकी याद बीच-बीच में अवश्य आती थी। वे मेरे एम०ए० के छात्र थे। 1949 में मैंने सेंट एण्ड्रयूज कॉलेज, गोरखपुर में अध्यापन आरम्भ किया। तब वे दो वर्ष (1950 तक) मेरे छात्र रहे। आरम्भ से ही उनकी हिन्दी साहित्य और साहित्यकारों में गहन रुचि थी। पं० माखनलाल चतुर्वेदी के सम्पर्क में वे तब आ चुके थे और उनके साथ का अपना चित्र दिखाया करते थे, तभी उनके साथ हुए वार्तालापादि के विषय में बड़े उत्साह और रुचि से बताया करते थे। उन्होंने अपना प्रकाशन मेरी पुस्तक 'वेलि क्रिसन रुक्मिणी री' से आरम्भ किया था। वह पुस्तक मई 1953 में गोरखपुर से छपी। बाद में डॉ० रामचन्द्र तिवारी की पुस्तक (नवम्बर 1953 में) 'रीतिकालीन कविता और सेनापति' प्रकाशित हुई। उन दिनों वे पुस्तक पर प्रकाशन का संस्करण तथा प्रकाशन माह और सन् तीनों छापते थे। 1962 ई० में मैं राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर चला गया और वहाँ से 1966 में पुणे में हिन्दी विभाग का आचार्य तथा अध्यक्ष पद स्वीकार करके यहाँ आया तो यहीं बस गया। उधर का सम्बन्ध अवकाश प्राप्त करने से पूर्व सन् 1985 तक थोड़ा-बहुत बना रहा। फिर वह भी समाप्त हो गया। परन्तु जब भी वाराणसी जाना होता था उनसे सदैव मिलता रहा। दो-तीन बार तो मैं उनके पास निवास पर ही ठहरा। उनसे अन्तिम भेंट चार-एक वर्ष पूर्व गोरखपुर जाते हुए हुई थी। उस समय मैं संकटमोचन के पास वाले आप लोगों के निवास पर भी गया था। घरेलू सम्बन्ध के नाते।

मोदीजी ने अपने बल-बूते पर और अपनी समझ-बूझ से प्रकाशन के क्षेत्र में स्थायी यश अर्जित किया। सुरुचिपूर्ण और शुद्ध मुद्रण तथा महत्त्वपूर्ण कृतियों के प्रकाशन के लिए वे सदैव याद किए जाएँगे। उनके विकास में उर्मिलाजी का पूरा सहयोग और समर्पणभाव रहा है। वे आप लोगों के लिए गौरवशाली परम्परा छोड़ गए हैं। उनके निधन से हिन्दी प्रकाशन जगत् की तो भारी क्षति हुई है, साहित्य भी उनकी अमूल्य सेवा और सहायता से वंचित हो गया है।

—डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित, पुणे

'भारतीय वाङ्मय' के नवम्बर अंक से दु:खद सूचना जानकर स्तब्ध रह गया, वह भी घटना के डेढ़ मास से अधिक बाद। किसी क्रियाशील व्यक्ति के सम्बन्ध में अचानक ऐसी सूचना अधिक पीड़ादायक होती है। पचास वर्ष पूर्व 1957 में गोरखपुर पहुँचने पर जिन व्यक्तियों से परिचय हुआ उनमें मोदीजी भी थे। प्रतिदिन की भेंट ने परिचय को आत्मीय भाव में बदल दिया। उनके वाराणसी जाने के बाद भी आत्मीय भाव में कमी नहीं आई। प्रकाशक के रूप में उनकी प्रतिभा आरम्भ से ही प्रकट होने लगी थी परन्तु 'भारतीय वाङ्मय' ने उनकी सूक्ष्म एवं व्यापक दृष्टि, समाजकेन्द्रित चिन्तन और संतुलित एवं मर्मस्पर्शी लेखन की विलक्षण क्षमता को उजागर किया। मैंने उन्हें लिखा भी था कि इस लघु पत्रिका की तुलना केवल बिहारी के दोहों से की जा सकती है जो छोटे होते हुए भी गहरा घाव करते हैं।

उनकी संवेदनशीलता का अनुभव मुझे गोरखपुर से ही था किन्तु उसमें निरन्तर वृद्धि के एकाधिक उदाहरण देखने में आए। भुड़कुड़ा, गाजीपुर के स्व० डॉ० इन्द्रदेव की पुस्तक 'स्मृति शेष' छप रही थी। तभी उनका निधन हो गया। निधन की सूचना मुझे 'भारतीय वाङ्मय' से मिली तो तुरन्त मैंने मोदीजी को पत्र लिखा। कुछ ही समय बाद मोदीजी का पत्र आया कि मैं आपके पत्र का उपयोग डॉ० इन्द्रदेव की पुस्तक की प्रस्तावना के रूप में करना चाहता हूँ। मुझे भला क्या आपत्ति हो सकती थी। बात मोदीजी की प्रौढ़ कल्पना की है, किसका, कैसे और कहाँ समुचित उपयोग हो सकता है, इस विवेक के वे धनी थे।

एक अन्य घटना का उल्लेख किये बिना मन नहीं मान रहा। वरिष्ठ लेखक और पत्रकार स्व० ज्ञानचन्द्र जैन की अन्तिम दो पुस्तकें जब प्रेस में थीं तभी उनका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया। जब ऐसा लगने लगा कि अन्त समय बहुत दूर नहीं है, तब मैंने दोनों प्रकाशकों से उनकी स्थिति बताते हुए शीघ्र पुस्तक तैयार करने का आग्रह किया। ज्ञानचन्द्रजी को जब तक होश रहा, वे पुस्तकों के बारे में मुझसे पूछताछ करते रहते थे। मोदीजी इतने संवेदनशील थे कि उन्होंने 3-4 दिन में पुस्तक छाप कर भेज दी, यद्यपि उस समय तक कवर तैयार नहीं हो पाया था। मोदीजी के कारण ज्ञानचन्द्रजी ने महाप्रयाण से पहले अपनी अन्तिम पुस्तकों में से एक पुस्तक मुद्रित रूप में देख तो ली। **—शैलनाथ चतुर्वेदी,** लखनऊ

वज्रपात-सा लगा मोदीजी के निधन का संवाद। हाल के अपने पत्र में मैंने मोदीजी की चढ़ती सारस्वत जवानी का उल्लेख किया था। क्या पता था कि यह तो बुझते दीपक का अन्तिम प्रकाश है। अब क्या होगा 'भारतीय वाङ्मय' का? मन बड़ा खिन्न है। हिन्दी का, भारतीय संस्कृति का। महान पुरुष, ऋषिपुरुष, हमारे बीच से उठ गया। किन्तु अनुराग-पराग में आशा-ज्योति झिलमिला रही है। चि० सुपुत्र 'वाङ्मय' की ज्योति बुझने न देंगे। भारतीयता की मशाल विश्वविद्यालय प्रकाशन में जलती रहे, यही मेरी शुभकामना है।

—राधामोहन उपाध्याय, हावड़ा

भारतीय मनीषा के प्रवक्ता, उदात्त मानवीय मूल्यों के पोषक, हिन्दी प्रकाशन जगत के सुविख्यात ध्वजधारी, 'भारतीय वाङ्मय' के संस्थापक सम्पादक आदरणीय पुरुषोत्तमदास मोदी के असमय देहावसान से हम सब मर्माहत हैं। 'भारतीय वाङ्मय' का प्रत्येक अंक मोदीजी के उदात्त विचारों और आदर्शवादी सोच को प्रतिबिम्बित करता है। उनका सम्पादकीय पाठकों को क्रान्तिकारी ऊष्मा देता था, वे अपने सम्पादकीय द्वारा विचारों की एक नई फसल को जन्म देते थे।

—डॉ० वीरेन्द्र कुमार सिंह, *उपनिदेशक,* राजभाषा, केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड, फरीदाबाद

मोदीजी के स्वर्गारोहण का दुखद समाचार प्राप्त हुआ। अत्यन्त शोक हुआ। अकस्मात ऐसा हुआ क्योंकि उनकी सक्रियता के विषय में पढ़ता रहता था यद्यपि कुछ अस्वस्थ तो थे। तीन दिन पूर्व ही 'भारतीय वाङ्मय' प्राप्त हुआ था और उनके 'रामसेतु' पर कम्ब रामायण के शोधपूर्ण विचार पढ़े थे। तब सोचा भी न था कि दो दिन बाद ही ऐसा दुखद समाचार मिलेगा। 'भारतीय वाङ्मय' में अब उनकी सशक्त लेखनी द्वारा प्रसूत मौलिकतापूर्ण, विचारोत्तजक विचार कहाँ पढ़ने को मिलेंगे? **—जगदीश्वर जोहरी,** गाजियाबाद

पुरुषोत्तमदास मोदी लोकप्रिय पत्रकार ही नहीं, साहित्यकार, चिंतक और सम्पूर्ण मानव थे। उन्होंने साहित्य की, पत्रकारिता की सेवा ही नहीं की वरन् साहित्यकार एवं पत्रकार पैदा भी किए। मैंने जब-जब अपनी पत्रिका 'दिव्यालोक' उनके पास भेजी, उनकी प्रतिक्रिया पन्द्रह दिनों के अन्दर प्राप्त हुई। उनका प्रोत्साहन मुझे ऊर्जा देता रहा।

—जगदीश किंजल्क, भोपाल

पुरुषोत्तमदासोऽपि पुरुषेषूत्तमः स्वयम्।
मोदः साहित्यकाराणां साहित्याभासमन्वितः॥
वाङ्मयं भारतीयं यत् काशितं सूचनात्मकम्।
आराष्ट्रं तेन साहित्योत्कर्षज्ञानं समैः कृतम्॥
हन्त! पुरुषोत्तमो मोदी दिवंयातोऽद्य विद्यते।
तदात्माशान्तिमाप्नोतु प्रार्थयेऽहं वरात्परम्॥

—प्रो० रहसविहारी द्विवेदी, जबलपुर

पुरुषोत्तमदासजी गुणी, अथक साहित्यसर्जक, सत्यशीलयुक्त सद्गृहस्थ थे। उनका वियोगजन्य अभाव अनेक वर्षों तक सालता रहेगा। महादेवी, पंत, माखनलाल चतुर्वेदी, पं० गोपीनाथ कविराज, पं० बलदेव उपाध्याय प्रभृति सु-मनों की छाँह तले जिनकी साहित्य-साधना सतत चलती रही, वे हिन्दी-जगत में स्थापित व सर्वमान्य पुणयात्मा मोदीजी निश्चित ही सद्गति सुगति के पात्र हुए हैं। प्रकाशन के पुरोधा आदरणीय मोदीजी की यश-पताका को जीवन्त बनाए रखना अब उनके यशस्वी पुत्रों (श्री अनुराग एवं श्री पराग) सहित हिन्दी साहित्यसेवियों का दायित्व है।

—मोतीलाल जैन 'विजय', कटनी

मोदीजी के आकस्मिक निधन से मैं एवं मेरा परिवार शोक की कष्टकारी संवेदना से गुजर रहा है। 'भारतीय वाङ्मय' का सम्पादन आदरणीय मोदीजी ने जिस कुशलता, निष्पक्षता एवं निरन्तरता के साथ करते हुए हिन्दी-जगत की जो अपार सेवा की है, वह सराहनीय है। आपने विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी की स्थापना का जो पुनीत कार्य किया है, आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि यह नित निरन्तर साहित्य के क्षेत्र में समाज की सेवा करता रहेगा, यही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

—डॉ० अखिलेश चन्द्र, आजमगढ़

मोदीजी के गोलोकवासी होने से साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं प्रकाशन-जगत को गहरा धक्का लगा है। इस अपूरणीय क्षति की भरपाई नहीं की जा सकती। प्रकाशन जगत में शीर्ष पर होने के कारण मोदीजी से अध्यापकों का सम्बन्ध हमेशा मधुर रहा है। वे लेखकों को लेखनकार्य के लिए वे हमेशा उत्साहित एवं प्रेरित करते रहते थे। महाराजा कॉलेज के डॉ० गजेन्द्र पाठक की पुस्तक 'नवजागरण' एवं डॉ० ओमप्रकाश राय की पुस्तक 'भारत की चुनावी राजनीति के बदलते आयाम' का प्रकाशन उनके सहयोग से सम्भव हो सका। उनके जैसा मृदुभाषी, सरल हृदयवाला, परोपकारी, राष्ट्रद्रष्टा, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को समर्पित महामानव बिरल देखने को मिलते हैं। उनके असमय चले जाने से लेखकों को मानसिक क्लेश हुआ है।

—डॉ० ओमप्रकाश राय, आरा

समर्थ पत्रकार, साहित्यकार, समाजसेवी एवं प्रकाशक पुरुषोत्तमदास मोदीजी के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर हृदय मर्माहत हुआ। उनके चिन्तन एवं यशःकाय जयशंकर प्रसाद के प्रति समर्पण भावी पीढ़ी के लिए एक उदाहरण अवश्य होगा। **—महाशङ्कर प्रसाद,** वाराणसी

'भारतीय वाङ्मय' ने वर्षों पूर्व मुझे आदरणीय मोदीजी के साथ सम्बद्ध कर दिया था। प्रत्यक्ष दर्शन तो मेरे भाग्य में नहीं लिखा था उनका, किन्तु उनका स्नेहभाव मेरे प्रति बराबर बना रहा। 28-29 मार्च 2006 को जब भरतपुर में हमने 'वैचारिक स्वराज्य के निर्माण की चुनौती और साहित्यिक पत्रिकाओं की भूमिका' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी रखी तब उनसे भरतपुर आने का अनुरोध किया। उस गोष्ठी में वे शारीरिक अस्वस्थता के कारण आ तो नहीं सके किन्तु अपना स्नेहाशीष 'स्वाधीन भारत में वैचारिक स्वराज्य' शीर्षक से हमें लिखकर भेजा। भारत की वर्तमान दिशा और दशा दोनों से वे चिन्तित थे। उन्होंने अपने उक्त लेख में लिखा था कि 'वैचारिक स्वराज्य किसी देश की आत्मा होती है। इस समय देश में जो वातावरण है उससे लगता नहीं कि देश में वैचारिक स्वराज्य का सृजन या स्थापना होगी।' स्पष्ट है कि वे चाहते थे कि ऐसा हो किन्तु कैसे? इसका कोई मार्ग उन्हें नहीं दीख पड़ता था। यह काम यदि असम्भव नहीं तो कठिन तो अवश्य ही है। हम उनसे प्रेरणा लें और आगे बढ़कर वैचारिक स्वराज्य के लिए चिन्तन और काम करें, यही उनका संदेश है। पुस्तक-पाठक और पीढ़ियों के रिश्तों की जितनी गहरी सूझ उनमें थी, वह विरल थी, उनके सम्पादकीय उनकी स्पष्टवादिता के प्रमाण हैं। सांस्कृतिक प्रश्न उनमें जिस तरह का उद्वेलन उत्पन्न करते थे, उससे वे गहरे अर्थों में संस्कृति की चिन्ता करने वाले थे, यह बात ध्यान में आती है। उनका जाना देश और विशेषतः हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता की अपूरणीय क्षति है।

—डॉ० कृष्णचन्द्र गोस्वामी, भरतपुर

आप सब के बज्रपाती दुःख के साथ मुझ जैसे लाखों-लाखों बड़े-छोटे रचनाकार तथा साहित्य-प्रेमी मर्माहत हैं। किन्तु सिवाय आँसू बहाने के और कुछ किया भी क्या जा सकता है? आप सब भाग्यशाली हैं वैसे कर्मठ, संघर्षशील, सरस, सहज, उद्यमी और निश्छल पिता की छत्र-छाया में पल्लवित तथा पुष्पित होकर। समय, बड़े से बड़े घावों को भर देता है, धीरे-धीरे विस्मृति का मरहम लगाकर। आप दोनों के पिताजी केवल आप दोनों के पिताजी न होकर हम जैसे बहुतों के बहुत कुछ थे। **—गिरिधर करुण,** देवरिया

हिन्दी के निर्भीक पक्षधर

पुरुषोत्तमदास मोदीजी के निधन का समाचार पाकर किंकर्त्तव्यविमूढ़-सा हो गया। थोड़े दिन पूर्व विश्वविद्यालय प्रकाशन में उनसे बातें हुई थीं। बड़े ही आत्मीय भाव से अपने पास बुलाकर उन्होंने चाय पिलाई। मैं जब भी वहाँ जाता, दो-चार साहित्य की बातें उनसे हो जातीं। हिन्दी की वर्तमान स्थिति पर वे चिन्ता भी जताते थे। उन्हें हिन्दी-लेखन के गिरते स्तर की तो चिन्ता रहती ही थी; पुरस्कार की राजनीति से भी वे चिंतित रहते थे। यही कारण था कि वे हिन्दी और किताब के महत्त्व पर 'भारतीय वाङ्मय' में निरन्तर लिखते और विशिष्ट विद्वानों के विचार प्रकाशित भी करते थे। आज जरूरत है, उन विचारों का संकलन कर ग्रन्थ प्रकाशित करने की। मोदीजी एक में अनेक थे—लेखक, सम्पादक, प्रकाशक, प्रकाशन के स्वामी, सच्चे मित्र, सबके शुभेच्छु, अच्छे परामर्शी, गुणग्राही, साधक, संवेदनशील मानव, प्रतिभाशाली, अध्येता, चिंतक, अनुशासनप्रिय, प्रशासक आदि। उनकी लेखनी में इतनी शक्ति थी कि थोड़े शब्दों में बड़े महत्त्व की बात लिख देते थे। यही कारण है कि 'भारतीय वाङ्मय' प्रत्येक हिन्दी-प्रेमी के लिए अनिवार्य हो गया। उससे देश-विदेश की तमाम गतिविधियों की जानकारी मिल जाती थी और सभी को उसकी प्रतीक्षा रहती थी। मोदीजी के निधन से हिन्दी साहित्य की अपूरणीय क्षति हुई है।

—डॉ० अर्जुनदास केसरी, सोनभद्र

पुरुषोत्तमदास मोदी के निधन से केवल हिन्दी के प्रकाशन जगत को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण साहित्यिक बिरादरी को गहरा धक्का लगा है। वे कुशल व्यवसायी व प्रकाशक ही नहीं बल्कि प्रकाशन जगत के गिने-चुने बौद्धिक क्षमता वाले व्यक्तियों में थे।

—डॉ० चन्द्रपाल, *वरिष्ठ प्रबन्धक,* राजभाषा
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, चेन्नई

हरदम यादों में

वो रस्मों-रिवाजों में रहें ऐसा करो।
सभी कस्मों-वादों में रहें ऐसा करो॥
देखो कहीं अश्कों में तेरे बह न जाएँ
बने हरदम यादों में रहें ऐसा करो।
उनकी खुशियाँ उनके गम अब भी यहीं
वो हर रात ख्वाबों में रहें ऐसा करो।
उनकी बातें उनकी यादें क्यूं सताएं
दिल और इरादों में रहें ऐसा करो।
भूलो नहीं चिराग जला के मजार पे
रोशनी बन आखों में रहें ऐसा करो॥

—डॉ. एम.डी. सिंह, गाजीपुर

प्राप्त पुस्तकें/पत्रिकाएँ

चेतना के बदलते स्वर : अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष तथा राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित हिन्दी साहित्य के सुपरिचित लेखक एवं विद्वान् डॉ० नज़ीर मुहम्मद की 46 कविताओं के इस संग्रह में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के चिरन्तन मान-मूल्यों के प्रति आस्था के साथ-साथ देश के विकास की चिन्तन स्पष्ट झलकती है। अपने गाँव-घर से लेकर विश्वमावता तक की परिधि में एक सरल हृदय, भावुक और निश्छल रचनाकार की चेतना के इन स्वरों में सरलता, सादगी और अकृत्रिमता का एक सहज आकर्षण है। मौजीराम स्मृति न्यास, ए-4, रिंग रोड, साउथ एक्सटेंशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ 72, मूल्य रु० 40.00

यतीन्द्र साहित्य सन्देश : सम्पादक : फतह सिंह लोढ़ा, यतीन्द्र साहित्य सदन, सरस्वती विहार, कोर्ट के सामने, भीलवाड़ा-311001, मूल्य : 15.00

सबके दावेदार : सम्पादक : पंकज गौतम, मु० सीताराम, आजमगढ़

साहित्य सागर : सम्पादक : कमलाकान्त सक्सेना,118, वैभव डी, सुरेन्द्र प्लेस, होशंगाबाद मार्ग, भोपाल-462 026

लोक गंगा : योगेशचन्द्र बहुगुणा, पोस्ट-गुमानीवाला, देहरादून

नवनीत समर्पण : सम्पादक : दीपक जोशी, भारतीय विद्या भवन, कुलपति मुनशी मार्ग, मुम्बई, मूल्य : 15.00

वार्ता वाहक : सम्पादक : ब्रजसुन्दर पाढ़ी, हिन्दी शिक्षा समिति, ओड़िशा, शंकरपुर, अरुणोदय मार्केट, कटक (उड़ीसा)

भाव वीथिका : सम्पादक : योगेन्द्र प्रसाद, गोविन्दपुरी, चन्दक, बिजनौर

युवा पथ : सम्पादक : शिव कुमार, 75/76, वीरेन्द्र मार्केट, नजफगढ़, नई दिल्ली-110043, मूल्य : 5.00

शब्द : सम्पादक : आर०सी० यादव, सी-1104, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016, मूल्य : 100.00 (वार्षिक)

भारतवाणी : सम्पादक : डॉ० चंदूलाल दुबे, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड-580001

आश्वस्त : सम्पादक : सुश्री डॉ० तारा परमार, 9-बी, इन्द्रपुरी, सेठीनगर, उज्जैन-456010, मूल्य : 15.00

काशी संवाद मंथन : सम्पादक : बृजेश कुमार, 63 माधव मार्केट कालोनी, लंका, वाराणसी

मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् पत्रिका : सम्पादक : डॉ० मनोहर भारती, मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद्, 58, वेस्ट ऑफ कार्ड रोड, राजाजीनगर, बेंगलूर-560010, मूल्य : 5.00

अक्षर पर्व (उत्सव अंक) : सम्पादक : सर्वमित्रा सुरजन, देशबन्धु, प्रकाशन विभाग, देशबन्धु परिसर, रामसागरपारा, रायपुर

मिलिंद : सम्पादक : पी०आर० घनाते, मिलिंद प्रकाशन, 4-3-178/5, कंदास्वामी बाग, हनुमान व्यायामशाला लेन, हैदराबाद

भाषा-स्पंदन (राजभाषा विशेषांक) : कर्नाटक हिन्दी अकादमी, बेंगलूर

देव सायुज्यम् (संस्कृत मासिक) : एल 6, न्यू विक्रम बाग, बड़ोदरा

तनाव : मेसर्स एस०पी०बाघोलीकर, तिलकमार्ग, पुणे

भाषा भारती संवाद : अखिल भारतीय भाषा-साहित्य-सम्मेलन-बिहार, शेखपुरा, पटना

लोकशिक्षक (मासिक) : सम्पादक : डॉ० सत्येन्द्र चतुर्वेदी, 14, अशोक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर-1

हिन्दी सेवा (मासिक) : सम्पादक : डॉ० एस० सुब्रह्मण्यन 'विष्णुप्रिया', वाल्मीकि नगर, तिरुवान्मियूर, चेन्नई-41

रामायण संदर्शन (मासिक) : सम्पादक : डॉ० ऋषभदेव शर्मा, यशवंत भवन, अलवाल, सिकन्दराबाद-10 (आन्ध्र प्रदेश)

सदीनामा (मासिक) : सम्पादक : जितेन्द्र जितांशु, एच-5, गवर्नमेण्ट क्वार्टर्स, बजबज, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

युवा पथ (मासिक) : सम्पादक : सत्यदेव शास्त्री, 75/76, वीरेन्द्र मार्केट, नजफगढ़, नई दिल्ली-43

राष्ट्रभाषा (मासिक) : सम्पा०-प्रो० अनन्तराम त्रिपाठी, वर्धा-442003

लोक गंगा (मासिक) : सम्पादक : योगेशचन्द्र बहुगुणा, गुमानीवाला, देहरादून-249204 (उत्तरांचल)

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 9 **जनवरी 2008** **अंक : 1**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि० वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

☎ : Offi. : (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)